फाल्गुन माह , कृष्ण पक्ष 2 1 वर्ष, अंक 45 पृष्ठ 8 मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज बुधवार 09 मार्च 2022

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

न्यूज फ्लैश

उदयपुर को मिलेगी अगली राजस्थान सीनियर महिला क्रिकेट की मेजबानी: वैभव गहलोत

उदयपुर: राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष वैभव गहलोत ने कहा है कि राज्य सरकार की ओर से लगातार खेल सुविधाओं के विकास एवं विस्तार से उदयपुर खेल के क्षेत्र में प्रगति कर रहा है। तीन माह पहले यूआईटी द्वारा उदयपुर में अन्तरराष्ट्रीय स्तर के क्रिकेट स्टेडियम के लिए जमीन आवंटन होने के बाद कार्य जोर-शोर से चल रहा है ऐसे में स्टेडियम बनने के बाद मेवाड़ भविष्य में क्रिकेट के बड़े सेंटर के रूप में विकसित होगा। गहलोत मंगलवार को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर उदयपुर फील्ड क्लब में जिला क्रिकेट संघ, वेदांता हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड एवं क्षेत्रीय खेलकूद प्रशिक्षण केंद्र के तत्वावधान में आयोजित जिला स्तरीय महिला क्रिकेट प्रतियोगिता के शुभारंभ समारोह में बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। इस मौके पर गहलोत ने महिला खिलाड़ियों को खेल भावना से खेलते हुए आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने महिला खिलाड़ियों को कहा कि बेहतर खेल प्रदर्शन कर राज्य एवं राष्ट्रस्तर पर उदयपुर का नाम रोशन करें।

मप्र: जीडीपी, अर्थव्यवस्था में हो रहा तेजी से सुधार, प्रति व्यक्ति आय 18 फीसदी से ज्यादा बढ़ी

भोपाल: मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में कोविड-19 की चुनौतियों को परास्त करते हुए मध्यप्रदेश ने स्थिर भावों पर सकल घरेलू उत्पाद में 2021-22 में 10.12% की वृद्धि हुई है। वहीं, राज्य में प्रति व्यक्ति सालाना आय में 2020-21 की तुलना में 18 प्रतिशत से ज्यादा की वृद्धि दर्ज हुई है। यह जानकारी राज्य सरकार द्वारा विधानसभा में प्रस्तुत आर्थिक सर्वेक्षण में दी गई। मंगलवार को वित्त मंत्री जगदीश देवड़ा ने विधानसभा में आर्थिक सर्वेक्षण 2021-22 जारी किया। इस मौके पर राज्य आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग के अधिकारी उपस्थित थे।

...नहीं बिकेंगे हमारे विधायक

गोवा में कांग्रेस नेता के बर्थडे के नाम पर पार्टी ने सभी प्रत्याशियों को होटल में घेरा; चिदंबरम बोले-इस बार नहीं बिकेंगे हमारे विधायक

पणजी: दूध का जला छाछ भी फूंक फूंक कर पीता है... यह मुहावरा गोवा कांग्रेस पर एकदम फिट बैठ रहा है। पिछले चुनाव में 17 सीटें लाने के बावजूद कांग्रेस सरकार नहीं बना सकी थी, इसलिए इस बार उसने अपने सभी 37 प्रत्याशियों को नतीजे आने के पहले ही दो होटलों में शिफ्ट कर दिया है। हालांकि कांग्रेस के सीनियर लीडर पी चिदंबरम ने इस बात का खंडन किया है। उन्होंने कहा कि हमारे एक लीडर का आज बर्थडे है, जिसे वे होटल में सेलिब्रेट कर रहे हैं। वहां सभी कैंडिडेट्स को इनवाइट किया गया है। मैं भी सेलिब्रेशन में शामिल होने जा रहा हूं। विधायकों को होटल में बंद करने जैसी कोई बात नहीं है। 2017 में हुई जोड़तोड़ पर चिदंबरम बोले कि आप पिछले बार की बात अब मत कीजिए। इस बार हम सौ परसेंट कॉन्फिडेंट हैं, वो सब जीतेंगे। इस बार हमारे किसी भी विधायक को कोई छीन नहीं सकता। हमने जिन भी कैंडिडेट्स को टिकट दिए हैं, वे सभी जीतेंगे। गुरुवार को हमारे जीते हुए विधायक अपने नेता का नाम तय करेंगे। वही सीएम बनेंगे। बता दें कि सोमवार को आए एग्जिट पोल्स में गोवा में हंग असेम्बली की संभावना जताई गई है। किसी भी पार्टी को बहुमत मिलता नहीं दिख रहा। इसी के बाद गोवा में हलचल तेज हो गई। सभी पार्टियों ने अपने कैंडिडेट्स को लामबंद करना शुरू कर दिया है। कांग्रेस के सूत्रों के मुताबिक नॉर्थ गोवा के प्रत्याशियों को वहीं एक होटल में ले जाया गया है।

उत्तराखंड-पंजाब में वरिष्ठ नेताओं की नियुक्ति

नई दिल्ली: चुनाव परिणामों को लेकर राजनीतिक दल काफी सतर्क और गंभीर हैं। मंगलवार को उत्तराखंड और पंजाब समेत उन राज्यों में चुनाव प्रबंधन के लिए वरिष्ठ नेताओं की नियुक्ति की है, जहां दस मार्च को परिणाम आने हैं। कर्नाटक कांग्रेस के प्रमुख डी के शिवकुमार गोवा में विशेष पर्यवेक्षक होंगे।

अजय माकन और पवन खेड़ा को पंजाब की जिम्मेदारी: पार्टी महासचिव मुकुल वासनिक और छत्तीसगढ़ के स्वास्थ्य मंत्री टीएस सिंह देव के अलावा विन्सेंट पाला को मणिपुर में नियुक्त किया गया है। महासचिव माकन और पार्टी प्रवक्ता पवन खेड़ा को पंजाब के लिए विशेष पर्यवेक्षक के तौर पर तैनात किया गया है।

पणजी में विधायकों के साथ डटे हुए पी. चिदंबरम

पी. चिदंबरम, गोवा प्रभारी दिनेश गुंडु राव, विपक्ष के नेता दिगंबर कामत और राज्य कांग्रेस अध्यक्ष गिरीश चोडनकर पणजी में विधायकों के साथ डटे हुए हैं। इस बार कांग्रेस किसी भी लेवल पर कोताही नहीं बरतना चाहती। 5 मार्च को इन नेताओं ने राहुल गांधी से भी मुलाकात की थी और उन्हें आगे की रणनीति बताई थी। वहीं, सीएम प्रमोद सावंत को सोमवार शाम को अचानक बीजेपी के आलाकमान ने दिल्ली तलब किया। उन्होंने पीएम नरेंद्र मोदी से भी मुलाकात की।

आप ने कहा- भाजपा ने जोड़तोड़ शुरू की: आम आदमी पार्टी के सीएम पद के उम्मीदवार अमित पालेकर ने कहा, 'दो-तीन दिन से जोड़-तोड़ की बातें बीजेपी की तरफ से हो रही हैं। ऐसा भी कहा जा रहा है कि एमजीपी से गठबंधन करेंगे।

यूपी: राजनीति में किसी की गुझिया होगी मीठी और कुछ की फीकी

सत्तापक्ष हो चाहे विपक्ष, दावे तो जरूर सब अपनी जीत का ही कर रहे हैं

लखनऊ: उत्तर प्रदेश के राजनीतिक गलियारें में इस बार की होली में कहीं गुझियों में मिठास होगी तो कहीं फीकी होंगी गुझिया । होली तो वैसे रंगीन ही होती है लेकिन इस बार राजनीतिज्ञों का रंग उड़ा भी हो सकता है। वजह है 10 मार्च को आने वाले चुनाव परिणाम और वहीं होली भी एक सप्ताह बाद 17 मार्च को है।

प्रदेश में हो रहे चुनाव समाप्त हो गए हैं। सोमवार को चुनाव का अंतिम चरण भी पूरा हो गया। अब तो चुनाव परिणाम ही बचता है। ऐसे में सबकी निगाहें 10 मार्च को आने चुनाव परिणामों पर होगी। सत्तापक्ष हो चाहे विपक्ष, दावे तो जरूर सब अपनी जीत का ही कर रहे हैं लेकिन यह भी हकीकत है कि सिकंदर तो कोई एक ही बनेगा। क्या कमल का फूल एक बार फिर यूपी में खिलेगा या साइकिल में ग्रीस लग जाएगी या फिर हाथी खड़ा जाएगा सबके दावे 10 मार्च को सामने आ जाएंगे।

यूपी के चुनावी अखाड़े में भारतीय जनता पार्टी, समाजवादी पार्टी, बहुजन समाजवादी पार्टी और कांग्रेस सभी ताल ठोकी, सभी ने खूब जोर- अजमाइश की , लेकिन अब तय तो जनता करेगी कि कौन सर्वश्रेष्ठ हैं। इन सबका असर इस बार की होली पर जरूर पड़ेगा । अभी तक होली का वास्ता हाई स्कूल और इंटर बोर्ड परिक्षाओं के साथ ही पड़ता था, , जिसकी परीक्षा अच्छी हो गई, वे विद्यार्थी तो खूब होली खेलते थे और जिसका पेपर खराब हो गया, उसकी होली का तो रंग ही उड़ा होता था, लेकिन इस बार यूपी चुनाव और होली का भी वास्ता पड़ गया और परीक्षार्थी बने राजनेता। जिसका परिणाम अच्छा, उसकी तो बल्ले-बल्ले और जिसका परिणाम खराब , उसकी तो गुझिया बेस्वाद ही होगी

हरियाणा में महिलाओं को मिलेगा सुषमा स्वराज राज्य पुरस्कार

चंडीगढ़: हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने पहली बार महिला दिवस पर बजट पेश करते हुए स्वर्गीय सुषमा स्वराज के नाम से पांच लाख रुपये का पुरस्कार शुरू करने का ऐलान किया है। मंगलवार को पेश किए गए बजट में महिला सशक्तिकरण को सबसे अहम स्थान दिया गया है। मुख्यमंत्री ने पांच लाख रुपये का सुषमा स्वराज पुरस्कार का ऐलान करते हुए कहा है कि यह पुरस्कार उन महिलाओं को दिया जाएगा जिन्होंने राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उपलब्धी हासिल की है।

हरियाणा बजट: गांवों व शहरों के विकास पर फोकस

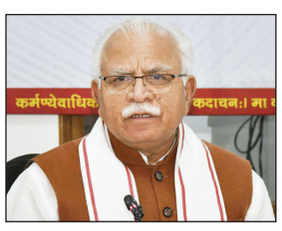

चंडीगढ़: हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने मंगलवार को पेश किए आम बजट में प्रदेश के सभी वर्गों का विश्वास जीतने का प्रयास किया है। पिछले दो बजट के मुकाबले आज पेश किए गए बजट के माध्यम से मुख्यमंत्री ने हरियाणा में सभी वर्गों को थोड़ी-थोड़ी राहत के साथ कई बड़ी घोषणाएं की हैं। प्रदेश में अगले महीने स्थानीय निकाय चुनाव तथा पंचायत चुनाव प्रस्तावित हैं। जिसके चलते किसी तरह का नया कर नहीं लगाया गया है। बजट में भी चुनावी झलक देखने को मिली है। बजट में निकायों व पंचायती राज संस्थाओं के जनप्रतिनिधियों के अधिकार और बजट में बढ़ोतरी की गई है। गांवों के स्कूल और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र जिला परिषद और शहरों के स्कूल व स्वास्थ्य केंद्रों की देखरेख का जिम्मा नगर पालिकाओं को सौंपा जाएगा।

410 भारतीयों को यूक्रेन से एयरलिफ्ट किया गया

नई दिल्ली: यूक्रेन के पड़ोसी देशों से भारतीय नागरिकों को बचाने के लिए चलाए जा रहे ऑपरेशन गंगा के तहत मंगलवार को सुसेवा से 2 विशेष नागरिक उड़ानों के जरिए 410 भारतीयों को एयरलिफ्ट किया गया। नागरिक उड्डयन मंत्रालय को अनुसार, 22 फरवरी को शुरू हुए ऑपरेशन से अबतक विशेष उड़ानों के माध्यम से लगभग 18 हजार भारतीयों को वापस लाया गया है। 75 विशेष नागरिक उड़ानों द्वारा एयरलिफ्ट किए गए भारतीयों की संख्या 15,521 है। वायुसेना 12 मिशन उड़ानों के माध्यम से 2,467 यात्रियों को वापस लाई है और 32 टन से अधिक राहत सामग्री वहां पहुंचाई है। नागरिक उड़ानों में बुखारेस्ट से 21 उड़ानों द्वारा 4,575 यात्रियों को, सुसेव से 9 उड़ानों द्वारा 1820 को, बुडापेस्ट से 28 उड़ानों द्वारा 5571 को, कोसिसे से 5 उड़ानों द्वारा 909 यात्रियों को, रेजजो से 11 उड़ानों द्वारा 2404 भारतीयों को और कीव से एक उड़ान से 242 व्यक्तियों द्वारा लाया गया है। इसी बीच केन्द्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने बताया है कि सूमी शहर में भारतीय छात्रों के लिए निकासी प्रक्रिया शुरू हो गई है और उन्हें बसों में पोल्टावा ले जाया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि कल रात उन्होंने नियंत्रण कक्ष से जाँच की और उन्हें पता चला की सूमी में 694 भारतीय छात्र शेष थे। आज वे सभी पोल्टावा के लिए बसों में रवाना हुए हैं।

अब तक 20 लाख लोगों ने यूक्रेन छोड़ा

जिनेवा: संयुक्त राष्ट्र ने दावा किया है कि यूक्रेन छोड़कर जाने वाले शरणार्थियों की संख्या मंगलवार को 20 लाख पहुंच गई। संयुक्त राष्ट्र का कहना है कि यह द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूरोप में सबसे बड़ा पलायन है। संयुक्त राष्ट्र के उच्चायुक्त फिलिपो ग्रांडी ने ट्वीट किया है- आज यूक्रेन छोड़कर जाने वाले शरणार्थियों की संख्या 20 लाख हो गई है। रूस के आक्रमण से दहल रहे यूक्रेन से लोग जान बचाकर पलायन करने को मजबूर हैं। इसके लिए मानवीय गलियारा बनाए गए हैं। भारत के दबाव के बाद ऐसा ही एक गलियारा मंगलवार को सूमी में बनाया गया है। इस गलियारे के माध्यम से 700 भारतीय नागरिकों और विद्यार्थियों को सुरक्षित निकाला गया है। सूमी रूस से 60 किलोमीटर दूर है। यहां दोनों देशों की सेनाओं में जबरदस्त लड़ाई जारी है।

समझौते की राह पर रूस

मॉस्को: रूस के विदेश मंत्रालय ने कहा है कि मॉस्को और अमेरिका को शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धांतों पर लौट आना चाहिए, जिस तरह उन्होंने शीत युद्ध के दौरान किया था। समाचार एजेंसी इंटरफैक्स ने एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी है। अमेरिका के साथ ईमानदार और पारस्परिक रूप से सम्मानजनक संवाद के लिए तैयार हैं। मंत्रालय ने उम्मीद जताई कि दोनों देशों के बीच संबंधों को फिर से सामान्य किया जा सकता है। शायद उस सिद्धांत को याद रखना बेहतर होगा जिसने शीत युद्ध के दौरान काम किया था।

नीति, निष्ठा, निर्णय शक्ति और नेतृत्व की प्रतिबिंब है नारी: प्रधानमंत्री मोदी

नई दिल्ली: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर मंगलवार को कहा कि नारी नीति, निष्ठा, निर्णय शक्ति और नेतृत्व की प्रतिबिंब होती है। वेदों ने आवाहन किया है कि नारियां सक्षम हों, समर्थ हों, और राष्ट्र को दिशा दें। उन्होंने कहा कि उत्तर में मीराबाई से लेकर दक्षिण में संत अक्का महादेवी तक भारत की देवियों ने भक्ति आंदोलन से लेकर ज्ञान दर्शन तक समाज में सुधार और परिवर्तन को स्वर दिया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कच्छ के धोरडो स्थित महिला संत शिविर में आयोजित अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर एक संगोष्ठी को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से संबोधित किया।

इस संगोष्ठी का आयोजन समाज में महिला संतों की भूमिका और महिला सशक्तिकरण में उनके योगदान को मान्यता देने के लिए किया जा रहा है। धोरडो में आयोजित इस संगोष्ठी में 500 से अधिक महिला संत शामिल हुई हैं।

बड़ा फैसला: दो साल बाद अंतरराष्ट्रीय उड़ानों से हटा प्रतिबंध, 27 मार्च से दोबारा शुरू होंगी सेवाएं

नई दिल्ली: केंद्र सरकार ने मंगलवार को एक बड़ा फैसला किया। नागरिक उड्डयन मंत्रालय की ओर से मुहैया कराई गई जानकारी के अनुसार, तकरीबन दो साल बाद आगामी 27 मार्च 2022 से भारत के लिए और भारत से वाणिज्यिक अंतरराष्ट्रीय सेवाएं फिर से शुरू कर दी जाएंगी। मंत्रालय की ओर से कहा गया है कि अंतरराष्ट्रीय यात्रा के लिए स्वास्थ्य मंत्रालय के दिशा-निर्देशों का कड़ाई से पालन करना अनिवार्य होगा।

परामर्श के बाद किया निर्णय: केंद्र सरकार की ओर से साझा की गई जानकारी के अनुसार, दुनिया भर में कोरोना महामारी का असर कम होने और टीकाकरण कवरेज की रफ्तार तेज होने के बाद हितधारकों के परामर्श से सरकार ने 27 मार्च से अंतरराष्ट्रीय यात्री सेवाओं को फिर शुरू करने का निर्णय किया है।

बता दें कि भारत में निर्धारित अंतरराष्ट्रीय यात्री उड़ानों पर प्रतिबंध 28 फरवरी तक लागू है।

23 मार्च 2020 से लगा था बैन: गौरतलब है कि भारत ने नियमित अंतरराष्ट्रीय उड़ानों पर कोरोना संकट की वजह से 23 मार्च 2020 से बैन लगाया था। हालांकि इस बीच कुछ देशों के साथ एयर बबल जैसी विशेष व्यवस्था के तहत उड़ानों का संचालन हो रहा था।

जुलाई 2020 से एयर बबल व्यवस्था के तहत भारत और लगभग 40 देशों के बीच विशेष यात्री उड़ानें संचालित हो रही हैं।

आपराधिक केस दर्ज करने का आदेश देने के बाद मजिस्ट्रेट करेगा निष्पक्ष जांच: हाईकोर्ट

प्रयागराज: इलाहाबाद हाईकोर्ट ने मंगलवार को निर्णय दिया है कि सीआरपीसी की धारा 156(3) में आपराधिक केस दर्ज करने का आदेश पारित करने के बाद मजिस्ट्रेट किसी मामले से हाथ नहीं धो सकता है। यह सुनिश्चित करना मजिस्ट्रेट का कर्तव्य है कि जांच निष्पक्ष रूप से की जाए। मजिस्ट्रेट को 156(3) दंप्रसं में आदेश पारित करने के बाद निष्पक्ष जांच सुनिश्चित करनी होगी। जस्टिस उमेश कुमार ने यह आदेश माधव सिंह की केस में पारित करते हुए साकिरी वासु बनाम यूपी सरकार व अन्य के केस में सर्वोच्च न्यायालय के फैसले का जिक्र करते हुए यह टिप्पणी की। धारा 156 (3) में आपराधिक मुकदमा पंजीकरण का आदेश देने के बाद निस्पक्ष जांच सुनिश्चित करना भी मजिस्ट्रेट की जिम्मेदारी है। कोर्ट ने माधव सिंह नाम के व्यक्ति द्वारा दायर 482 सीआरपीसी के एक आवेदन पर विचार करते हुए यह टिप्पणी की। याची का अनुरोध था कि उसके आईपीसी के तहत दर्ज मामले की ठीक से जांच नहीं की जा रही है।

अर्धसैनिक बलों में क्यों बहाया जा रहा अपने ही साथियों का खून?

बीएसएफ में 48 घंटे के दौरान अलग-अलग स्थानों पर सात जवानों की मौत हो गई

नई दिल्ली: केंद्रीय अर्धसैनिक बलों 'सीएपीएफ' में जवान आपा खो रहे हैं। उन्हें गुस्सा इतना ज्यादा आता है कि वे अपने ही साथियों को मौत के घाट उतार देते हैं। बीएसएफ में 6-7 मार्च को 48 घंटे के दौरान अलग-अलग स्थानों पर सात जवानों की मौत हो गई। इन दोनों ही घटनाओं में अपने ही जवानों ने अपनों का खून कर दिया। दूसरे बलों में भी ऐसी घटनाएं होती रही हैं। सीएपीएफ के तहत आने वाले विभिन्न केंद्रीय सुरक्षा बलों में 2019 के दौरान इस तरह की घटनाओं में नौ जवान या अधिकारी मारे गए थे। 2020 में आठ जवानों का खून बहा दिया गया। पिछले साल यानी 2021 में भी आपसी कहासुनी में आठ जवानों की मौत हो गई थी। बीएसएफ के पूर्व एडीजी संजीव कृष्ण सूद कहते हैं, इसके पीछे पांच कारण हैं, जो सीएपीएफ जवानों को अपने ही साथियों या अधिकारियों का खून बहाने जैसी दर्दनाक परिस्थिति की तरफ ले जाते हैं। जवानों को समय पर छुट्टी न मिलना और उनकी सुनवाई ठीक तरह से न हो पाना, उक्त घटनाओं के लिए जिम्मेदार कारणों में से एक है। पूर्व एडीजी संजीव कृष्ण सूद के मुताबिक, सीएपीएफ में ऐसी घटनाओं के लिए कई बातें जिम्मेदार हैं। जवानों पर वर्कलोड ज्यादा है। कई स्थानों पर जवानों को 15 घंटे तक ड्यूटी देनी पड़ती है।

रात को तीन घंटे बाद ड्यूटी आती है तो जवान ठीक से नींद नहीं ले पाते। अगर वे अपनी समस्या किसी के सामने रखते हैं तो वहां ठीक तरह से सुनवाई नहीं हो पाती। यह सब बातें जवानों को तनाव की ओर ले जाती हैं। कुछ स्थानों पर बैरक एवं दूसरी सुविधाओं की कमी नजर आती है।

अब 2023 में 'तीन और 13' से भी ज्यादा वोट लेकर हम सरकार बनाएंगे: वसुंधरा

कोटा: पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने कहा कि 2003 में रिकॉर्ड मत और 120 सीटें भाजपा को पहली बार प्रदेश में मिली थी। इससे ज्यादा प्रेम 2013 में मिला और रिकॉर्ड 163 सीटें हमें मिली थी। तीन का आंकड़ा भाजपा के लिए शुभ है। हमें 2023 में 'तीन और 13' से भी ज्यादा वोट मिलेंगे। उन्होंने कहा कि मैं 36 कौम को साथ लेकर चलने में विश्वास करती हूं। पीएम मोदी सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास की बात करते हैं। अगर आप लड़ोगे तो आपस में दीवार खड़ी हो जाएगी। प्रदेश की तरक्की नहीं हो सकती है। राजनीतिक जीवन में मुझे काफी संघर्ष देखने को मिला है। विकट समय में राजस्थान की जनता मेरे साथ खड़ी रही है। पूर्व मुख्यमंत्री राजे मंगलवार को बूंदी के केशवरायपाटन में अपने जन्मदिन के मौके पर आयोजित जनसभा को संबोधित कर रही थी। वसुंधरा जयपुर हवाई मार्ग से केशोरायपाटन पहुंचीं। उन्होंने केशव राय भगवान मंदिर में दर्शन कर पूजा-अर्चना की। पूर्व सीएम राजे ने शुभ मुहुर्त में यहां भगवान के दर्शन किए और पूजा-अर्चना की। वसुंधरा राजे ने मंदिर में हवन-यज्ञ किया। एक सौ एक पंडितों ने मंदिरों में महाजप किया। राजे ने पूजा-पाठ करते हुए प्रदेश में अमन-चैन और खुशहाली की कामना की।

महिलाओं का उत्पीड़न किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं : कृष्णाकांत

महिला दिवस पर अ.मा.ए. ईकाई मेजा ने भरी हुंकार

महिला दिवस के अवसर पर लोगों को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि के.के त्रिपाठी

अखंड भारत संदेश

मेजा। आज हमारे समाज में मानवाधिकार आयोग के अलावा तमाम ऐसे संगठन संचालित है जो महिलाओं के उत्पीड़न पर पूरी तरह सक्रिय है फिर हमारी महिलाओं का घोर शोषण-उत्पीड़न किया जा रहा है। ऐसे में अंतराष्ट्रीय मानवाधिकार एसोसिएशन किसी भी कीमत पर महिलाओं का उत्पीड़न बर्दाश्त नहीं करेगा। उक्त उद्गार संगठन के तहसील इकाई मेजा के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ अधिवक्ता कृष्णाकान्त त्रिपाठी ने महिला दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किया।

उल्लेखनीय है कि मंगलवार को अधिवक्ता एवं संघ के पदाधिकारी आशुतोष पाण्डेय उर्फ राजू पाण्डेय के आवास पर आयोजित महिला दिवस कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए श्री त्रिपाठी ने कहा है कि आज हमारी महिलायें हर क्षेत्र में अग्रणी होते हुए भी उत्पीड़न का शिकार हो रही है जो कत्तई बर्दाश्त के योग्य नहीं है। उन्होने कहा कि अंतराष्ट्रीय मानवाधिकार एसोसिएशन किसी भी कीमत पर महिलाओं का उत्पीड़न बर्दाश्त नहीं करेगा। इस लड़ाई के लिए संगठन पूरी निष्ठा के साथ महिलाओं के साथ खड़ा है। इतना ही नहीं श्री त्रिपाठी ने मानवाधिकारों पर विस्तार से टिप्पणी करते हुए कार्यक्रम भारी संख्या में उपस्थित महिलाओं को जागरूक किया और उनके उत्पीड़न की लड़ाई में रह संम्भव मदद का भरोसा दिया। इसी क्रम कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे मेजा बार के पूर्व अध्यक्ष एवं अधिवक्ता जटाशंकर शुक्ला ने भी महिला उत्पीड़न पर विस्तार से चर्चा करते हुए उपस्थित जन समुदाय को जागरूक किया। कार्यक्रम में मेजा थाने से गयी महिला पुलिस कर्मियाओं को संगठन की ओर से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन संघ के यमुनापार संगठन सचिव कन्हैया लालव अध्यक्षता मेजा बार के पूर्व अध्यक्ष जटाशंकर शुक्ला ने किया। इस मौके पर संगठन के वरिष्ठ पदाधिकारी एवं अधिवक्ता राजू पाण्डेय, शेषमणि शुक्ला, राज बहादुर श्रीवास्तव, कमलाकर सिंह, ए के सिंह, नन्हे सिंह, पारसनाथ तिवारी, मेघनाथ मौर्या के अलावा कई अन्य पदाधिकारियों ने अपने-अपने विचार रखा।

शिक्षा, संस्कार और सेहत से समझौता नहीः डॉ.रंजना पाण्डेय

जनहित अस्पताल के सभागार मे विश्व महिला दिवस पर सगोष्ठी का आयोजन

महिला दिवस पर महिलाओं को सम्बोधित करतीं डॉ रंजना पाण्डेय

करछना। घर-घर की उजियारी नारी सदैव से ही समाज में पूजित रही है।किन्तु देवी,लक्ष्मी जैसी मान्यताओं के अलावा नारी भी एक इंसान हैं और उसकी अपनी समस्याओ और जरूरते हैं।इसे लेकर स्वयं शिक्षा,संस्कार और सेहत के प्रति सचेत रहे और कोई समझौता न करें।जिसके चलते स्वयं,घर,समाज और देश के निर्माण में ही नारियां अपना बेहतर सहयोग दे सकती हैं।यह बातें रामपुर स्थित लोक मंगल संस्थान के सभागार में विश्व महिला दिवस पर आयोजित संगोष्ठी,नारी घर-घर की उजियारी विषय पर बोलती संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रही स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ.व्यंजना पाण्डेय ने कही। उन्होने कहा आज की बालिका भी कल की नारी है और दो-दो घर परिवारों की आंकाक्षाओं को संजोकर परिवार को आगे बढ़ाती हैं।इसके लिए खुद उसके अच्छे सेहत के अलावा उसे शिक्षित होकर संस्कार को संजोने की जरूरत है। जिससे आगे चलकर वह अपने अधिकार और कर्तव्यों के प्रति समर्पित होकर एक अच्छी इंसान बन सके।संगोष्ठी के दौरान कवि राम लोचन सांवरियां,बीरेन्द्र कुसुमाकर,सबरेज इलाहाबादी,और जितेन्द्र जलज ने भी अपनी पंक्तियों में नारी का गुणगान करते समाज में नारी की भूमिका को अहम बताया।लोक गायिका मोहिनी श्रीवास्तव ने फाग और चैता गीतों के माध्यम से महिलाओं को अपनी परंपरा के प्रति सजग किया तो वही हास्य कवि अशोक बेशरम ने अपने खेतो सिवानो और घर आंगन मे अम्मा,दादी,नानी द्वारा गाये जाने वाले जंतसार,परभाती,निरवही,लगवही,सोहर जैसे संस्कार और पारंपरिक गीतों की बानगी देते हुए सहेजने पर जोर दिया।डॉ.भगवत पाण्डेय ने संगोष्ठी में मौजूद महिलाओं के प्रति स्वागत आभार प्रकट करते हुए नये संकल्प के साथ समाज में आगे बढ़ने की बात कही। संचालन कवि राजेन्द्र शुक्ल ने किया। इस मौके पर बड़ी संख्या में महिलाएं मौजूद रही।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

महिलाओं से पूंछी समस्या समझाया अधिकार

विकास खंड शंकरगढ़ के रानीगंज डफाई में पहुंची स्वास्थ्य विभाग की टीम

शंकरगढ़। महिलाओं की समस्याओं को जानने और उन्हे जागरुक करने के उद्देश्य से स्वास्थ्य विभाग की तरफ से रानीगंज डफाई गांव में जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विकास खंड शंकरगढ़ के रानीगंज डफाई गांव पहुंची टीम ने महिलाओं से संवाद किया। आरोग्य केंद्र के सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी अभिषेक जायसवाल ने महिलाओं के साथ संवाद करते हुए महिलाओं को मिले अधिकारों की विस्तार से जानकारी दी। समझाया कि वह बालक-बालिका में कोई भी अंतर न करें। बेटा-बेटी एक समान होते हैं। अभिषेक जायसवाल ने बताया कि आज बेटियां हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं। बेटियों का समानता का अधिकार देने के लिए सरकारें हर स्तर पर कार्य कर रही हैं। बेटियों के जन्म से लेकर उनके स्वास्थ्य, पढ़ाई और विवाह तक के लिए अलग-अलग योजनाएं चलाई जा रही हैं। स्वास्थ्य विभाग की एएनएम और आशा ने महिलाओं से उनकी बीमारियों व अन्य समस्याओं केबारे में जानकारी ली और उनका निदान किया। इस दौरान महिलाओं के मन में पनपने वाली भ्रांतियों पर से पर्दा हटाया गया। इस मौके पर कल्याणपुर की एएनएम बहन सिंधु सिंह, राखी सिंह, आशा सुभद्रा सिंह के अलावा उर्मिला, ऊषा, शीलू, संगीता, अनीता, सरोज, काजल, रानी, राधा, रूपा, रचना, सेमिया, मुन्नी, शीला, गुड्डी, बिटोल आदि महिलाएं एवं बालिकाएं उपस्थित रहीं।

महिला दिवस पर बेटियों का मान बढ़ाने का संकल्प

फूलपुर। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर मंगलवार को रूदापुर स्थिति भारद्वाज गुरुकुलम संस्थान में महिलाओं के सशक्तिकरण व उनके उन्नयन तथा विकास पर विस्तृत चर्चा करने के लिए एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए विद्यालय की प्राध्यापिका रूबी दुबे ने कहा कि आज के दिन दुनिया भर में महिलाओं को उनकी खास उपलब्धियों के लिए याद किया जाता है। आज उन्हीं की प्रेरणा से बच्चे प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं। इसके लिए नारी शक्ति से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। देश हित में बच्चियों को उच्च शिक्षा देकर उनका मान बढ़ाने का संकल्प लेते हुए उन्होंने कहा कि आज दुनिया भर में हमारी बच्चियां प्रत्येक क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं जिससे देश अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रहा है। इस दौरान उपस्थित छात्राओं को देश की विभिन्न नारी शक्तियों के बिषय में बताया गया। साथ ही देश व समाज के लिए अच्छा करने के लिए उन्हें प्रेरित भी किया गया। गोष्ठी में सुश्री संयोगिता सिंह ज्योति सोनकर,प्रिया त्रिपाठी, अंजलि यादव,प्राची श्रीवास्तव, शिल्पी गौर, नीलम सोनकर सहित अन्य शिक्षिका एवं छात्राएं उपस्थित रहीं।

विश्व महिला दिवस पर हुए विविध कार्यक्रम

सोरांव। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर महिला बालविकास व पुष्टाहार विभाग के कार्यक्रम के तहत आंगनवाड़ी केंद्र तथा पंचायत भवन बाहर सराय, सरसा,हाजीगंज, उसरही,शिवगढ़, यूसुफपुर में महिला सशक्तिकरण, नारी सुरक्षा,नारी सम्मान ,नारी स्वावलंबन पर महिलाओं को सशक्त बनाने पर जोर दिया गया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए ग्राम विकास अधिकारी मिथलेश मिश्रा, ग्राम पंचायत अधिकारी अखिलेश कुमार, ग्राम पंचायत अधिकारी अन्न पूर्णा शुक्ला ने महिलाओं के लिए सरकार द्वारा चलाए गए विभिन्न योजनाओं पर प्रकाश डाले। तथा महिलाओं के शिक्षा,सम्मान,और अधिकार के प्रति सभी को अवगत कराए। इस मौके पर माधुरी सिंह मुख्यसेविका बालविकास, अलताफ अहमद प्रेसिडेंट हेल्थ एंड वेलफेयर कमेटी,राम शिरोमणि तिवारी ग्राम पंचायत अधिकारी ग्राम प्रधान मनोरमा देवी, सीता देवी कुशवाहा, प्रेम सत्यार्थी, संजय यादव, अवधेश कुमार कुशवाहा,राम गणेश मौर्य,शमशेर पटेल, जिला उपाध्यक्ष शिक्षक सभा ज्वाला सिंह यादव,कंप्यूटर ऑपरेटर आनंद यादव, शिव बहादुर सिंह, बनवारी लाल,सुनील कुमार यादव, धर्मेंद्र कुमार ने अपने- अपने विचार प्रकट किया। इस कार्यक्रम में संग्राम सिंह, सरिता देवी, विमला देवी, प्रतिभा पटेल समूहसखी, उषा श्रीवास्तव कुसुम तिवारी, सुनैना सहित भारी संख्या में महिलायें उपस्थित रहीं।

आधारशिला वृद्ध आश्रम नैनी में वरिष्ठ माताओं को माला पहनाकर स्वागत करते तथा नैनी आईटीआई में दीप प्रज्वलित करते इकाई प्रमुख एनके बोका

महिला दिवस पर आयोजित हुए विभिन्न कार्यक्रम

अखंड भारत संदेश

नैनी। औद्योगिक क्षेत्र स्थित इंडियन टेलीफोन इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आईटीआई) में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। उक्त कंपनी के इकाई प्रमुख एनके बोका ने दीप प्रज्वलित करते हुए कहां की नारी शक्ति सर्वप्रथम है। आज की नारी किसी से कम नहीं है। वह विश्व भर में सामाजिक व देश हित सहित अपने अपने प्रत्येक कार्यों को करने में जुटी हुई हैं। ऐसे नारियों किस सम्मान पर बल दिया। इस दौरान जेएस हिगिंस उप महाप्रबंधक वर्क्स, अतुल कुमार मुख्य प्रबंधक टीएस, ए के सिंह प्रबंधक मानव संसाधन, अमिता श्रीवास्तव सहायक प्रबंधक, मानव संसाधन, मंदीप सिंह आदि मौजूद रहे। इसी प्रकार आधारशिला वृद्ध आश्रम नैनी में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर निवासरत सभी वरिष्ठ माताओं को माला पहनाकर स्वागत किया गया और माताएं आपस मे केक काटकर एक दूसरे को खिलाते हुए प्रसन्नता जाहिर की। प्रबंधक सुशील श्रीवास्तव ने कहा कि महिलाएं आज समाज के हर क्षेत्र में अपनी काबिलियत के द्वारा पहचान बना चुकी हैं। आने वाला कल भी समान भागीदारी का होगा। प्रबंध निदेशक शशांक भारती ने सभी बुजुर्ग माताओं को आश्वस्त करते हुए कहा कि आश्रम द्वारा सदैव आपकी बेहतर सेवाएं संचालित रहेगी। कार्यक्रम में मीनू जायसवाल एवं अनुकृति श्रीवास्तव ने गीत एवं भजन की प्रस्तुति दी। इस मौके पर विमल गिरि, राहुल मिश्रा, अभिषेक सुधीर, आभा, सबीना, कविता रितु आदि मौजूद रही।

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में महिला दिवस पर हुआ आयोजन

मिस्कीन सेवा संस्थान ट्रस्ट एवम ग्राम अल्हवा में कार्यक्रम

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में प्रतियोगिता में हिस्सा लेती छात्राएं

कोरांव। आठ मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर मिस्किन सेवा संस्थान ट्रस्ट कोराव एवम कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय खजुरी कोरांव प्रयागराज में नारी सशक्ति करण के तहत छात्राओं ने महिला अध्यापिकाओं के संग कार्यक्रम को अंजाम दिया। मिस्किन सेवा संस्थान ट्रस्ट कार्यालय कोराव तथा ग्राम पंचायत अल्हवा सचिवालय भवन पर ग्राम प्रधान अल्हवा एवं अखिल भारतीय प्रधान संगठन उत्तर प्रदेश प्रयागराज मंडल के मंत्री अहद अहमद सिद्दीकी उर्फ शहजादे फाउंडर मिस्कीन सेवा संस्थान ट्रस्ट ने महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम को अंजाम दिया। और महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए यथा संभव सहयोग देने की बात कही। आशा बहू अल्हवा श्रीमती बिट्टू बेबी उर्फ साजिदा बेगम ने महिलाओं की हौंसला अफजाई की। साथ ही स्वास्थ्य सबंधित जानकारियां भी दी। साथ ही माताओं बहनों से नारी सम्मान के लिए सदैव तत्पर रहने समाज परिवार क्षेत्र में अपने आचरण को बुजुर्गों के सम्मान हितार्थ सास बहुओं बहनों पतियों माता पिता आदि के प्रति अपने बेहतर व्यवहार से अपनी पहचान अपना अस्तित्व कायम रखने का आह्वान किया। और गांव के परेशान हाल लोगों माताओं बहनों बच्चियों के सहयोग प्रदान करते रहने विधवा मां बहनों के समुचित मदद किए जाने की बात कही। इसी प्रकार कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय खजुरी में वार्डेन श्रीमती रजनी मिश्रा के नेतृत्व में बालिकाओं अध्यापिकाओं ने महिला दिवस पर विभिन्न कार्यक्रम के आयोजन आयोजित किए। छात्राओं ने पोस्टर प्रतियोगिता,निबंध लेखन आदि प्रतियोगिताएं कराई। उक्त आयोजन में समस्त विद्यालय परिवार अभिभावक गण आदि लोग भाग लिए।

प्रगतिशील महिला संगठन ने रैली निकाल मांगे की बुलंद

प्रगतिशील संगठन की महिलाएं रैली के दौरान नारेबाजी करते हुए

अखंड भारत संदेश

घूरपुर। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के मौके पर मंगलवार के दिन प्रगतिशील महिला संगठन की दर्जनो महिलाओं ने हाथ मे नारे लिखी तख्तियां लेकर रैली निकालते हुए नारे बाजी की । इसके पूर्व महिलाओं ने दलवाबारी गांव में बैठक की। महिला दिवस के मौके पर मंगलवार के दिन प्रगतिशील महिला संगठन के बैनर तले सरकार विरोधी नारे लिखे तख्तियां लेकर दलवाबारी गांव से होते हुए घूरपुर बाजार से थाने के सामने से रैली निकाली । महिलाओं के हाथों में यूक्रेन पर रूसी हमला बंद करो ,मौन हिंसा मुदार्बाद ,लेबर कोड वापस लो , गांव सभा की जमीन पर गरीबों को पट्टा दो ,मजदूरों पर दर्ज कैस वापस लो ।सभा को शबनम, सरजो देवी,देवकली,मंजू देवी,श्यामकली,पार्वती,शीला निषाद,छवि आदि ने संबोधित किया। संचालन आकृति सागर ने किया। अध्यक्षता सुषमा कुशवाहा ने किया।इस मौके परसूरसती, प्रतिभा, उर्मिला, विमला,सोनम, इंद्रकली,सावित्री देवी, महादेवी आदि उपस्थित रही।

बेटियां किसी बेटे से कम नहीं : अभिषेक सिंह पटेल

जसरा। बेटियों को समान शिक्षा एवम अवसर प्रदान किया जायें तो वह बेटों से अधिक नाम रौशन करती हैं। प्राचीन से लेकर अद्यतन क्षेत्र कोई भी रहा हों बेटियों ने हर क्षेत्र मे सफलता प्राप्त की हैं। प्रशासन, चिकित्सा, राजनीति सहित अन्य प्रमुख क्षेत्रों में बेटियां बेटों से दो कदम आगे हैं उक्त बातें इलाहाबाद विश्वविद्यालय के शोध छात्र अभिषेक सिंह पटेल नें विश्व महिला दिवस के अवसर पर मेधावी छात्राओं को पेन, डायरी एवम पोस्टर भेंट करके सम्मानित करने के दौरान व्यक्त किये।इस अवसर चौधरी महादेव महादेव महाविद्यालय में अंग्रेजी साहित्य की शोधछात्रा रिति घोष नें बेटियों को समान शिक्षा, अवसर प्रदान करने की अपील किया आगे उन्होंने यह भी कहा कि स्त्री ही राष्ट्र की असली खेवनहार हैं महिलाओं को सशक्त किये बिना राष्ट्र का सम्पूर्ण विकास संभव नहीं हैं। अंकिता सिंह, दीपिका सिंह, वर्षा शर्मा, सान्या पटेल, रेनू पटेल आदि छात्राओं नें भी सभा को सम्बोधित किया। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक पटेल एवम अध्यक्षता विजय शंकर सिंह नें किया। अनिल कुमार पटेल , अमन, नितिन सिंह आदि लोग मौजूद रहें।

20 मिनट तक तोड़ा जाता रहा एसबीआई का एटीएम सोती रही पुलिस...

प्रयागराज। कालिंदीपुरम में एसबीआई का एटीएम लूट की कोशिश के मामले में पुलिस की बड़ी लापरवाही सामने आई है। एटीएम केबिन में लगे सीसीटीवी कैमरे की फुटेज से पता चला है कि बदमाश करीब 20 मिनट तक एटीएम तोड़ने की कोशिश करते रहे। यही नहीं उन्होंने दोबारा आकर एटीएम तोड़ने की कोशिश की थी। फिलहाल पांचवें दिन भी बदमाश पुलिस की पकड़ से दूर ही रहे।मैनेजर सौरभ सिन्हा की ओर से पुलिस को बताया गया कि घटना 28 मार्च की भोर में हुई। सीसीटीवी फुटेज देखने से पता चला कि घटना तीन बजे से लेकर 3.20 मिनट तक अंजाम दी गई। बदमाश 20 मिनट तक एटीएम केबिन के भीतर रहकर उसे तोड़ने की कोशिश करते रहे।सीसीटीवी फुटेज से यह भी पता चला है कि बदमाशों की संख्या तीन थी। जिनमें से दो बदमाश एटीएम केबिन के भीतर आए। लेकिन एटीएम तोड़ने की कोशिश एक ही बदमाश ने की। उसके साथ केबिन के भीतर आया दूसरा बदमाश लगातार भीतर-बाहर आता जाता रहा। जबकि उनका तीसरा साथी बाइक पर ही खड़ा था।

हनुमान मंदिर का घंटा चोरी मामले में मेजारोड चैकी पुलिस निष्क्रिय

अखंड भारत संदेश

36 घंटे बाद भी चोर पुलिस की गिरफ्त से है बाहर, स्थानीय लोगों में है पुलिस के प्रति बढ़ रहा आक्रोश, आये-दिन चोर दे रहे है चोरी की घटना को अंजाम

मेजा। मेजारोड चैकी पुलिस की निष्क्रियता के चलते बीते 36 घंटे बाद भी हनुमान मंदिर का घंटा चोरी करने वाले चोर पुलिस की गिरफ्त से बाहर है ऐसें में स्थानीय लोगों के मन में पुलिस के प्रति भारी आक्रोश कायम है। उल्लेखनीय है कि मेजा थाना क्षेत्र के कठौली फाटक के समीप स्थित हनुमान मंदिर का बीते रविवार की रात मंदिर में लगे चार घंटा में अज्ञात चोर घंटे में लगा लोहे का सकरा काटा कर उठा ले गये थे जिसके सम्बन्ध में मंदिर के पुजारी देवेन्द्र नारायण उर्फ बवाली बाबा के द्वारा लिखित शिकायती प्रार्थना पत्र मेजारोड चैकी प्रभारी को दिया गया था। बताते है कि प्रार्थना पत्र मिलने के पश्चात चैकी प्रभारी ने मौके पर जाकर मुआयना भी किये और शीघ्र चोरो को पकड़ने का ग्रामीणों को भरोसा भी दिलाया था लेकिन तीन दिन बीत जाने के बाद भी चैकी पुलिस चोरों को पकड़ नहीं पायी है। मजे की बात तो यह है कि मेजारोड चैकी के नाक के नीचे कभी बाजार तो कभी कस्बा या फिर कभी स्थानीय मंदिर को चोर आये-दिन निशाना बना रहे है फिर भी पुलिस कुम्भकर्णी निद्रा में सो रही है। रात में गश्त करने के बजाय लूट-खसोट एवं भ्रष्टाकर में लिप्त दिखाई दे रहे है। ऐसे स्थानीय ग्रामीणों में स्थानीय पुलिस की रवैया के प्रति काफी आक्रोश कायम हो गया है।

पुलिस को खुली चुनौती दे रहे खनन माफिया

हनुमानगंज। प्रदेश की सरकार और उच्च न्यायालय भले ही मिट्टी के अवैध खनन पर रोक लगा रखी है किंतु सराय इनायत की पुलिस के लिए इसका कोई विशेष मायने नहीं रखता। हनुमानगंज चौकी क्षेत्र मे इन दिनों अवैध खनन माफियाओं का बोल बाला है। बताया जाता है की यहां कि स्थानिय पुलिस अपने व्यक्तिगत रसूख पर खनन माफियाओं को हरी झंडी दे रखी है। क्षेत्र में इन दिनों मिट्टी और बालू खनन शाम ढलते ही शुरू हो जाता है और रात भर रोड पर इन्ही का कब्जा होता है। जहां तहां टैक्टर और जेसेबी सड़क पर गरजने लगते हैं । क्षेत्र के कई लोगों का कहना है कि रात 9 बजे के बाद कोटवां रोड पर चलना जान जोखिम भरा हो जाता है।चारों तरफ मिट्टी का धूल ही गूंजता रहता है। इससे जहां प्रदूषण फैलरहा है वहीं रात को आएदिन दो पहिया वाहन चालक टैक्टरों से टकराकर जख्मी हो रहे हैं। यह शिलशिला रातभर चलता रहता है दिन निकलते ही बंद हो जाता है। इसे पुलिस की मिली भगत कहें या उदासीनता।

एनएसयूआई ने अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित की काव्य गोष्ठी

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर ठरवक इलाहाबाद द्वारा इलाहाबाद विश्व विद्यालय के निराला लॉन में काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस दौरान कई छात्र-छात्राओं ने अपनी स्वरचित कविताएं, गजल, शायरी, काव्य पाठ सुनाई एवं महिला सशक्तिकरण पर कई छात्रों ने अपना वक्तव्य रखा। कार्यक्रम की नेतृत्व कर रहें एनएसयूआई प्रदेश महासचिव अजय पाण्डेय बागी व अध्यक्षता कर रहें एनएसयूआई जिलाध्यक्ष अक्षय यादव क्रांतिवीर ने कहा कि महिलाओं स्तिथि आज भी बहुत ही सोचनीय है,जिसके जिम्मेदार पुरुष समाज पे जाता है जबकि नारी मां है वो, बेटी है वो, बहन है वो तो कभी पत्नी है वो,जीवन के हर सुख-दुख में शामिल है वो शक्ति है वो, प्रेरणा है वो! बिन नारी न सब सून।कार्यक्रम में जिलाध्यक्ष अक्षय यादव क्रांतिवीर, प्रदेश महासचिव अजय पांडेय बागी, प्रदेश महासचिव अभिनव तिवारी, कौशाम्बी अध्यक्ष अमित द्विवेदी, सत्यम कुशवाहा, आकांक्षा भारती, आंचल गुप्ता, स्नेहा सिंह, संध्या केशरी , वैभव सिंह, जितेंद्र जीतू, शुभम इलाहाबादी, सौरभ द्विवेदी, प्रत्युष रौनक, देवेश पाण्डेय एवं अन्य छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

एनएसयूआई द्वारा आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभाग करतें

खबर संक्षेप

नेहरू युवा केंद्र ने 7 दिवसीय स्पीयर हेड टीम का जिला स्तरीय आवासीय प्रशिक्षण का शुभारंभ

प्रयागराज। नमामि गंगे में युवाओं की सहभागिता परियोजना के अंतर्गत नेहरू युवा केंद्र प्रयागराज द्वारा 7 दिवसीय स्पीयर हेड टीम का जिला स्तरीय आवासीय प्रशिक्षण का शुभारंभ राज्य शैक्षिक प्रबन्धन संस्थान, प्रयागराज में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्जवलन से किया गया । जिला युवा अधिकारी जागृति पांडे, जिला परियोजना अधिकारी ए षा सिंह , राज्य प्रशिक्षक महेश दुबे , राज्य प्रशिक्षक चन्द्र मणि दुबे राजन अवध कुशवाहा उपस्थित रहे । कार्यकम में विभिन्न ब्लॉक के युवाओं ने प्रति भाग किया । सर्व प्रथम जिला युवा अधिकारी ने टीम सदस्यों का स्वागत किया एवं प्रतिभागियों को गंगा हेतु स्वयं सेवा भाव से गंगा सफाई जागरूकता अभियान हेतु आगे आने का धन्यवाद दिया। चूंकि इस प्रशिक्षण का महिला दिवस के अवसर पर शुभारभ किया जा रहा है इसलिए सुश्री जागृति ने सभी महिला प्रतिभागियों को पूरे मनोयोग से ऐसे देश हित कार्यों में आने को उत्साहित किया। जिला परियोजना अधिकारी एशा सिंह ने प्रेस्नेटेशन के माध्यम से नमामि गंगे परियोजना के बारे में विस्तार से जानकारी दी और सभी को ग्रामीण क्षेत्रों में चल रहे गंगा स्वच्छता के प्रयागराज जिले में चल रहे कार्यों के बारे में अवगत कराया ।

एरिया मैनेजर से दिनदहाड़े हुई लूट दो बदमाशों ने दिए वारदात को अंजाम

3 लाख 32 हजार रुपये की वसूली कर बैंक जमा करने जा रहे थे एरिया मैनेजर

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। शिवकुटी थाना अंतर्गत ओल्ड कैंट में आज दोपहर काली रंग की पल्सर बाइक सवार बदमाशों ने एरिया मैनेजर से ओल्ड कैंट के वीर अब्दुल हमीद गेट के पास 3 लाख 32 हजार रुपये लूट लिये। घटना की जानकारी होते हुए शिवकुटी थाने की पुलिस पहुंची।

पुलिस को पीड़ित कीडगंज बेरहना निवासी राजेश पटेल ने बताया कि वह एक प्राइवेट कंपनी में एरिया मैनेजर के पद पर तैनात है। वह कस्टमर से प्रतिदिन की तरह आज भी पैसे की वसूली करने रसूलाबाद, तेलियरगंज आदि एरिया गया था। वहां से वसूली कर वापस सिविल लाइंस स्थित बैंक में पैसा जमा करने जा रहा था। जैसे ही वह अब्दुल हमीद गेट के पास पहुंचा ही था कि पल्सर बाइक सवार बदमाश ने उसे रोका, वह कुछ समझ पाते इससे पहले बाइक में टंगे बैग को छीनकर भाग निकले।

घटनास्थल पर छानबीन करती पुलिस

खंगाली जा रही सीसीटीवी फुटेज

दरअसल पल्सर बाइक सवार बदमाश घटना को अंजाम देने के बाद वे लोग फाफमऊ की ओर भागे थे। पुलिस अब घटना स्थल के आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है। पुलिस को अंदेशा है कि बाइक सवार बदमाश कहीं न कहीं फुटेज में जरूर कैद हुए होंगे।वहीं घटना की जानकारी होते ही पुलिस ने फाफामऊ चुंगी सहित अन्य स्थानों पर गाड़ियों की चेकिंग तेज कर दी। शिवकुटी इंस्पेक्टर मनीष त्रिपाठी का कहना है कि घटना को अंजाम देने के बाद बदमाश फाफामऊ की ओर भागने का अंदेशा है। जांच की जा रही है, जल्द ही शातिर बदमाशों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

शशिकांत सिंह बने एनसीआर के पीसीसीएम, पदभार संभाला

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। भारतीय रेल यातायात सेवा 1990 बैच के अधिकारी शशिकांत सिंह ने सोमवार को उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय में प्रधान मुख्य वाणिज्य प्रबंधक (पीसीसीएम) का पदभार ग्रहण कर लिया। इसके पूर्व वह मुख्य वाणिज्यिक प्रबंधक/ खानपान और यात्री सेवा, के पद पर तैनात थे। शशिकांत सिंह के ज्वाइन करने से पूर्व पीसीसीएम के पद पर शैलेंद्र कपिल की तैनाती थी। पिछले माह 28 फरवरी को सेवा निवृत्त हो जाने की वजह से यह पद खाली चल रहा था। शशिकांत सिंह की भारतीय रेलवे के तेज तर्रार अफसरों में गिनती होती है। वह विभिन्न जोनल रेलवे के महत्वपूर्ण पदों पर काम कर चुके हैं। एनसीआर में मुख्य वाणिज्यिक प्रबंधक/माल ढुलाई विपणन और मुख्य वाणिज्यिक प्रबंधक/सी एंड पीएस के रूप में भी वह कार्य कर चुके हैं।पदभार ग्रहण करने के बाद शशिकांत सिंह ने कहा कि उनकी प्राथमिकता यात्री सेवाओं में वृद्धि, व्यापारियों और ग्राहकों को रेलवे के लिए नई लोडिंग को आकर्षित करने और इस तरह रेलवे के राजस्व में वृद्धि करने की होगी।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित पदाधिकारी

पेयजल एवं स्वच्छता पदाधिकारियों को करछना में दिया गया प्रशिक्षण

करछना। विकास खंड के ग्राम पंचायत करछना में पंचायत सदन में मंगलवार को पेयजल एवं स्वच्छता पदाधिकारियों का एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ, इस कार्यक्रम में यूनाइटेड के जिला सलाहकार शिवा कांत द्विवेदी ने पदाधिकारियों को प्रशिक्षण कार्यक्रम में बताया कि ग्राम पंचायत पेय जल स्वच्छता समिति का गठन संविधान के 73 वें संशोधन अधिनियम में शामिल किया गया है, और यह संवैधानिक समिति हैं, यह ग्रामीणो को नल से जल उपलब्ध कराने का कार्य करेगी, तथा निर्मित परसंपतियो का संचालन एवं रखरखाव आदि करेंगी ।जल जीवन मिशन के बारे में जल जीवन उपलब्धता कराना मकसद है, प्रशिक्षण में ग्राम प्रधान करछना आकृति सिंह/अवतार किशन सिंह एडवोकेट अध्यक्ष प्रधान संघ करछना ने सभी सदस्यों को प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित व गांव के गणमान्य लोगों के प्रति आभार प्रगट किया । इस मौके पर शिव विजय सिंह, अनिल कुमार, प्रकाश मिश्रा, पंचायत सहायक प्रतिमा सिंह सहित दर्शन भर से अधिक लोगों ने प्रति भाग किया।

दुष्कर्म के बाद लड़की को जिंदा जलाने के जुर्म में फांसी की सजा रद, तत्काल रिहा करने का आदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने दुष्कर्म के बाद 14वर्ष की बालिका की जलाकर हत्या के आरोपित को मिली फांसी की सजा रद कर दी है। हाई कोर्ट ने कहा पाक्सो एक्ट के तहत स्वीकार्य आधार भूत सबूतों के बगैर मात्र इस अवधारणा पर सजा नही दी जा सकती कि अभियुक्त स्वयं को निर्दोष साबित करने में नाकाम रहा है। कोर्ट ने कहा कि निश्चित तौर पर अभियुक्त पर स्वयं को निर्दोष साबित करने का भार होता है। उसे साबित करना चाहिए लेकिन अभियोजन के पास उसके अपराध में लिप्त होने का प्रथमदृष्टया पर्याप्त तथ्य व आधार भूत साक्ष्य होना चाहिए। कोर्ट ने कहा निर्दोष साबित करने की अवधारणा मानवाधिकार किन्तु हो सकते हैं वैधानिक अपवाद संदेह से परे अपराध साबित करना अभियोजन का दायित्व है। इसकी अवधारणा पर सजा नहीं सुनाई जा सकती। कोर्ट ने आरोपों से मुक्त करते हुए फांसी व आजीवन कैद व जुमार्ने की सजाएं रद्द कर दी है और उसे तत्काल रिहा करने का निर्देश दिया है। यह आदेश न्यायमूर्ति मनोज मिश्र तथा न्यायमूर्ति समीर जैन की खंडपीठ ने मानू ठाकुर की अपील को स्वीकार करते हुए दिया है।कोर्ट ने कहा कि अभियोजन ने पीड़िता के मृत्युकालिक बयान को साबित करने के लिए ,बयान दर्ज करने वाले मजिस्ट्रेट व डाक्टर का बयान नहीं लिया।और न ही फोरेंसिक व डी एन ए जांच करायी। ट्रायल कोर्ट में पीड़िता का बयान दर्ज करने वाले मजिस्ट्रेट को सम्मन करने की अर्जी भी नहीं दी। अधीनस्थ अदालतों ने सबूतों को समझने में गलती की। आरोप साबित किए बगैर इस आधार पर सजा सुना दी कि आरोपी खुद को निर्दोष साबित नहीं कर सका।

सिटी बस चार्जिंग पर कहीं भारी न पड़ जाए, नगर निगम की घोर लापरवाही

(सुनील गिरि)

अंडर ग्राउंड हाई टेंशन लाइन के ऊपर शुरू कराया नाली का निर्माण, खराबी आने पर सिटी बस की चार्जिंग न होने से लग जाएगी बसों में ब्रेक

प्रयागराज। लाखों करोड़ों रुपए की लागत से सिटी बस चार्जिंग के लिए उत्तर प्रदेश पावर कारपोरेशन निगम लिमिटेड की ओर से अंडर ग्राउंड हाईटेंशन लाइन को बिछाया गया है। इसी लाइन के ऊपर नगर निगम अनदेखी करते हुए कार्यदाई संस्था के द्वारा नाली का निर्माण कराने में जुटे हुए हैं। यदि भविष्य में कहीं अंडर ग्राउंड लाइन में खराबी आई तो चार्जिंग न होने से सिटी बस पर ब्रेक लग जाएंगे।

जानकारी के मुताबिक प्रयागराज जिले के अंतर्गत नैनी के जहांगीराबाद स्थित उत्तर प्रदेश सरकार की एक महत्वपूर्ण योजना के तहत आम जनमानस के लिए सुचारू रूप से यात्रा करने व अपने गंतव्यों की ओर आने और जाने के लिए बैटरी युक्त चार्जिंग पॉइंट का निर्माण लाखों व करोड़ों रुपए की लागत से कराया गया है। बीते दिनों प्रदेश सरकार की ओर से भव्य उद्घाटन करते हुए बैटरी चार्जिंग युक्त बसों को हरी झंडी दिखाया जा चुका है और इन दिनों यही चार्जिंग बसें प्रयागराज की सड़कों पर फरार्टे से यात्रियों को उनके गंतव्य की ओर पहुंचाने में जुटे हुए हैं। बसों की चार्जिंग के लिए उत्तर प्रदेश पावर कारपोरेशन निगम लिमिटेड की ओर से लाखों व करोड़ों रुपए की लागत से (11 केवी) हाईटेंशन लाइन को अंडरग्राउंड केबल के द्वारा उक्त स्थान पर बिजली आपूर्ति जेल रोड उपकेंद्र के द्वारा मुहैया कराया जा रहा है। कुछ दिन पूर्व नाली के निर्माण के लिए खुदाई कार्य के दौरान अंडरग्राउंड केबल जेसीबी के द्वारा कट गई थी। जिससे कई घंटों तक सिटी बस चार्जिंग की बिजली आपूर्ति पूरी तरह से ठप पड़ गई थी। इतना ही नहीं विद्युत आपूर्ति ठप होने से इसकी गूंज प्रयागराज के अधिकारियों के अलावा लखनऊ स्थित शक्ति भवन में मौजूद पावर कॉर्पोरेशन के आला अधिकारियों सहित प्रदेश सरकार के संज्ञान में आने पर हड़कंप मच गया था। संबंधित ठेकेदार के खिलाफ नैनी कोतवाली पुलिस को बकायदा स्थानीय उपखंड कार्यालय की ओर से तहरीर भी दी गई है। उस समय स्थानीय कर्मचारियों ने घंटों कड़ी मशक्कत के बाद अंडर ग्राउंड केबल की मरम्मत कार्य को पूर्ण कर देर रात लगभग 12:30 बजे सिटी बस चार्जिंग की आपूर्ति को बहाल करने में सफलता प्राप्त की थी। इसके बावजूद नगर निगम की घोर लापरवाही एक बार फिर सामने आने लगी है। नगर निगम की ओर से कार्यदाई संस्था के तहत उक्त अंडर ग्राउंड हाईटेंशन लाइन के ऊपर नाली का निर्माण कराया जा रहा है। यदि भविष्य में कभी भी अंडर ग्राउंड लाइन में खराबी आती है तो सिटी बस चार्जिंग की बिजली आपूर्ति पूरी तरह से ठप पड़ जाएगी और संचालित बसों पर ब्रेक भी लग जाएंगे। उपखंड अधिकारी दिनेश प्रसाद ने बताया कि समस्त प्रकरणों की जानकारी नगर निगम के अधिकारियों को अवगत कराया गया है। इसके बावजूद वहां पर निर्माण कार्य को शुरू कराया गया है। यदि उक्त स्थानों पर अंडरग्राउंड केबल की लाइन में खराबी आती है तो उत्तर प्रदेश पावर कारपोरेशन को जहां नुकसान उठाना पड़ेगा। वहीं निर्माण किए गए नालियों को भी मरम्मत कार्य करने के लिए ध्वस्त करना पड़ सकता है। जिससे संबंधित विभागों को आर्थिक नुकसान के साथ ही सिटी बस चार्जिंग पर भी भारी असर पड़ेगा। इसकी पूर्ण जानकारी विद्युत पावर कारपोरेशन निगम लिमिटेड के प्रयागराज जिले से संबंधित पूर्वांचल वाराणसी स्थित एमडी कार्यालय सहित शक्ति भवन (लखनऊ) आला अधिकारियों को भी दी जा चुकी है।

गर्मी में खड़ा होगा पानी और सांस लेने का संकट!

अखंड भारत संदेश

गांवों में डंप की जा रही पावर प्लांट से निकली फ्लाई ऐश....

भाकियू के मंडल महासचिव के के मिश्र ने की शिकायत, तहसील प्रशासन नहीं दे रहा ध्यान

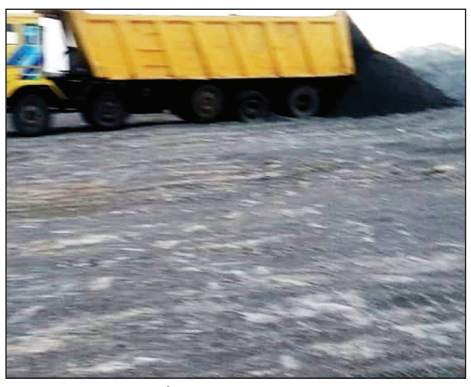

शंकरगढ़। प्रयागराज पावर जेनरेशन कंपनी लिमिटेड से निकली फ्लाई ऐश आसपास के गांवों में डंप की जा रही है। जनवा और ललई गांव में दिनरात डंपर चल रहे हैं। कल्याणपुर गांव की हालत ऐसी हो गई है कि स्थानीय निवासियों के दरवाजे तक कोयले की राख का पहाड़ लगा दिया गया है। इस समस्या को लेकर भाकियू के शंकरगढ़ मंडल महासचिव केके मिश्र ने मंगलवार को कलेक्ट्रेट मुख्यालय पर एडीएम सिटी के दफ्तर के समक्ष धरना प्रदर्शन किया।धरना प्रदर्शन की सूचना पर अधिकारियों ने फ्लाई ऐश की डंपिंग रोकवा दी है।

केके मिश्र के साथ क्षेत्र के तमाम ग्रामीण और भारतीय किसान यूनियन के लोग भी मौजूद रहे। केके मिश्र ने कहा कि मौसम की वजह से अभी स्थानीय लोगों को थोड़ी राहत है,पर जैसे-जैसे तापमान बढ़ेगा और हवाएं तेज होंगी, यही कोयले की राख क्षेत्रवासियों के लिए मुसीबत बन जाएगी। न तो दिन में घर से बाहर निकलते बनेगा और न ही पानी पीते। बताया कि क्षेत्र की कई खदानों में भी फ्लाई ऐश डंप की जा रही है, जिसमें एकत्र पानी स्थानीय लोग गर्मी के दिनों में इस्तेमाल करते हैं। भारतीय किसान यूनियन के मंडल महासचिव केके मिश्र ने बताया कि उक्त समस्या को लेकर तहसील प्रशासन के साथ-साथ उच्चाधिकारियों से शिकायत की, पर कुछ दिनों की रोक के बाद फिर से फ्लाई ऐश गांवों में डंप की जाने लगी। भाकियू नेता केके मिश्र ने बताया कि क्षेत्र के कल्याणपुर गांव में आदिवासियों के दरवाजे कोयले की राख का पहाड़ लगा दिया गया है। लोगों का घर से निकलना, खाना-पीना सब दुश्वार हो गया है। यही स्थिति क्षेत्र के ललई, जनवा समेत कई गांव की है। उक्त दोनों गांवों में कई टन फ्लाई ऐश डंप की जा चुकी है। यह कार्य निरंतर चल रहा है। बताया कि इस मामले को लेकर एसडीएम बारा सौम्या गुरुरानी से भी शिकायत की गई। फोन पर बात हुई। उन्होंने बताया कि फ्लाई ऐश की गांवों में डंपिंग पर रोक लगा दी गई है। बावजूद इसके पीपीजीसीएल के डंपर फ्लाई ऐश लेकर दिनरात दौड़ लगा रहे हैं।केके मिश्र ने कहा कि फ्लाई ऐश के रिहायशी एरिया में डंप किए जाने से कैंसर का खतरा बढ़ जाएगा। यह क्षेत्र पहले से ही तपेदिक प्रभावित क्षेत्रों में गिना जाता है, ऐसे में कोयले की राख का इतने बड़े पैमाने पर डंप किया जाना क्षेत्रीय लोगों की सेहत के लिए खतरा है। बताया कि क्षेत्र की कई खदानों में भी कोयले की राख डंप की जा चुकी है। केके मिश्र ने चेतावनी दी है कि यदि इस पर तत्काल रोक नहीं लगाई गई तो वह इसके खिलाफ उग्र धरना-प्रदर्शन को बाध्य होंगे। जिला मुख्यालय पर प्रदर्शन में उन्होंने जनपद के हर वर्ग, पेशे से जुड़े लोगों का आह्वान करते हुए इसके खिलाफ खड़े होने की अपील की है।

त्योहारों को लेकर सराय इनायत में पीस कमेटी की बैठक संपन्न

पीस कमेटी की बैठक में उपस्थित लोग

अखंड भारत संदेश

हनुमानगंज। होली और सबेवरात त्योहारों को लेकर सोमवार को सराय इनायत थाने में पीस कमेटी की बैठक की गई जिसमें होली व सबेवरात को शांतिपूर्ण ढंग से मनाने का अपील किया गया। इस दौरान देवरिया और चकिया घरारा गांव में होलिका दहन को लेकर चला रहा पुराना विवाद को लेकर क्षेत्राधिकारी फूलपुर रामसागर ने थाना अध्यक्ष सुशील कुमार दुबे को निर्देशित किया और हल्का लेखपाल के साथ बैठक कर मामले का निस्तारण करने का आदेश दीया इस दौरान ग्राम प्रधान सुदनीपुर कला सचिन सिंह कोटवा के संकर्षण सिंह भूपेंद्र सिंह वाहिद अली सूरज मिश्रा सहित थाने के सभी दरोगा सिपाही मौजूद रहे।

अखिलेश यादव के आरोप पर ईवीएम की रखवाली बढ़ी

उज्जवल और विजमा समेत कई सपा उम्मीदवार पहुंचे मतगणना स्थल

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। प्रदेश में सातवें और अंतिम चरण के मतदान के बाद आए एक्जिट पोल के नतीजों ने प्रत्याशियों की वैसे भी धकड़न बढ़ा दी थी। मंगलवार शाम अखिलेश यादव ने ईवीएम स्ट्रांग रूम से हटाने का आरोप लगाया तो यहां मुंडेरा मंडी मे बैरीकेडिंग कर दी गई, साथ ही समाजवादी पार्टी के कई नेता और कार्यकर्ता भी स्ट्रांग रूम के आसपास डट गए हैं। अन्य राजनीतिक दलों ने भी ईवीएम की पहरेदारी शुरू कर दी है। रात में विजमा यादव, उज्जवल रमण सिंह, संदीप पटेल, रईसचंद्र शुक्ला समेत कई उम्मीदवार अपने समर्थको के साथ मुंडेरा मंडी पहुंचे और स्ट्रांग रूम के बाहर से ईवीएम की सुरक्षा व्यवस्था देख निगरानी बढ़ा दी। गाड़ियां रोककर चेक करने लगे ईवीएम तो नहीं ले जा रहे अखिलेश यादव की प्रेस वार्ता और आरोप के बाद आलम यह हुआ कि प्रयागराज की मुंडेरा मंडी में सपा प्रत्याशियों के साथ तमाम पदाधिकारियों और समर्थकों का जमावड़ा लग गया। यहां तक कि मंडी में व्यवस्था गत कार्य से आने और बाहर जाने वाली गाड़ियों को भी रोककर सपा के कार्यकर्ता चेक करने लगे। गाड़ी की फोटो खींचने के साथ ही वीडियो भी बनाने लगे।

ईवीएम सुरक्षा को देखने सपा प्रत्याशियों ने मुंडेरा मंडी का किया भ्रमण

मेजा ऊर्जा निगम ने मनाया अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

अखंड भारत संदेश

मेजा। मेजा ऊर्जा निगम परिसर में मंगलवार को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस उत्साह पूर्वक मनाया गया इस अवसर पर ऊर्जा निगम ने सलैया खुर्द स्थित विजय इंटर कॉलेज की छात्राओं के लिए कार्यक्रम का आयोजन किया तथा अपराजिता महिला समाज के सदस्यों के लिए प्रभावी संचार और प्रस्तुति कौशल पर एक गोष्ठी का आयोजन किया कार्यक्रम का उद्घाटन अपराजिता महिला समाज की अध्यक्षा अनुराधा शर्मा ने किया प्रोफेसर डॉक्टर कैप्टन रेखा रानी और प्रोफेसर अर्चना सिंह ने अतिथि वक्ता के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई ' अपने संबोधन में श्रीमती अनुराधा शर्मा ने कहा कि महिलाएं ना केवल समाज का बल्कि पूरे समुदाय का निर्माण करते हैं महिलाओं के सम्मान के लिए सिर्फ एक दिन पर्याप्त नहीं है बल्कि हर दिन एक ऐसा दिन होना चाहिए जहां हम महिलाओं की दिव्यता का सम्मान करें ' अपराजिता महिला समाज के प्रति आभार व्यक्त करते हुए श्रीमती अनुराधा शर्मा ने कहा कि विभिन्न पहलो से अपराजिता महिला समाज ने महिलाओं और समाज के कमजोर वर्ग को सशक्त बनाया है विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से परिवारो को एक साथ लाने में महिला समाज ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई अतः अपराजिता महिला समाज मेजा ऊर्जा निगम का एक अभिन्न अंग है '

अपने संबोधन में मुख्य कार्यकारी अधिकारी अनिल कुमार ने कहा कि समाज के अभिन्न अंग के रूप में महिलाओं ने एक लंबा सफर तय किया है मुझे खुशी है कि उन्होंने रूढ़िवादी परंपराओं की सभी बेडियो को तोड़कर सशक्त आधुनिक महिलाओं के रूप में उभरी हैं मुझे यह देखकर भी बहुत खुशी हो रही है कि आज इतनी सारी इंटर कॉलेज की छात्राएं सशक्त महिलाओं का जश्न मनाने के लिए यहां मौजूद हैं कार्यक्रम में अखिलेश, के पी पट्टनायक, अपर महाप्रबंधक समेत अपराजिता महिला समाज की सभी उपाध्यक्ष और अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के दौरान उपस्थित छात्राएं व महिलाएं

शुआट्स में मनाया गया अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

नैनी। सैम हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय (शुआट्स), प्रयागराज के होम साइंस एवं शिक्षक शिक्षा विभाग में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। एथलिंड कॉलेज ऑफ होम साइंस में होम साइंस सोसाइटी के तत्वावधान में दुनिया भर में महिलाओं की उपलब्धियों और संघर्षों को स्वीकार करने और उन्हें सलाम करने के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओ, भाषण एवं पोस्टर बनाने की प्रतियोगिता आदि गतिविधियों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन डीन प्रोफेसर डॉ . रानू प्रसाद के नेतृत्व में किया गया जिसमें छात्राओं और अध्यापिकाओ ने कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया। गृह विज्ञान सोसाइटी स्टाफ सलाहकार डॉ अंशु ने छात्र-छात्राओं को प्रेरित किया और उनके प्रयासों की सराहना की। वहीं, शिक्षक शिक्षा विभाग में संयुक्त राष्ट्र के विषय ह्यएक स्थायी कल के लिए आज लैंगिक समानताह्न थीम का कुशलता से पालन किया। रंगोली प्रतियोगिता आयोजित करके पूर्व-उत्सव की शुरूआत की, जहां प्रतिभागियों ने लैंगिक समानता पर संदेशों के साथ सुंदर रंगोली बनाई। 8 मार्च का समारोह उद्घाटन प्रार्थना और बाइबिल पढ़ने के साथ शुरू हुआ। इस अवसर पर प्रोफेसर दीपा पुनेठा, पूर्व प्रमुख, मनोविज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे, जिनका स्वागत डॉ. एस.एस. मसीह ने किया। विभाग के छात्रों ने नृत्य, गीत, एक नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया जिसमें बालिकाओं ने भ्रूण हत्या पर प्रकाश डाला गया। अंत में रानी लक्ष्मी बाई, मिताली राज, बेनजीर भुट्टो, कल्पना चावला, एलटीजी डॉ माधुरी कानितकर, लता जैसी सफल महिलाओं को चित्रित किया गया। फैंसी ड्रेस शो भी आयोजित हुआ। कार्यक्रम में डीन, प्रो डॉ सीनियर मैरियन मैथ्यू, विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डॉ समाला एस मसीह, डॉ प्रेप्रभा सिंह, डॉ एस.एच. कासिम, डॉ निहारिका डेनिस, डॉ कीर्ति कटिंग, डॉ सीमा मलिक, डॉ अविस चिंतामणि, डॉ सैयदा सारा अजीज, डॉ राजीव सिंह, डॉ प्रशोभ पॉल डिडोजा, डॉ ज्योत्सना जायसवाल, डॉ अनुपमा मेहता, डॉ चेतना पांडे, डॉ संगीता अल्फ्रेड, सुश्री पूजा जे सोनपाकर आदि शामिल रहे।

मैं अबला नादान नहीं हूं, दबी हुई पहचान नहीं हूं

न्यू एंजिल्स सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल में मना अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर छात्राओं के बीच स्कूल की प्रबंधिका डा0 शाहिदा।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। न्यू एंजिल्स सीनियर सेकेण्ड्री .स्कूल के छात्र एवं छात्राओं द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया। सभी छात्रों ने महिला दिवस पर अपने अपने विचार रखे। प्रधानाचार्य बी0के0 सोनी ने महिला और पुरुष दोनो को बराबर के अधिकार की बात बताई। वुमेन आफ टुमारो पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि मैं अबला नादान नहीं हूँ, दबी हुई पहचान नहीं हूँ।

इस दौरान एफ0 जीनत, एच आर मैनेजर ने संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित थीम जेन्डर इक्वालिटी टुडे फार ए सस्टेनेबल टुमारो पर अपने विचार प्रस्तुत किये। प्रबन्धक डॉ शाहिदा ने बताया कि यत्र नारयस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता, जहाँ स्त्री की पूजा होती है वहाँ देवता का वास होता है। उनकी जन जन से यही प्रार्थना है। औरत का सम्मान करो मगर स्त्रियों को भी अपने अधिकारों का दुरुपयोग नहीं करना चाहिये। इस अवसर पर सभी अध्यापिकाओं एवं महिला कर्मचारियों को सम्मानित किया। इस अवसर पर शशि पाण्डे, पूनम श्रीवास्तव, रेखा शुक्ला, शकुन्तला सिंह, चंचल पाण्डे, वीना मिश्रा, रायला सिद्दीकी, पूनम पाण्डे, मधु मिश्रा, नीलम, अनामिका आदि कार्यक्रम में उपस्थित थे।

महिलाओं के सम्मान में मनाया गया अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

अखंड भारत संदेश

अतिथि को सम्मानित करतीं अध्यक्षा राजकुमारी रत्ना सिंह।

परियावां, प्रतापगढ़। कृषि विज्ञान केन्द्र ऐठू में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मंगलवार को कृषि विज्ञान केन्द्र परिषर में विषयगत क्षेत्र कौशल और ज्ञान के साथ महिला किसान को सशक्त बनाने पर मनाया गया। कार्यक्रम में केन्द्र की अध्यक्षा राजकुमारी रत्ना सिंह, ईशा प्रिया मुख्य विकास अधिकारी प्रतापगढ़, डा0 सीमा सिंह राणा जिला उद्यान अधिकारी प्रतापगढ़, कुमारी अपर्णा सैनी खण्ड विकास अधिकारी कालाकांकर, डा0 अनीता तोमर वैज्ञानिक परि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र प्रयागराज सहित 228 महिला किसान उपस्थित रही। इस मौके पर गृह वैज्ञानिक स्वाती दीपक दुबे, डा0 सीमा सिंह राणा जिला उद्यान, केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं हेड डा0 ए0के0 श्रीवास्तव ने अपने विचार व्यक्त किये। उधर यूनिक समाज सेवा संस्थान आलापुर द्वारा शिव मंगल इंटर कालेज रामपुर दाबी संग्रामगढ़ में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिलाओं और बेटियों को आत्मनिर्भर बनाने और समाज में उन्हें बराबर का अधिकार दिलाने बेटियों की शिक्षा सुरक्षा सम्मान और कौशल विकास को बढ़ावा देकर उनके पहचान बनाने पर विशेष जागरूकता कार्यक्रम हुआ। इस कार्यक्रम में संस्थान के संरक्षक डा. राम प्रताप संस्थापक लवलेश, अध्यक्ष राहुल, विनोद, नवल किशोर, प्रखर, आशीष, उदयभान, अभिषेक, दिनेश, सचिन, संदीप, बीरेंद्र, अजय, पवन, राहुल संजय व सभी सदस्य व यूनिक परिवार के सदस्य मौजूद रहे।

स्टेशन अधीक्षक ने महिला रेल कर्मचारियों को कियां सम्मानित

अखंड भारत संदेश

महिला रेल कर्मचरियों को सम्मानित करते स्टेशन अधीक्षक।

प्रतापगढ़। विश्व महिला दिवस पर स्थानीय रेलवे स्टेशन पर महिला कर्मचारियों को स्टेशन अधीक्षक एसके यादव ने बुके देकर सम्मानित किया। इस मौके पर मालती, रोशनी, मनीषा,अंजू, प्रीति सिंह, किरण और बबिता पांडेय को दफ्तर में सम्मानित किया गया। एसएस ने कहा कि उनका स्टाफ महिला सशक्तिकरण की मिसाल है।

खिलाड़ियों को मिला सम्मान बढ़ने में मदद का भरोसा दिया

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। प्रतिभाओं को अगर सही दिशा औ? सपोर्ट मिल जाय तो उनकी मंजिल आसान हो जाती है। उनके अपना हुनर निखारने का अवसर भी मिल जाता है। उक्त बातें पूर्व विधायक हरि प्रताप सिंह ने मीरा भवन के निकट आयोजित होली हंगामा कवि सम्मेलन में बच्चा बैंक फ्रेंड्स ग्रुप, बीबीएफजी के छात्रों को सम्मानित करते हुये कहीं। इस मौके पर जनपद स्तरीय बाल क्रीड़ा प्रतियोगिता में फर्स्ट और सेकेंड स्थान पाने वाले अंश और सत्यम को उन्होंने अंग वस्त्रम से सम्मानित किया। कहा कि इन खिलाड़ियों की मदद आगे भी की जायेगी। खिलाड़ियों के सम्मान से ग्रुप के बाकी छात्र काफी खुश हैं।

उत्पीड़न को लेकर गरजे वकील, किया विरोध प्रदर्शन

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। बार काउन्सिल के आहवान पर वकीलों ने मंगलवार को यहां न्यायिक कामकाज का बहिष्कार करते हुए विरोध प्रदर्शन किया। प्रदेश भर मे वकीलों के उत्पीड़न तथा हमलों पर प्रशासनिक शिथिलता को लेकर वकीलों ने तहसील गेट पर एकत्र होकर प्रशासन व शासन के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। इसके बाद अधिवक्ताओं ने तहसील एवं सिविल न्यायालय मे न्यायिक कामकाज के बहिष्कार का प्रस्ताव सौंपा। विरोध प्रदर्शन की अगुवाई संयुक्त अधिवक्ता संघ के उपाध्यक्ष संतोष पाण्डेय व महामंत्री प्रवीण यादव ने संयुक्त रूप से किया। सभा को संबोधित करते हुए पूर्व अध्यक्ष ज्ञान प्रकाश शुक्ल ने कहा कि वकीलों की बार बार मांग के बावजूद अधिवक्ता सुरक्षा अधिनियम कानून पारित न होने से वकीलों पर रोज प्रदेश के हर कोने मे जानलेवा हमले हो रहे हैं। वहीं वकीलों ने स्थानीय तहसील मे इधर प्रशासनिक अफसरों की गैरहाजिरी को लेकर भी गहरी नाराजगी भी जताई। विरोध प्रदर्शन करने वालों मे विकास मिश्र, अनिल महेश, शैलेन्द्र सिंह, संजय सिंह, प्रमोद सिंह, मनोज शुक्ला, सिंटू मिश्र, सुरेंद्र सिंह, प्रमोद तिवारी, मस्तराम पाल, प्रभात श्रीवास्तव, सुमित त्रिपाठी, सुशील शुक्ल, धीरेन्द्र शुक्ल, आनन्द श्रीवास्तव, सत्येन्द्र श्रीवास्तव, शिव नारायण शुक्ल आदि अधिवक्ता रहे।

अज्ञात के खिलाफ चोरी का मुकदमा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने चोरी की घटना को लेकर सोमवार की रात अज्ञात बदमाशो के खिलाफ केस दर्ज किया है। कोतवाली के राजापुर निवासी बृजलाल ने दी गई तहरीर मे कहा है कि वह बाहर गया हुआ था। सोमवार को जब अपने मकान पर पहुंचा तो अंदर चोरी की घटना देख आवाक रह गया। अज्ञात चोरों ने आलमारी का लॉक तोड़कर सोने चांदी के जेवरात तथा घरेलू सामान पर हाथ साफ कर दिया। पीड़ित ने घटना की सूचना कोतवाली पहुंचकर दी। पुलिस ने इस पर चोरी का मुकदमा दर्ज किया।

ससुरालीजनों के खिलाफ दहेज प्रताड़ना का केस

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने ससुरालीजनों पर विवाहिता के उत्पीड़न तथा दहेज की मांग को लेकर प्रताड़ित करने के आरोप मे केस दर्ज किया है। बाघराय थाना के मण्डल भासो गांव निवासी गया प्रसाद पटवा के पुत्र गुरूप्रसाद ने दी गई तहरीर मे कहा है कि उसकी पुत्री का विवाह सगरा सुंदरपुर मे हौसिला प्रसाद पटवा के पुत्र सुनील प्रसाद पटवा के साथ हुआ था। आरोप है कि ससुरालीजनों ने तीन मार्च को दहेज की मांग को लेकर उसकी पुत्री महिमा को मारपीट कर घर से निकाल दिया। तहरीर के आधार पर पुलिस ने सोमवार की रात आरोपी पति सुनील तथा सास बिटटन देवी, जेठ अनिल पटवा व राजन पटवा तथा राजकुमार, ननद अनीता के खिलाफ विवाहिता के साथ मारपीट व दहेज को लेकर प्रताड़ना का मुकदमा दर्ज किया है।

तीन आरोपियों के खिलाफ मारपीट व धमकी का मुकदमा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने तीन आरोपियों के खिलाफ रंजिशन मारपीट तथा गालीगलौज व धमकी को लेकर केस दर्ज किया है। कोतवाली के गोपाल दुबे का पुरवा देवली निवासी जमुना प्रसाद सरोज ने दी गई तहरीर मे कहा है कि सोमवार को गांव के कोकई की पत्नी चंद्रकला तथा पुत्रियां शिवानी व डालिंग ने रंजिश के चलते उसके दरवाजे पर आकर मारपीट की। विरोध करने पर आरोपियों ने गाली देते हुए जानलेवा धमकी दी। तहरीर के आधार पर पुलिस ने तीनों आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज किया है।

दुष्कर्म के अभियोग में वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। थाना अंतू के थानाध्यक्ष अर्जुन सिंह मय टीम द्वारा देखभाल क्षेत्र/तलाश वांछित, वारण्टी अभियुक्त/चेकिंग के दौरान मुखबिर खास की सूचना पर थाना अंतू के मु0अ0सं0- 82/22 धारा 376(2)1, 506 भादवि व 3/4 पोक्सो एक्ट में वांछित अभियुक्त धर्मेन्द्र सिंह पुत्र स्व0 फौजदार सिंह नि0 महुआवन, मझिलहां थाना अंतू जनपद प्रतापगढ़ को थाना क्षेत्र अंतू के गड़वारा बाजार में तिराहे के पास से गिरफ्तार किया गया।

अपहरण के अभियोग में वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। थाना रानीगंज के उ0नि0 श्री लाल बहादुर पाल मय टीम द्वारा देखभाल क्षेत्र/तलाश वांछित, वारण्टी अभियुक्त/चेकिंग के दौरान मुखबिर खास की सूचना पर थाना रानीगंज के मु0अ0सं0- 47/22 धारा 363, 366, 504, 506 भादवि व 7/8 पोक्सो एक्ट में वांछित अभियुक्त ललित कुमार सरोज पुत्र शिव कुमार सरोज नि0 लपकन थाना रानीगंज जनपद प्रतापगढ़ को थाना क्षेत्र रानीगंज के राजापुर खरहर में तिराहे के पास से गिरफ्तार किया गया। उक्त अभियोग से सम्बन्धित अपहता को भी बरामद कर लिया गया है।

बच्चों के विवाद में दो की पिटाई

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। कोतवाली क्षेत्र के नेवादा गांव में बच्चों के विवाद को लेकर आरोपी पड़ोसियों ने एक परिवार के दो लोगों को जख्मी कर दिया। इस संबंध में पीड़ित ने पट्टी कोतवाली में तहरीर दी है। कोतवाली क्षेत्र के नेवादा गांव के रहने वाले जिमेदार पत्र दिलावर ने तहरीर देकर बताया कि सोमवार को शाम छह बजे बच्चों के विवाद को लेकर उसके पड़ोसी आधा दर्जन लोग एक राय होकर गाली देने लगे। मना करने पर मारपीट पर उतारू हो गए अपनी जान बचाने के लिए जब पीड़ित घर में भागा तो आरोपी घर में घुसकर उसे जमकर मारा पीटा। बीच-बचाव करने आए बेटे जान मोहम्मद को भी आरोपियों ने पीटकर जख्मी कर दिया। इस मामले में मंगलवार को कोतवाली पहुंचकर आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

मतगणना स्थल पर मोबाईल फोन ले जाना वर्जित

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। विधानसभा सामान्य निर्वाचन-2022 की मतगणना को सकुशल, निष्पक्ष, शान्तिपूर्ण एवं पारदर्शी ढंग से सम्पन्न कराने हेतु भारत निर्वाचन आयोग के निर्देश के क्रम में जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी डा0 नितिन बंसल ने अवगत कराया है कि मतगणना हाल में अनुमन्य वीडियो रिकार्डिंग के अतिरिक्त कोई भी फोटोग्राफी/वीडियोग्राफी नही की जा सकेगी। आयोग द्वारा अनुमन्य पासधारक मीडिया कर्मियों द्वारा मतगणना हाल में मतगणना प्रक्रिया की फोटोग्राफी कैमरे से की जा सकेगी। मतगणना स्थल पर बने मीडिया सेन्टर तक पासधारक मीडिया बन्धुओं हेतु मोबाईल फोन अनुमन्य रहेगा और मोबाईल फोन का प्रयोग मीडिया सेन्टर के अलावा कहीं भी नही किया जा सकेगा। मीडिया सेन्टर में ही मीडिया बन्धुओं के फोन रखने की व्यवस्था सुनिश्चित की जायेगी। मतगणना स्थल पर प्रत्याशी, मतगणना अभिकर्ता एवं मतगणना कार्मिक मोबाईल फोन नही ले जा सकेंगे। इसके अलावा मतगणना परिसर में किसी भी प्रकार का धूम्रपान एवं ज्वलनशील पदार्थ नही ले जा सकेंगे। इसकी जांच के लिये गेट पर त्रिस्तरीय चेकिंग की व्यवस्था करायी गयी है। कोई भी सुरक्षा प्राप्त जनप्रतिनिधि मतगणना अभिकर्ता नही बन सकता है। जिलाधिकारी ने बताया है कि प्रत्येक राउण्ड पूर्ण होने पर आयोग के नियमो के अनुसार उसकी जानकारी उपलब्ध करायी जाएगी।

महुली मण्डी में बने मतगणना स्थल का डीएम ने किया निरीक्षण

अधिकारियों को दिये आवश्यक निर्देश

महुली मण्डी का निरीक्षण करते डीएम डा0 नितिन बंसल।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी डा0 नितिन बंसल ने विधानसभा सामान्य निर्वाचन-2022 के दृष्टिगत मतगणना को सकुशल, निष्पक्ष, शान्तिपूर्ण एवं पारदर्शी ढंग से सम्पन्न कराने के उद्देश्य से महुली मण्डी में बने मतगणना स्थल का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होने अभी तक तैयारियों पूर्ण न किये जाने पर अधिशासी अभियन्ता पीडब्लूडी को सचेत किया और निर्देशित किया कि निर्धारित स्थान पर सुरक्षा हेतु बैरीकेटिंग का स्थान सुनिश्चित करके सभी निर्धारित स्थलों पर मजिस्टेटों की तैनाती की जाए। अन्य व्यवस्थायें पूर्ण कर ली जाए।

जिलाधिकारी ने अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) से कहा कि मतगणना हाल में विधानसभावार जाने वाले कार्मिकों का एक मतगणना प्लान बना लिया जाये और उसे गेट पर ही चस्पा कर दिया जाये ताकि मतगणना कार्मिक आसानी से अपनी विधानसभाओं में मतगणना कार्य हेतु पहुँच सके। अपर पुलिस अधीक्षक पूर्वी सुरेन्द्र प्रताप सिंह को निर्देशित किया कि निर्धारित स्थान पर सुरक्षा हेतु बैरीकेटिंग का स्थान सुनिश्चित करके सभी निर्धारित स्थलों पर मजिस्टेटों की तैनाती की जाए।

मतगणना को शांतिपूर्ण सम्पन्न कराने हेतु पार्किंग स्थलों पर मजिस्ट्रेट हुए तैनात

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिला मजिस्टेज्ट/जिला निर्वाचन अधिकारी डा0 नितिन बंसल ने बताया है कि विधानसभा सामान्य निर्वाचन-2022 की मतगणना दिनांक 10 मार्च 2022 को कृषि उत्पादन राज्य मण्डी समिति महुली में सम्पन्न होगी। जिलाधिकारी ने मतगणना को सकुशल एवं शान्तिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराये जाने के उद्देश्य से मतगणना स्थल के वाह्य परिक्षेत्र में बैरियर/पार्किंग स्थलों पर मजिस्ट्रेटों को तैनात कर दिया है। उन्होने चिलबिला तिराहा पर बने ड्रॉप बैरियर पर प्रभारी मस्त्य पालन अधिकारी विकास सिंह, बैंक ऑफ बड़ौदा के सामने ड्रॉप बैरियर पर भूमि संरक्षण अधिकारी प्रथम डा0 रमेश चन्द्र, महुली नहर पर बने ड्रॉप बैरियर पर जिला सेवायोजन अधिकारी विजय बहादुर सिंह सेंगर, महुली बाजार तिराहा बैरियर पर भूमि संरक्षण अधिकारी द्वितीय विनोद कुमार, पार्किंग स्थल एफसीआई गोदाम पर उपायुक्त श्रम एवं रोजगार इन्द्रमणि तिवारी, महुली नहर के पास बाग में बने पार्किंग स्थल पर उपायुक्त उद्योग दिनेश कुमार चैरसिया, रेखा सदन मैरिज हाल पार्किंग स्थल (दो पहिया वाहन पार्किंग हेतु) पर डीसी एन0आर0एल0एम0 डा0 नागेन्द्र नारायण एवं श्री पैलेस मैरिज लॉन पार्किंग स्थल पर (प्रत्याशी/एजेण्ट के चार पहिया वाहन के पार्किंग हेतु) तहसीलदार (न्यायिक) सदर धीरेन्द्र कुमार को तैनात किया है। मतगणना के अवसर पर शांति व्यवस्था हेतु पर्याप्त पुलिस/पी0ए0सी0 आदि बलों को तैनात किया गया है।

मतगणना के दिन समस्त आबकारी दुकानें पूर्णतया रहेंगी बन्द

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देश के क्रम में विधानसभा सामान्य निर्वाचन-2022 की मतगणना का सकुशल, निष्पक्ष, शान्तिपूर्ण एवं पारदर्शी ढंग से सम्पन्न कराने के उद्देश्य से जिला मजिस्टेज्ट डा0 नितिन बंसल ने बताया है कि मतगणना के दिन दिनांक 10 मार्च 2022 को सम्पूर्ण दिवस में जनपद प्रतापगढ़ की समस्त आबकारी दुकानें (देशी मदिरा, विदेशी मदिरा, बीयर, मॉडल शॉप, बार, भांग एवं एफ0एल0 16/17 की फुटकर बिक्री की दुकानें तथा देशी शराब, विदेशी मदिरा एव बीयर के थोक दुकानें) पूर्णतया बन्द रहेंगी। इस अवधि में कोई भी व्यक्ति किसी भी प्रकार के मादक पदार्थों की मात्रा का न संचय करेगा, न ही वितरण करेगा और न ही लेकर चलेगा। उल्लंघन की स्थिति में अनुज्ञापियों/दोषी व्यक्तियों के विरूद्ध उ0प्र0 आबकारी अधिनियम 1910 एवं लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम के अन्तर्गत वैधानिक कार्यवाही की जायेगी।

अत्याचार के संहार के साथ धर्म का शंखनाद है कृष्णावतार : अनूपदेव

महेवा मलकिया में चल रही श्रीमद्भागवत कथा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। महेशगंज बाजार के समीप महेवा मलकिया गांव मे हो रही श्रीमद्भागवत कथा ज्ञानयज्ञ मे मंगलवार को आस्था की उमंग मे श्रद्धालु भावविभोर दिखे। कथाव्यास आचार्य अनूपदेव जी महराज ने कंस वध को अत्याचार और अनीति के संहार का बांके बिहारी के द्वारा संसार को सबसे बड़ा बोध ठहराया। उन्होनें कहा कि महामाया के रूप मे भगवान की लीला ने संसार को यह भी बताया कि बेटियां करूणा तथा अत्याचार के खिलाफ जरूरत पड़ने पर संहार के संदेश का भी शंखनाद किया करती हैं।

उन्होंने कहा कि कृष्णावतार की रीति व नीति हर सोपान पर धर्म के पथ को प्रशस्त करने की मयार्दा परिभाषित किया करती है। श्रीजगद्गुरू नृसिंह पीठाधीश्वर धाम से पधारे अनूपदेव जी महराज ने कहा कि श्रद्धा सदैव दर्पण के समान उज्वल हुआ करती है। उन्होंने कहा कि आस्था अनमोल है और भक्ति की निर्मलता ही भगवान की प्राप्ति का सबसे सुगम साधक के लिए साधन है। उन्होनें कहा कि भागवत का सार यही है कि इस कथा को आत्मसात करने वाले प्राणी को जीवन के उद्धार के लिए सदैव नैतिक जीवन निर्वहन का संवरण करना चाहिये। उन्होंने कहा कि भक्ति भक्त की उपासना के आधार पर प्रभु की कृपा का पुण्य सामने ले आया करती है। उन्होंने कहा कि भगवान को सर्वस्व अर्पित करने प्राणी को क्लेश व दुःख तथा चिन्ता कभी छू तक नही सकती। इसके पहले काशी धाम से पधारे राजगुरू आचार्य विष्णुपति त्रिपाठी एवं कुलगुरू पंडित कमलाकर राम त्रिपाठी के वैदिक मंत्रोच्चारण के मध्य भागवत भगवान का परम्परागत पूजन किया गया। कथा के संयोजक पं. जनार्दन प्रसाद त्रिपाठी व शकुंतला त्रिपाठी ने आचार्य अनूपदेव जी एवं पं. कमलाकर राम त्रिपाठी तथा आचार्य विष्णुपति त्रिपाठी का श्रीमंगल अभिषेक किया। कथा श्रवण के लिए पहुंचे बाबागंज विधायक विनोद सरोज, डा. सुरेश पाण्डेय, डा. राकेश पाण्डेय, अधिवक्ता हनुमान प्रसाद पाण्डेय, डा. संध्या पाण्डेय, हितेश सिंह पंकज, कुलदीप पटेल, मुन्ना तिवारी, राहुल सिंह, अनिल महेश आदि ने भी कथाव्यास को सम्मानित किया। सह संयोजक आलोक त्रिपाठी गुडडू, अधिवक्ता अरविंद त्रिपाठी पंकज, आनन्द त्रिपाठी ने श्रद्धालुओं को मंगल टीका लगाकर राधे-कृष्ण पट्टिका भेंट की।

जमीनी विवाद में युवक की हत्या कर शव आलू के खेत में फेंका

परिजनों ने गाँव के ही व्यक्ति पर लगाया हत्या का आरोप

युवक की मौत पर रोते-बिलखते परिजन।

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। सोमवार की शाम बाजार से घर जा रहे युवक की हत्या कर शव को आलू के खेत में फेंक दिया।सूचना पर पहुंचे परिजन आनन-फानन में अस्पताल ले गए जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। परिजनों ने गाँव के ही एक परिवार पर जमीनी विवाद को लेकर हत्या का आरोप लगाया है।पुलिस ने शव का पंचनामा करके पीएम के लिए भेज दिया।

स्थानीय कोतवाली क्षेत्र के सारीपुर ग्राम सभा के श्रीरामपुर निवासी शेर बहादुर पटेल (34) पुत्र रामदेव पटेल सोमवार को शाम रानीगंज कैथौला बाजार साइकिल से आया हुआ था। सायं लगभग सात बजे घर से लगभग पाँच सौ मीटर दूर लहूलुहान दशा में आलू के खेत में पड़ा हुआ था। क्षेत्रीय लोगों ने युवक की पहचान करने के बाद सूचना परिजनों को दी। मौके पर पहुंचे परिजनों ने युवक की सांस चलने की आहट से आनन-फानन में अस्पताल ले गए लेकिन वहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मौत की सूचना पर कोहराम मच गया। परिजनों के मुताबिक ग्राम सभा निवासी राजाराम के लड़कों ने जमीनी विवाद को लेकर उसकी हत्या की है। गाँव के ही नावल्द रामऔतार वर्मा के पास एक बीघा भूमि राजाराम वर्मा के घर के सामने थी। रामऔतार खेत में झोपड़ी बनाकर रहता था। खाना-पीना सब कुछ राजाराम के यहां से जाता था। कुछ वर्ष पहले रामऔतार व राजाराम के बीच बिगाड़ हो गया और वह शेर बहादुर पटेल के यहां रहने लगा था और उसी को जमीन बैनामा भी कर दिया। उसके कुछ वर्ष बाद रामऔतार की मौत हो गई।बस इसी बात को लेकर राजाराम कर्मा व शेर बहादुर पटेल के बीच विवाद का कारण बना था। राजाराम पहले पूरी जमीन चाहता था लेकिन बैनामा हो जाने के बाद वह कुछ हिस्सा जमीन की मांग शेर बहादुर से की थी लेकिन शेर बहादुर के इन्कार करने पर वर्षों पहले विवाद भी हुआ था। परिजनों के मुताबिक मृतक के सामने चेहरे पर व सिर के पीछे गंभीर चोटे थी जिस वजह से मौत हुई है। परिजनों की सूचना पर पहुँची पुलिस ने शव का पंचनामा कर पीएम के लिए भेज दिया। उधर पुलिस का कहना है कि पीएम के बाद परिजन जो तहरीर देंगे, मामला पंजीकृत करके कार्रवाई की जायेगी।

शहर के मोबाइल व्यवसायी का शव मिलने से सनसनी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर कोतवाली क्षेत्र के एक युवक व्यवसायी की प्रयागराज-अयोध्या मार्ग पर आज शव मिलने से सनसनी फैल गई। बताया जाता है कि नगर के अजीत नगर मोहल्ले का रहने वाले 25 वर्षीय सूरज केसरवानी की अजीत नगर में ही मोबाइल की दुकान है। वह 50 हजार रुपये लेकर मोबाइल का सामान खरीदने के लिये सोमवार को निकला था। देर शाम तक घर न लौटने पर खोजबीन शुरू हुई तो उसका मोबाइल बंद मिला। देर रात एक युवक घायलावस्था प्रयागराज-अयोध्या मार्ग पर शहर के पांच किमी दूर भुपियामऊ के पास सड़क किनारे पड़ा मिला। वहां लोगों के पहुंचने पर लोगों ने देखा कि वह गंभीर अवस्था में घायल है। उसे अस्पताल ले जाने से पहले ही उसकी सांसे थम गई। घटना की सूचना मिलने पर पुलिस ने व्यवसायी के शव का पंचनामा कर उसे पोस्टमार्टम के लिये भेज दिया है। इस सम्बन्ध में मृतक सूरज के सरवानी की पत्नी वंदना केसरवानी ने घटना की तहरीर नगर कोतवाली में दी है। पुलिस घटना की जांच में जुटी हुई है।

खबर संक्षेप

रेलवे लाइन के किनारे फिर मिली युवक की लाश

कौशांबी। सैनी कोतवाली क्षेत्र के सिराथू रेलवे स्टेशन के समीप फिर एक युवक की लाश मिली है युवक के शरीर से आधे कपड़े गायब हैं लाश मिलने की जानकारी मिलते ही मौके पर स्थानीय पुलिस और क्षेत्र की जनता पहुंच गई है काफी प्रयास के बाद भी युवक की शिनाख्त नहीं हो सकी है स्थानीय पुलिस ने युवक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मंगलवार की सुबह रेलवे लाइन के किनारे मिली युवक की लाश की उम्र लगभग 35 साल अनुमान लगाई जाती है युवक काली कलर की लोअर पहने है सिराथू जीआरपी पुलिस युवक की पहचान करने में जुटी है।

आग से झोपड़ी खाक

कौशाम्बी! सिराथू तहसील क्षेत्र के केशवापुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर उमेश कुमार गुटखा पान की दुकान में अचानक शॉर्ट सर्किट से आग लग गयी आग की घटना से उसकी दुकान की झोपड़ी जलकर खाक हो गयी एक मवेशी का बच्चा भी झुलस गया है! ग्रामीणों ने पानी डालकर आग पर काबू पाया लेकिन तब तक झोपड़ी जलकर नष्ट हो गई।

दुराचार अपहरण हत्या करने वाले दरिंदो को मृत्यु दंड की उठी मांग

चित्रकूट जनपद के मऊ थाना के अन्तर्गत किशोरी को अगवा कर बलात्कार व हत्या की घटना से आक्रोशित ब्राह्मण समाज ने किया आंदोलन

बालिका की निर्मम हत्या के बाद प्रदर्शन करते आक्रोशित ग्रामीण

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। चित्रकूट जनपद के मऊ थाना अंतर्गत बरहा कोटवा गांव में खेतों की ओर शौच क्रिया को गई एक किशोरी को अगवा करने के बाद उसके साथ बलात्कार किया गया है जब किशोरी ने बलात्कार का विरोध किया तो दरिंदों ने बड़ी बेरहमी से किशोरी की हत्या कर दी है किशोरी का अपहरण रेप के बाद हत्या की घटना की जानकारी मिलने के बाद ब्राह्मण एकता परिषद सहित क्षेत्र के लोग आक्रोशित हो उठे हैं और विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया है दुराचार अपहरण हत्या करने वाले लोगों को फांसी की सजा दिए जाने की मांग के साथ पीड़ित बालिका के परिजनों को सुरक्षा और मुआवजा दिए जाने की मांग आंदोलन कारी कर रहे हैं। कौशांबी थाना क्षेत्र के विजिया चौराहे पर एकत्रित सैकड़ों लोगों ने किशोरी के साथ हुई घटना की निंदा करते हुए चित्रकूट पुलिस को कटघरे में खड़ा किया है। आंदोलन करने वालों में ब्राह्मण एकता परिषद के जिला अध्यक्ष सौरभ त्रिपाठी अमित कुमार त्रिपाठी पूर्व प्रधान अंकित कुमार त्रिपाठी एडवोकेट अजय मिश्रा शशिकांत त्रिपाठी मनदीप अवस्थी श्रवण कुमार मिश्रा शिव बाबू पांडेय अरविंद कुमार नीतीश मिश्रा सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

दो बाइक 5 मोबाइल तमंचा के साथ पकड़े गए शातिर अपराधी

कोखराज कौशांबी। लगातार क्षेत्र में चोरी छिनैती की घटना में लिप्त गैंग के सदस्यों को कोखराज पुलिस टीम ने कल्यानपुर बाजार के तिराहे के पास से गिरफ्तार किया है पकड़े गए आरोपियों के कब्जे से पुलिस ने बिना नंबर प्लेट के दो बाइक 5 मोबाइल फोन तमंचा और कारतूस बरामद किया है किसी बड़ी घटना को अंजाम देने के फिराक में आरोपी लगे थे पुलिस ने लिखा पढ़ी कर तीनों शातिर आरोपियों को जेल भेज दिया है। कोखराज थाना पुलिस को मुखबिर से मुखबिर की सूचना पर कोखराज थाने के उपनिरीक्षक मोहम्मद जमीर भोला यादव अनुपम आशुतोष रंजन आदि पुलिस जनों ने आरोपियों की घेराबंदी कर तीनो आरोपियों को पकड़ लिया जब आरोपियों से कड़ाई से पुलिस ने पूछताछ की तो उन्होंने तमाम घटनाओं में शामिल होने की बात कबूली है। पुलिस के मुताबिक क्षेत्र के कल्यान पुर बाजार के पास तिराहे पर मोटरसाइकिल चोर मो शारिफ पुत्र शारिब वा अब्दुल माजिद पुत्र जाकिर वा अरबाज सिद्दीकी पुत्र मोबिन उर्फ मुब्बा के पास दो बाइक बिना नम्बर की साथ मे पांच मोबाइल वा 315 बोर का तमंचा कारतूस बरामद किया गया तीनों मुल्जिमों को लिखा पढ़ी कर जेल भेज दिया।

लूटव चोरी करने वाले गिरोह के तीन सदस्य गिरफ्तार

कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक हेमराज मीणा द्वारा लूट व चोरी के अभियोगों के अनावरण के सम्बन्ध में चलाए जा रहे अभियान के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक व क्षेत्राधिकारी सिराथू के निर्देशन व प्रभारी निरीक्षक के नेतृत्व में थाना कोखराज व एसओजी कौशाम्बी की संयुक्त टीम द्वारा मुखबिर की सूचना पर कल्यानपुर बाजार में चोरी व लूटी गयी मोटर साइकिल को बेचने के लिए योजना बनाते समय गिरफ्तार कर गिरफ्तार अभियुक्तों इरफान उर्फ अरबाज सिद्दकी पुत्र मोवीन अहमद उर्फ मुब्बा निवासी राजरूपपुर थाना धूमनगंज जनपद प्रयागराज स्थायी पता- मितवापुर थाना कोखराज व मो० शारिफ पुत्र मो० शाबिर निवासी मितवापुर थाना कोखराज अब्दुल माजिद पुत्र स्व0 मो० जाकिर निवासी मितवापुर थाना कोखराज के कब्जे से दो अदद मोटर साइकिल व जामा तलासी से पांच अदद मोबाइल व एक अदद तमचा 315 बोर व एक अदद जिन्दा कारतूस बरामद कर गिरफ्तारी व बरामदगी के सम्बन्ध में थाना स्थानीय पर पंजीकृत कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्तो को न्यायालय भेज दिया है।

न्यूज झरोखा

शांतिपूर्वक मनाएं होली का त्यौहार : कोखराज थानेदार

कोखराज कौशांबी। आगामी होली के त्यौहार की कुशलता को लेकर क्षेत्र के गणमान्य संभ्रांत लोगों की एक बैठक कोखराज थाने में मंगलवार की दोपहर सम्पन्न हुई है पीस कमेटी की बैठक में उपस्थित क्षेत्र के संभ्रांत गणमान्य लोगों से थानेदार गणेश प्रसाद ने कहा कि होली का त्यौहार और होलिका दहन परंपरागत तरीके से मनाया जाएगा नई व्यवस्था नहीं कायम की जाएंगी उन्होंने कहा कि शांति पूर्वक हर्ष उल्लास के साथ होली के त्योहार सभी लोग मनाए और त्यौहार का खुशियों का आनंद लें। उन्होंने उपस्थित लोगों से कहा कि होली के त्यौहार के दौरान अराजकता और खुशी के इस त्यौहार में खलल डालने का प्रयास करने वालों को चिन्हित करने में सहयोग करें उन्होंने साफ शब्दों में कहा है कि यदि होली के पर्व पर किसी में अराजकता या खलल डालने का प्रयास किया गया तो अराजक तत्वों पर कठोर कार्रवाई की जाएगी जिससे इलाके के लोग परंपरागत तरीके से शांतिपूर्वक अमन-चैन के साथ होलिका दहन करें और रंगो के इस पर्व की खुशियां मनाएं उन्होंने कहा कि बेवजह के विवाद से बचें और शराब पीकर सार्वजनिक स्थल पर उपद्रव करने वाले लोगो को थानेदार ने चेतावनी देते हुए सावधान रहने की नसीहत दी है।

एमएलसी प्रत्याशी कमल मिश्रा को प्रधान संघ ने किया समर्थन

कौशांबी। विधानसभा चुनाव के बाद एमएलसी का चुनाव होना तय है एमएलसी चुनाव के लिए कमल मिश्रा ने दावेदारी ठोकी है जिस पर प्रधान संघ ने उन्हें समर्थन की घोषणा की है प्रधान संघ के तत्वाधान में एमएलसी प्रत्याशी के समर्थन में कौशांबी ब्लॉक के विजिया चौराहे में एक बैठक प्रधान संघ के ब्लॉक अध्यक्ष शशिकांत त्रिपाठी के नेतृत्व में आयोजित की गई जिसमें ग्राम प्रधान वर्तमान बीडीसी सदस्य सहित क्षेत्र के तमाम लोग मौजूद रहे प्रधान संघ ने निर्णय लिया है कि एमएलसी पद पर कमल मिश्रा का समर्थन किया जाएगा। वक्ताओं ने कहा कि समाजवादी पार्टी से एमएलसी बासुदेव यादव चुनाव जीतकर गए थे लेकिन वह लापता हो गए हैं बीते 6 वर्षों से एमएलसी बासुदेव यादव का धरती आसमान कहीं पता नहीं चल रहा है उन्होंने कहा कि समाजवादी एमएलसी वासुदेव यादव ने क्षेत्र में कोई विकास कार्य नहीं किया है इसलिए एमएलसी प्रत्याशी बदले जाने की आवश्यकता है इस मौके पर पिंटू द्विवेदी अमित कुमार त्रिपाठी सौरभ मिश्रा अजय मिश्रा अमित कुमार मनदीप अवस्थी श्रवण मिश्रा अरविंद कुमार नीतीश कुमार शिव बाबू पांडेय अंकित त्रिपाठी एडवोकेट सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

एटीएम ग्राहक सावधान संदिग्धों का शुरू हुआ प्रवेश

कौशाम्बी। बैंक के एटीएम में हेलमेट पहन कर जाने पर पूरी तरह से रोक लगाई गई है लेकिन इस आदेश का कतई पालन होता नहीं दिख रहा है जिससे बैंक ग्राहक को सावधान रहने की जरूरत है संदिग्ध व्यक्तियों का बैंक एटीएम में प्रवेश होने लगा है और हेलमेट लगाकर संदिग्ध चेहरे को ढक लेते हैं जिससे पहचान कराना मुश्किल होगा लेकिन बैंक के एटीएम में मौजूद गार्ड हेलमेट पहनकर एटीएम में जाने वाले संदिग्ध लोगों को नहीं रोक पाते हैं जिससे अपराधिक घटनाएं आए दिन घट रही है आखिर हेलमेट पहनकर जाने वाले पर रोक लगाए जाने के आदेश के बावजूद पालन न किए जाने वालों पर बैंक अधिकारियों ने भी सीसीटीवी के फुटेज निकालकर मुकदमे दर्ज कराने का प्रयास नहीं किया है जिससे बैंक ग्राहक सुरक्षित नहीं है और कभी भी पेशेवर अपराधियों द्वारा बड़ी घटनाओं को अंजाम दिया जा सकता है सोमवार को पंजाब नेशनल बैंक मंझनपुर शाखा में एटीएम में फिर एक संदिग्ध व्यक्ति हेलमेट लगाकर एटीएम के अंदर पहुंचा है जिसका पुख्ता प्रमाण सीसीटीवी कैमरे में कैद है लेकिन उसके बाद भी हेलमेट पहनकर जाने वालों पर रोक लगाने के लिए पंजाब नेशनल बैंक के प्रबंधक ने कदम नहीं बढ़ाए हैं।

अधूरे गोआश्रय स्थल के निर्माण पर निकल गया पूरा भुगतान

देवखरपुर ग्राम प्रधान ग्राम पंचायत सचिव एडीओ पंचायत की भूमिका सवालों के घेरे में

अखंड भारत संदेश

निमार्णाधीन गो आश्रय गृह का दृश्य

मानक विहीन बन रहे गोआश्रय गृह का दृश्य

कौशांबी। सिराथू तहसील क्षेत्र के विकासखंड सिराथू के अंतर्गत आने वाले ग्राम पंचायतों में भ्रष्टाचार चरम पर ब्याप्त है कार्ययोजना बनाकर सरकारी खजाने से रकम निकाली जा रही है लेकिन मौके पर कार्य योजना की पूर्ति नहीं हो पा रही है फिर भी शासन को कार्य योजना पूर्ति की रिपोर्ट जिम्मेदार अधिकारियों द्वारा भेज दी जा रही है ताजा मामला सिराथू विकासखंड क्षेत्र के देव-खर पुर ग्राम पंचायत का सामने आया है देवघर पुर ग्राम पंचायत में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के अंतर्गत देवखरपुर गांव में गौ संरक्षण केंद्र के निर्माण कराए जाने की स्वीकृति के बाद आधा अधूरा निर्माण कार्य कराया गया है घटिया क्वालिटी का तीसरे दर्जे के ईट का उपयोग गो आश्रय स्थल के निर्माण में प्रयोग किया गया है सब कुछ अंधेरगर्दी अधिकारियों की देखरेख में हो रहा है सूत्र बताते हैं कि अधूरे निर्माण पर गो आश्रय स्थल के निर्माण पर पूरा भुगतान खजाने से निकल गया है आखिर धांधली करने वाले ग्राम पंचायत सचिव और ग्राम प्रधान के कारनामों पर एडीओ पंचायत और खंड विकास अधिकारी ने क्यों चुप्पी साध रखी है सूत्रों की माने तो विकासखंड स्तर पर बड़ी कमीशन खोरी होती है जिससे अधिकारी भी चुप्पी साध लेते हैं ग्रामीणों ने गोआश्रय स्थल देवखरपुर के निर्माण में हुए घोटाले के मामले में आला अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट कराते हुए जांच कराए जाने और दोषियों को दंडित किए जाने की मांग की है।

दलित के घर आधी रात को घुसकर दबंगों ने किया हमला कई लहूलुहान

हमले के पूर्व पड़ोसियों के घर को दबंगों ने किया बाहर से बंद, तहरीर देने के बाद खबर लिखे जाने तक नहीं दर्ज हो सका था मामला गांव में व्याप्त है तनाव

कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के गिरसा गांव में दो परिवारों में जंग छिड़ गई। मामले में दबंगों ने दलित के घर में घुसकर पूरे कुनबे को पीट दिया घायल पीड़ित परिवार ने डायल 112 पर फोन कर किसी तरह अपनी जान बचाई। पीड़ित परिवार जिला अस्पताल में अपना इलाज करा रहा है। मामले में पीड़िता बाली की पत्नी पार्वती देवी ने थाने में लिखित तहरीर दे दिया है। लेकिन खबर लिखे जाने तक मामले में मुकदमा नहीं दर्ज हो सका रंजिश को लेकर रविवार की रात दबंगों ने दलितों पर हमला किया है। शिकायती पत्र के मुताबिक कोखराज थाना क्षेत्र के गिरसा गांव निवासी पाताली की पत्नी पार्वती देवी ने थाना पुलिस को तहरीर देते हुए बताया कि रविवार की देर रात पुरानी रंजिश को लेकर दबंगों ने उसके घर पर हमला कर दिया। जिसके चलते उसके बेटे गोलू, पुत्री पूजा पुत्र मानसिंह और पति पाताली लाल को काफी चोटें आई हैं। यही नहीं बीच-बचाव करने के चक्कर में पड़ोसी मोहन लाल के पुत्र मनोज कुमार गंभीर रूप से घायल हो गए। पीड़िता ने बताया कि सभी लोगों उसके परिवार पर बुरी तरह से अत्याचार किए और उन्हें जान से मारने की धमकी दी। दबंगों ने कहा कि सालों रुक जाओ इसके बाद तुम्हें गांव में रहने भी नही देंगे और तुम्हें तुम्हारी औकात बता देंगे। यही नहीं पीडिता ने बताया कि यदि वह मुकदमा लिखाने गई तो उनके पूरे परिवार को खत्म कर दिया जाएगा। पीड़िता ने बताया कि दबंगों ने उनके घर में घुसने और मारपीट करने से पहले पड़ोसियों के दरवाजे भी बंद कर दिए थे जिससे कोई उनकी सहायता न कर सके। घटना के बाद से परिवार भारी दहशत में वही गांव में इस घटना को लेकर अनुसूचित जाति के लोगों में आक्रोश है। खबर लिखे जाने तक कोखराज पुलिस ने मामले में रिपोर्ट नहीं दर्ज की थी।

मतगणना कार्मिकों को दिया गया द्वितीय प्रशिक्षण

कौशाम्बी। विधानसभा सामान्य निर्वाचन-2022 को सकुशल सम्पन्न कराये जाने हेतु सम्राट उदयन सभागार में पोस्टल बैलेट मतगणना कार्मिकों को द्वितीय प्रशिक्षण दिया गया जिला निर्वाचन अधिकारी सुजीत कुमार ने पोस्टल बैलेट मतगणना के सम्बन्ध में कार्मिकों को विस्तृत जानकारी देते हुए भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी दिशा-निदेर्शों का अक्षरशः अनुपालन सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। उन्होने कहा कि मतगणना कार्मिक किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरतें इस अवसर पर सभी उप जिलाधिकारीगण प्रखर उत्तम विनय कुमार गुप्ता एवं राजेश श्रीवास्तव सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहें।

तमंचा कारतस के साथ अभियक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना कौशाम्बी पुलिस बल द्वारा अभियुक्त सलमान पुत्र मासूक निवासी मितवापुर थाना कोखराज को एक अदद तमंचा 12 बोर व एक अदद जिन्दा कारतूस 12 बोर व शकील अहमद पुत्र एकलाख निवासी सैयद सरावां थाना चरवा को एक अदद तमचा 315 बोर व तीन अदद जिन्दा कारतूस 315 बोर के साथ गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

कोरोना संक्रमण के दृष्टिगत की गई कार्यवाही

कौशाम्बी। जनपद मे लाकडाउन के दृष्टिगत सरकार द्वारा निर्गत निदेर्शों के अनुपालन के क्रम में पुलिस अधीक्षक के निदेर्शानुसार जनपद स्तर पर विभिन्न थानों द्वारा अनावश्यक रूप से बाहर घूमने मास्क न लगाने एवं सोशल डिस्टेंसिंग का पालन न करने वालों के विरुद्ध सघन चेकिंग की गई एंव चेकिंग के दौरान दो पहिया व चार पहिया वाहनों को चेक किया गया, जिनमें 90 वाहनों का ई चालान किया गया एवं 01 वाहन का चालान कर 500 रुपए सम्मन शुल्क वसूला गया।

गांजा के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना सराय अकिल पुलिस बल द्वारा अभियुक्त पंकज कुमार जायसवाल उर्फ झुल्लर पुत्र सुन्दर लाल जायसवाल निवासी कटरा कस्ब व थाना सराय अकिल को संजीवनी हास्पिटल के पास से 20 पुडिया स्मैक (लगभग 7.1 ग्राम) के साथ गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

राजनैतिक सामाजिक व्यापारिक क्षेत्र में मजबूती के साथ महिलाओं ने स्थापित किया बर्चस्व : विधायक संजय

अखंड भारत संदेश

केपीएस कैंपस में उपस्थित महिलाए एंव विधायक संजय गुप्ता

कौशाम्बी। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर केपीएस कैंपस सभागार भरवारी में महिलाओं के सम्मान में समारोह आयोजित हुआ जिसमे सभी महिलाएं टीचर्स को सम्मनित करते हुए विद्यालय के चेयरमैन व विधायक चायल संजय कुमार गुप्ता ने महिलाओं के सम्मान में अपने विचार रखते हुए कहा कि बिना महिलाओं के संसार में कल्पना ही नही की जा सकती आज महिलाएं राजनैतिक क्षेत्र, सामाजिक क्षेत्र व व्यापारिक क्षेत्र में बड़ी मजबूती के साथ अपने वर्चस्व को स्थापित किया है आज महिलाओं ने अपनी योग्यता के दम पर साबित किया है यदि महिलाओं को अवसर प्रदान हो तो किसी भी क्षेत्र में परचम फहराने की छमता रखती है कार्यक्रम की संयोजिका कालेज की प्रिंकपल श्रीमती सीमा पवार ने टीचर्स को अंग वस्त्रम से सम्मानित करते हुए सभी के प्रति आभार प्रकट किया कार्यक्रम में मुख्य रूप से मैनेजमेंट कमेटी के सदस्य ओमकृण पांडेय फाउंडर मास्टर देव बाबू गुप्ता सहित प्रिंसीपल किड्जी, प्रिंसीपल रिद्धि सिद्धि, प्रिंसीपल एनडी उपस्थित रहे।

एक स्थाई और समान कल के लिए समाज में लैंगिक समानता जरूरी : प्राचार्य

कौशाम्बी। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान मंझनपुर कौशांबी के सभागार में उप शिक्षा निदेशक प्राचार्य अनिल कुमार की अध्यक्षता में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया' डायट प्राचार्य कौशांबी ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की थीम "जेंडर इक्वलिटी टुडे फॉर ए सस्टेनेबल टूमारो "पर अपने विचार रखते हुए कहा कि एक स्थाई और समान कल के लिए समाज में लैंगिक समानता जरूरी है। महिलाओं को सम्मान, सुरक्षा, स्वतंत्रता प्राप्त होना आवश्यक है। महिलाओं को अपने दायित्व निर्वहन के साथ ही अधिकार के लिए भी जागरूक होना होगा इस अवसर पर वरिष्ठ प्रवक्ता भारती त्रिपाठी ने कहा कि स्त्री ने विभिन्न स्वरूपों में मां,बहन,भाभी, बुआ, मौसी आदि के कर्तव्यों के निर्वहन को निभाते हुए समाज में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है साथ ही महिलाओं के लिए बनाए गए विभिन्न कानूनों, नियमों को विस्तार पूर्वक बताया।। आज महिलाएं सभी क्षेत्रों में अपना योगदान दिया है। वरिष्ठ प्रवक्ता विपुल सागर ब रिफत मालिक तथा प्रभारी वरिष्ठ प्रवक्ता अनिरुद्ध श्रीवास्तव व प्रवक्ता सुरेश चंद्र मिश्रा ने अपने विचार व्यक्त किया। इस अवसर पर कौशलेंद्र मिश्र डॉ देवेश सिंह यादव,डॉ० देवेंद्र कुमार मिश्र,धीरज कुमार,सुरेश चंद्र मिश्र, राजेंद्र भारती,विपिन कुमार, अशोक कुमारसिंह , एवम् राजेन्द्र मिश्र सहित समस्त डायट स्टॉफ उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम का संचालन डॉ. अरमा देवी एवम् धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अनामिका सिंह ने किया।

भाजपा नेता के घर के बाहर चस्पा किया धमकी भरा पत्र

कौशांबी। विधानसभा चुनाव के एग्जिट पोल दिखाए जाने के बाद विरोध की ज्वालाए धड़कने लगी हैं और बदले की भावना से लोग एक दूसरे पर दबाव बनाने लगे हैं बीती रात चरवा थाना क्षेत्र में भाजपा नेता के घर के बाहर दीवाल में धमकी भरा पत्र चस्पा किया गया है जिससे राजनैतिक क्षेत्र में हलचल मच गई है। चरवा थाना क्षेत्र के धमसेड़ा गांव निवासी वेद प्रकाश केसरवानी भारतीय जनता पार्टी के बूथ नंबर 203 के बूथ अध्यक्ष हैं मतदान के समय उन्होंने धमसेड़ा गांव के बूथ नम्बर 203 के बाहर भारतीय जनता पार्टी का बस्ता लगाया था जिससे अन्य दल के लोग उनसे रंजिश रखते हैं बीती रात्रि भाजपा नेता के घर की दीवार गिरा दी गई है और उनके घर पर धमकी भरा पत्र चस्पा कर दिया गया है जिससे भाजपा नेता भयभीत हैं बताते चलें कि बीते वर्ष होली के समय भी दबंगों ने उनके घर के दो चबूतरे तोड़ दिए गए थे लेकिन इस मामले में भी दबंगों के विरुद्ध कुछ नहीं हुआ है जिससे दबंगों के हौसले बुलंद हैं आए दिन भाजपा नेता के साथ जुल्म ज्यादती अत्याचार दबंग करते हैं भाजपा नेता का कहना है कि दबंगों ने पत्र चस्पा करने के बाद धमकी दिया है कि यदि कही शिकायत करोगे तो तुम्हें गोली मार देंगे जिससे भाजपा नेता और उनका परिवार दहशत में है।

आइटीबीपी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत

कौशाम्बी। विधानसभा मतगणना ड्यूटी हेतु जनपद कौशांबी में आइटीबीपी के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का आगमन हुआ है आइटीबीपी के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के आगमन के दौरान आइटीबीपी के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत प्रभारी निरीक्षक मंझनपुर विनोद कुमार सिंह द्वारा पुष्प मालाएं मिष्ठान जलपान भेंट कर स्वागत किया गया एवं सकुशल मतगणना कराए जाने हेतु मंगल कामना की गई।

महिला अपराध एवं बाल अपराध के सम्बंध में चलाया जागरूकता अभियान

जागरूकता अभियान कार्यक्रम में उपस्थित छात्राए

कौशाम्बी। महामाया राजकीय महाविद्यालय का राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय विशेष शिविर के पांचवें दिन का शुभारंभ प्राथमिक विद्यालय यूसुफपुररारा में प्रार्थना ,योगा एवं से हुआ इसके उपरांत शिविरार्थियो ने उत्तर प्रदेश में महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा, सम्मान एवं स्वावलंबन के लिए एक व्यापक कार्य योजना का क्रियान्वन एवम महिला अपराध एवं बाल अपराध के सम्बंध में जागरूकता अभियान चलाया गया । मिशन शक्ति हेतु महिला रोजगार एवं सुरक्षा के उद्देश्य को पूरा करने हेतु जन जागरूकता रैली राजनाथ राम जिला प्रोबेशन अधिकारी , कौशांबी के नेतृत्व में निकाली गई। राजनाथ राम द्वारा हरी झंडी दिखाकर जन जागरूकता रैली को रवाना किया गया।

विकास कुमार ने मिशन शक्ति हेतु महिला रोजगार एवं सुरक्षा पर भाषण के माध्यम से शिविरार्थियों एवं गांव वासियों को जागरूक किया । अमृतलाल , अभिषेक कुमार एवं सोनाली चौरसिया ने मिशन शक्ति हेतु महिला रोजगार एवं सुरक्षा पर गीत के माध्यम से जागरूक किया गांव में मानसी केसरवानी, मोहनी केसरवानी, साधना चौरसिया ,अवंतिका ,आयुषी, सोनाली वर्मा, विभा पांडे , आदि ने मिशन शक्ति हेतु महिला रोजगार एवं सुरक्षा के विषय पर सचित्र नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया। संध्याकालीन आयोजित बौद्धिक सत्र का विषय मिशन शक्ति हेतु महिला रोजगार एवं सुरक्षा था। इस बौद्धिक सत्र के मुख्य अतिथि राजनाथ राम जिला प्रोबेशन अधिकारी , कौशांबी एवं विशिष्ट अतिथि श्रीमती अंजू द्विवेदी महिला अधिकारी नारी शक्ति केंद्र कौशांबी ।डॉ0 रीता दयाल ,असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं डॉ0 पवन कुमार , असिस्टेंट प्रोफेसर भूगोल ,मुख्य वक्ता हेतु आमंत्रित किया गया थाराजनाथ राम महिलाओं एवं बेटियों की सुरक्षा एव सम्मान की शुरूआत घर से होने पर जोर देते हुए राजनाथ राम ने कहा कि बेटा-बेटी में कोई भेद नहीं है, कोख में बेटियों की हत्या और बाल-विवाह की सार्वजनिक रूप से निंदा होनी चहिए तथा बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना, मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना जैसे प्रयासों के माध्यम से केंद्र व राज्य सरकार मजबूती पूर्वक प्रयासरत है। अंजू द्विवेदी ने इस अवसर पर कहा कि यूपी सरकार के मिशन शक्ति अभियान का उद्देश्य महिलाओं और लड़कियों को जागरूक करना है। इसके अलावा महिलाओं के प्रति हिंसा करने वाले लोगों की पहचान उजागर करना और महिलाओं को राज्य में सुरक्षित महसूस कराना है। मिशन के अंतर्गत महिलाओं और बच्चों से संबंधित मुद्दों पर जागरूक करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है डॉ0 रीता दयाल ने कहा कि उत्तर प्रदेश की बेटियां और महिलाएं लघु कुटीर उद्योग से जुड़कर अपनी जैसी तमाम दूसरी महिलाओं की जिंदगी को संवार रही है। हैंडीक्राफ्ट, जूट, परिधानों का कार्य कर महिलाएं आत्मनिर्भर बन रहीं हैं। इसके साथ ही दूसरों के लिए रोजगार का माध्यम भी बन रही हैं। डॉ0 पवन कुमार ने कहा किमिशन शक्ति अभियान के दौरान आपातकालीन सेवा 112 यूपीह्व एक मिशन की तरह महिलाओं में शक्ति का अहसास बढ़ा रहा है। खासतौर से विमिन पॉवर लाइन ह्व1090 व 181 सेवा के 112 यूपी से एकीकरणह्व के बाद महिलाओं को एक ही छत के नीचे सुरक्षा, सम्मान और स्वांवलंबन से जुड़ी सेवाएं एक साथ मिल रही हैं ब्रह्मजीत, अमृतलाल ,बाबूलाल ,राहुल ,विकास कुमार, राजेश कुमार आदि शिविरार्थी गीत के माध्यम से ग्रामीणों को जागरूक किया। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय से डॉ0 नीलम बाजपेई ,डॉ0 रीता दयाल ,डॉ0 भावना केसरवानी, डॉ0 संतोष कुमार ,डॉ0 अमित कुमार शुक्ल,आदि उपस्थित रहे कार्यक्रम अधिकारी अनिल कुमार ने सभी अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए किया गया प्रेरित

कौशांबी। महिला दिवस के अवसर पर जनपद मुख्यालय मंझनपुर के तमन्ना गेस्ट हाउस में महिला उत्थान एवं जागृति संस्थान द्वारा एक कार्यक्रम आयोजित किया गया जहां महिलाओं को माल्यार्पण कर उनका स्वागत किया गया है इस मौके पर महिला उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाने पर जोर दिया गया और कहा गया कि महिलाएं जागरूक बने और आत्मनिर्भर बन कर अपने जीवन को मजबूत करें इस मौके पर वक्ताओं ने कहा कि महिलाओं को एनजीओ के माध्यम से रोजगार उपलब्ध कराया जाएगा ग्रामीण महिलाओं को रोजगार उपलब्ध कराने में विशेष प्रोत्साहन दिया जाएगा इस मौके पर महिला थाना अध्यक्ष सुशीला त्रिपाठी महिला उत्थान जागृति संस्थान की राष्ट्रीय अध्यक्ष अंजना मिश्रा निधि त्रिपाठी हाईकोर्ट के वरिष्ठ शासकीय अधिवक्ता रघुनंदन सिंह अधिवक्ता निशा त्रिपाठी एडवोकेट हाईकोर्ट लीना अवस्थी अलका त्रिपाठी अनिशुल निशा डॉक्टर छवि जौहरी नेहा अग्रहरि जय लता त्रिपाठी रेखा गुप्ता अंजू लता संगीता देवी प्रार्थना त्रिपाठी मनोरमा गुप्ता उर्मिला देवी अन्नू संजना देवी कृष्णा देवी सीमा देवी सहित ग्राम प्रधान वीरेंद्र चौरसिया लीना अवस्थी सहित तमाम महिलाएं क्षेत्र के गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

संपादकीय

युद्ध मैदान में तिरंगे की अहमियत

केंद्र सरकार ने आपदा प्रबंधन की एकबार फिर मिसाल कायम की है। यूक्रेन संकट के दृष्टिगत उसके ऑपरेशन गंगा की दुनिया में सराहना हो रही है। इसके जरिये यूक्रेन से भारतीयों की सुरक्षित घर वापसी सुनिश्चित की गई है। वैसे नरेन्द्र मोदी के प्रत्येक कदम विपक्ष के निशाने पर रहते हैं। कई बार तो बिना किसी तर्कसंगत आधार पर उनका विरोध किया जाता है। सरकार के बेहतर कार्यों का समर्थन करने की उम्मीद वर्तमान विपक्ष से नहीं की जा सकती। भारतीय राजनीति में पहले ऐसे प्रकरण दिखाई देते थे। अब इनकी कल्पना भी मुश्किल है। बेशक सराहना ना हो, लेकिन कतिपय प्रसंगों पर चुप तो रहा जा सकता है। सरकार से संबंधित प्रत्येक विषय पर आंख मूंदकर हमला बोलने से विपक्ष की प्रतिष्ठा नहीं बढ़ती है। ऐसा करने का उसे कोई राजनीतिक लाभ भी नहीं मिलता है। किंतु नरेन्द्र मोदी को मुख्यमंत्री से लेकर प्रधानमंत्री बनने तक ऐसा विपक्ष नहीं मिला। नरेन्द्र मोदी के कार्य ही नहीं प्रत्येक बयान पर भी तत्काल निशाना लगाने वाले बेशुमार नेता हैं। उत्तर प्रदेश के एक प्रमुख विपक्षी नेता ने मोदी द्वारा चुनाव में यूक्रेन का नाम लेने पर हमला बोला। जबकि यूक्रेन में उत्तर प्रदेश सहित देश के अनेक नागरिक फंसे हुए हैं। उन्हें सुरक्षित निकालने के लिए सरकार लगातार हर तरह का प्रयास कर रही है। देश के प्रधानमंत्री जब जनसभा में इसका उल्लेख करते हैं, तब ऐसे लोगों को राहत मिलती है, जिनके परिजन वहां हैं। यह अच्छा है कि नरेंद्र मोदी ऐसे लोगों की भावनाओं को समझते हैं। उन्होंने गरीबों की भावनाओं को भी इसी प्रकार महसूस किया था। इसके चलते आवास, शौचालय, उज्ज्वला, आयुष्मान जैसी अनेक योजनाएं बनाई गई। देश के करोड़ों गरीबों के जीवन में बड़ा बदलाव हुआ है। वर्तमान केंद्र व उत्तर प्रदेश सरकार ने इस दिशा में तीव्र गति की मिसाल कायम की। कुछ ही वर्षों में प्रगति के कीर्तिमान स्थापित हो गए। पिछली सरकारें बहुत पीछे रह गई। यूक्रेन प्रसंग को भी इसी रूप में देखने की आवश्यकता थी। नरेन्द्र मोदी ने यूक्रेन से अपने नागरिकों को निकालने के लिए अभियान शुरू करने का निर्देश दिया। युद्ध के बीच यूक्रेन में फंसे भारतीयों की सुरक्षित वापसी सरकार की प्राथमिकता है। भारतीय वायुसेना के कई परिवहन विमान ऑपरेशन गंगा के अंतर्गत लगाए गए। युद्धग्रस्त यूक्रेन से अबतक आठ फ्लाइट से डेढ़ हजार से अधिक भारतीयों को रेस्क्यू किया जा चुका है। ऑपरेशन गंगा में यूक्रेन से सटे देशों रोमानिया एवं हंगरी के रास्ते अपने नागरिकों को निकालना शुरू किया गया। ऑपरेशन के तहत अन्य भारतीय नागरिकों और छात्रों को वापस लाए जाने की अभियान जारी है। भारतीयों को एयरलिफ्ट करने के लिए अब स्पाइसजेट, इंडिगो और एयर इंडिया एक्सप्रेस जैसी अन्य निजी एयरलाइंस ने भी अपने विमान भेजे हैं। भारतीय नागरिकों की निकासी के चल रहे प्रयासों को बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री ने भारतीय वायुसेना का भी इस ऑपरेशन से जुड़ने का निर्देश दिया था। वायुसेना के हवाई जहाजों के जुड़ने से भारतीयों के लौटने की प्रक्रिया तेज हुई है। अफगानिस्तान में तालिबानी कब्जे के बाद भी भारतीय वायुसेना ऑपरेशन देवी शक्ति शुरू किया था। तब दोहा, ताजिकिस्तान और काबुल के रास्ते भारतीयों की सुरक्षित वापसी सुनिश्चित हुई थी। प्रधानमंत्री ने ऑपरेशन गंगा के तहत चल रहे प्रयासों की समीक्षा करने के लिए दो उच्चस्तरीय बैठकों की अध्यक्षता की।

पूर्वानुमानों में भाजपा को बढ़त

प्रमोद भार्गव

चुनाव सर्वेक्षणों के प्रसारण व प्रकाशन पर रोक लगाई जाने की मांग भी उठ रही है। ओपिनियन पोल मतदाता को गुमराह कर निष्पक्ष चुनाव में बाधा बन रहे हैं। वैसे भी ये सर्वेक्षण वैज्ञानिक नहीं हैं, क्योंकि इनमें पारदर्शिता की कमी है और ये किसी नियम से बंधे नहीं हैं। साथ ही ये सर्वे, कंपनियों को धन देकर कराए जा सकते हैं। बावजूद इन्हें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के बहाने ढोया जा रहा है। जबकि ये पेड न्यूज की तर्ज पर पेड ओपोनियन पोल में बदल गए हैं। इसीलिए इनके परिणाम भरोसे के तकाजे पर खरे नहीं उतरते। सर्वे कराने वाली एजेंसियां भी स्वायत्त होने के साथ जवाबदेही के बंधन से मुक्त हैं। इसलिए इन पर भरोसा किस आधार पर किया जाए ?

पांच राज्यों में मतदान के बाद समाचार चैनलों ने एग्जिट पोल यानी निकटता के करीब पहुंचने वाले नतीजों ने भाजपा की तीन राज्यों और आम आदमी पार्टी की पंजाब में जीत निश्चित कर दी है। वहीं कांग्रेस और समाजवादी पार्टी की उम्मीदों पर पानी फेर दिया है। उत्तर प्रदेश तीन दशक पुरानी राजनीतिक परंपरा को तोड़ता दिख रहा है। यहां दूसरी बार बंपर बहुमत से भाजपा सत्ता में वापसी कर रही है। वहीं, पंजाब में सत्तारूढ़ कांग्रेस व अन्य दलों की उम्मीदों पर झाड़ू फेरते हुए आम आदमी पार्टी सत्ता के सिंहासन पर सवार होती दिख रही है। यदि ऐसा होता है तो भविष्य में आम आदमी पार्टी तेजी से अन्य राज्यों में वर्चस्व जमाती दिखेगी, जिसका नुकसान कांग्रेस को होगा। उत्तराखंड में भाजपा और कांग्रेस में बराबरी के मुकाबले का अनुमान है। अंततः भाजपा फिर से सरकार बना लेगी। मणिपुर में पूर्ण बहुमत से भाजपा की जीत लगभग तय है। दरअसल केंद्र में जबसे नरेंद्र मोदी की सरकार है, अलग-थलग पड़े पूर्वोत्तर का शेष भारत में विकास के साथ-साथ तेजी से समावेश हो रहा है। नतीजतन पूर्वोत्तर के सातों राज्यों में भाजपा प्रभावशाली होती जा रही है। गोवा में त्रिशंकु नतीजे का अनुमान है, ऐसे में सरकार बनाने के लिए जोड़-तोड़ हो सकती है। इन चुनावों में सबसे महत्वपूर्ण उत्तर-प्रदेश है क्योंकि यहीं से दिल्ली का रास्ता निकलता है। इसलिए मतदान के पहले अंतिम दो दिन नरेन्द्र मोदी को वाराणसी में डेरा डालना पड़ा था। यह राज्य आबादी में सबसे बड़ा होने के साथ 80 लोकसभा सदस्य भी देता है। बीते दिनों इस राज्य में लंबे समय तक चले किसान आंदोलन ने कुछ ऐसे हालात पैदा कर दिए थे, जिससे यह लग रहा था कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की कुर्सी डवांडोल है। पंजाब व हरियाणा में चले किसान आंदोलन का भी इस राज्य के मतदाताओं पर असर दिखाई दे रहा है। लेकिन लगभग सभी चैनलों एवं सर्वेक्षण एजेंसियों ने भाजपा को 250 सीटें दी हैं। कुछ प्रतिष्ठित चैनलों ने 326 तक सीटें भाजपा की झोली में डाली है। फिलहाल भाजपा जीत दोहराती है तो यह इतिहास रचने जैसी बात होगी, क्योंकि यहां करीब तीन दशकों से किसी भी सत्तारूढ़ दल की वापसी नहीं हुई है। भाजपा को इतनी सीटें मिलने का अनुमान इसलिए भी थोड़ा

आश्चर्यजनक लगता है, क्योंकि 2017 की तुलना में सभी सातों चरणों में मतदान का प्रतिशत कम रहा है। मतदान का कम होना अकसर सत्तारूढ़ पार्टी के विरुद्ध माना जाता है। अतएव भाजपा लौटती है तो साफ है कि किसानों में जाट-सिख या यादवों ने अखिलेश यादव और प्रियंका गांधी के नेतृत्व को स्वीकार नहीं किया। साथ ही सपा में मुस्लिमों के प्रभाव के चलते भी हिंदू मतदाताओं का रूख भाजपा के पक्ष में रहा है। अयोध्या में राममंदिर और वाराणसी के काशी विश्वनाथ मंदिर के कायाकल्प ने भी हिंदू मतदाताओं का जबरदस्त ध्रुवीकरण किया है। ठोस कानून व्यवस्था ने महिलाओं को खासतौर से भयमुक्त रखा इसलिए उनका झुकाव व विश्वास योगी के प्रति रहा। यदि वाकई भाजपा 300 के पार सीटें लाने में कामयाब होती है तो यह मानने के लिए विवश होना पड़ेगा कि मतदाता लोक-लुभावन वादों के रूप में दी जाने वाली घूस के लालच में भी नहीं आया। इन पूर्वानुमानों ने भाजपा और आप को छोड़ अन्य दलों के रणनीतिकारों के पसीने छुड़ा दिए हैं। कांग्रेस, सपा और अकाली दल के प्रमुखों के माथे पर चिंता की लकीरें एकाएक गहरा गई हैं। हालांकि ये लोग इन अनुमानों को अपने-अपने ढंग से परिभाषित करते हुए गलत ठहरा रहे हैं। दरअसल पंजाब में आप को 40 प्रतिशत मत और 100 सीटें मिलती दिखाई हैं। जबकि 2017 के पंजाब विधानसभा चुनाव में पुवार्नुमानों के आंकड़े वास्तविक चुनाव नतीजों के करीब भी नहीं थे। इसलिए अनुमानों पर प्रश्नचिह्न लगाए जा रहे हैं। बावजूद इस मर्तबा पंजाब में अनुमान इसलिए सटीक बैठ सकते हैं, क्योंकि वहां केंद्रीय नेतृत्व की निरंतर गलतियों के चलते कांग्रेस अंतरकलह का शिकार होकर लगभग चौपट हो गई है। ऐसे में आप ने मुख्यमंत्री के रूप में भगवंत सिंह मान का चेहरा देकर बाजी मार लेने की चाल चली है, जो कामयाब होती दिख रही है। फिलहाल हमारे देश में चुनाव पूर्व जनमत सर्वेक्षण एक नया विषय है। यह सेफोलॉजी मसलन जनमत सर्वेक्षण विज्ञान के अंतर्गत आता है। भारत के गिने-चुने विश्वविद्यालयों में राजनीति विज्ञान के पाठ्यक्रम के तहत सेफोलॉजी को पढ़ाने की शुरूआत हुई है। जाहिर है, विषय और इसके विशेषज्ञ अभी अपरिपक्व अवस्था में हैं। सर्वेक्षणों पर शक की सुई इसलिए भी जा ठहरती है कि पिछले कुछ सालों में निर्वाचन-पूर्व सर्वेक्षणों की बाढ़-सी आई हुई है। इनमें तमाम कंपनियां ऐसी हैं, जो धन लेकर सर्वे करती हैं, नतीजतन परिणाम सटीक नहीं निकलते हैं।

वैसे भी किसी भी प्रदेश के करोड़ों मतदाताओं की मंशा का आकलन महज कुछ हजार मतदाताओं की राय लेकर सटीक नहीं किया जा सकता। कभी-कभी ये अटकलें संयोगवश ठीक बैठ जाती हैं।

इसलिए चुनाव सर्वेक्षणों के प्रसारण व प्रकाशन पर रोक लगाई जाने की मांग भी उठ रही है। ओपिनियन पोल मतदाता को गुमराह कर निष्पक्ष चुनाव में बाधा बन रहे हैं। वैसे भी ये सर्वेक्षण वैज्ञानिक नहीं हैं, क्योंकि इनमें पारदर्शिता की कमी है और ये किसी नियम से बंधे नहीं हैं। साथ ही ये सर्वे, कंपनियों को धन देकर कराए जा सकते हैं। बावजूद इन्हें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के बहाने ढोया जा रहा है। जबकि ये पेड न्यूज की तर्ज पर पेड ओपोनियन पोल में बदल गए हैं। इसीलिए इनके परिणाम भरोसे के तकाजे पर खरे नहीं उतरते। सर्वे कराने वाली एजेंसियां भी स्वायत्त होने के साथ जवाबदेही के बंधन से मुक्त हैं। इसलिए इन पर भरोसा किस आधार पर किया जाए ? दरअसल चुनाव आयोग ने 21 अक्टूबर 2013 को सभी राजनीतिक दलों को एक पत्र लिखकर, चुनाव सर्वेक्षणों पर राय मांगी थी। दलों ने जो जवाब दिए उससे मत भिन्नता पेश आई। वैसे भी बहुदलीय लोकतंत्र में एकमत की उम्मीद बेमानी है। जाहिर है, कांग्रेस ने सर्वेक्षण को निष्पक्ष चुनाव प्रक्रिया को प्रभावित करने वाला बताया था। बसपा ने भी असहमति जताई थी। माकपा की राय थी कि निर्वाचन अधिसूचना जारी होने के बाद सर्वेक्षणों के प्रसारण और प्रकाशन पर प्रतिबंध जरूरी है। तृणमूल कांग्रेस ने आयोग के फैसले का सम्मान करने की बात कही थी। जबकि भाजपा ने इन सर्वेक्षणों पर प्रतिबंध लगाना संविधान के विरुद्ध माना था। उसने तथ्य दिया था कि सर्वेक्षणों में दर्ज मतदाता या व्यक्ति की राय वाक, भाषण या अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार क्षेत्र का ही मामला है।

दलों के अलग-अलग रुझान, भ्रम और गुमराह की मनःस्थिति पैदा करने वाले थे, इसलिए आयोग भी हाथ पर हाथ धरे बैठा रह गया। जो राजनीतिक दलों और सर्वेक्षण कंपनियों के पैरोकार इन सर्वेक्षणों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के बहाने जारी रखने की बात कह रहे हैं, उन्हें सोचने की जरूरत है कि संविधान में दर्ज अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और प्रेस की आजादी के मौलिक अधिकारों के प्रावधानों का दुरुपयोग भी हुआ है। हर एक चुनाव में पेड न्यूज के जरिए दलों और उम्मीदवारों का मीडिया ने कितना आर्थिक दोहन किया, यह सक्रिय राजनीति और पत्रकारिता से जुड़ा हर व्यक्ति जानता है। जाहिर है, पेड न्यूज के सिलसिले में तो मीडिया पहले ही अपना विश्वास खो चुका है और अब पेड ओपीनियन पोल खालिस मुनाफाखोरी की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

महंगाई का होगा वैश्विक तांडव, जनता होगी परेशान

सुनील महला

आज सुबह सुबह जब अखबार उठाया तो एक खबर पर नजर पड़ी। खबर का शीर्षक था-" ये स्टैच्यू नहीं ! युवक सलमान है, जो चार घंटे यूं ही खड़ा रहकर पेट पाल रहा" खबर बड़ी इंटेरेस्टिंग लगी। राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले के जंक्शन सुरेशिया का युवक बहरूपिया कला से अपना पेट पाल रहा है। आपके बारे में जानकारी नहीं है कि आपने बहरूपिये देखें हैं कि नहीं लेकिन अपने बारे में आपको बता दूं कि मैंने गांव में रहते हुए बचपन में (छोटी उम्र के दौरान) अक्सर माँ की गोद में बैठ कर, खेलते खिलाते, गांव-गुवाड़ की गलियों में, मसखरी करते,डराते धमकाते, बहकाते, शर्मोते, मुंह बनाते बहुत से बहरूपिया देखें हैं। बहरूपिया यानि एक ऐसा व्यक्ति जो किसी और व्यक्ति का रूप धारण करके उसकी जैसी साज-सज्जा(मेकअप) करके हमें मनोरंजन देकर, खुशियां बांटकर कुछ पैसे कमाता था। बहुत बार तो हम बहरूपिये को देखकर बहुत डर जाते थे और अपनी माँ के आंचल से लिपट जाते थे लेकिन वो बहरूपिया बस चंद पैसोन के लिए चंद सेकेण्ड के लिए ही हमे डरता था। वह डराता भी था और पुचकारता भी था। हंसाना, थोड़ा रूलाना, गुदगुदाना उसका काम था। आदमी जीवन जीने के लिए न जाने क्या क्या करता है, क्योंकि जीवन संघर्षों का नाम है। जीवन कोई फूलों की सेज नहीं है लेकिन कई बार स्थितियां ऐसी आतीं हैं कि आदमी कुछ सोचने पर मजबूर हो जाता है। सुरेशिया के इस युवक की ही अगर बात करें तो इसकी तीन पीढ़ियां बहरूपिया कला को आगे बढ़ा रही हैं और ये पीढ़ियां इस कला से प्रत्यक्षतया जुड़ी हुई हैं। कुछ समय पहले संगरिया, डबवाली में भी ऐसी कला दिखाने वाले व्यक्तियों के विडियो सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर वायरल हुए थे। सुरेशिया का यह युवक ही नहीं, हमारे प्रदेश में बहुत से लोग आज भी बहरूपिया कला से अपना पेट पाल रहे हैं और हमारी संस्कृति को आगे बढ़ा रहे हैं, क्योंकि बहरूपिया कला भी अपने आप में हमारी संस्कृति का एक हिस्सा रही है। वास्तव में देखा जाए तो यह एक मनोरंजन नाट्य कला ही है और आज भी राजस्थान के बहुत से हिस्सों में प्रचलित है। पहले गांव घरों में बहरूपिये भेष बदलकर आते थे और लोगों का अपनी कलाओं से अच्छा खासा मनोरंजन करते थे और लोग उन्हें प्रसन्न होकर अनाज, रुपए पैसे,कपड़े लत्ते,कोई उपहार अथवा कोई खाद्य सामग्री भेंट करते थे,जिससे उनकी आजीविका चलती थी। वास्तव में, बहुरूपिए अपना रूप विभिन्न चरित्रों के अनुसार बदल लेते हैं और उसी चरित्र विशेष के अनुरूप वे अभिनय या नाटक करने में प्रवीण या माहिर होते हैं । अपने श्रृंगार और वेषभूषा की सहायता से वे प्रायः उसी चरित्र में वे महसूस होने लग जाते थे, जिसके रूप की नकल वे बहरूपिये बनकर करते थे। कई बार तो इतनी जबरदस्त एक्टिंग करते थे किअसल और नकल में भेद करना भी आम आदमी के लिए मुश्किल हो जाता था। लोग बहरूपियों के इस प्रकार के अभिनय से चकरा जाते थे। आज सोशल मीडिया का जमाना है, तकनीक और आधुनिकीकरण ने बहरूपिया कला को खदेड़ दिया है, लोगों के पास बहरूपियों की कला देखने का समय ही नहीं बचा है, क्योंकि सभी जिंदगी की आपाधापी में न जाने कहाँ और किस कदर खोये हुए हैं ? पहले बहरूपिया कला का प्रदर्शन होली, दीपावली के त्योहारों के समय विशेष रूप से होता था, अब बहुत कम है। सच तो यह है कि आज पारंपरिक मनोरंजन कलाएं हमारे कारण और सरकारी संरक्षण के अभाव में लगातार दम तोड़ रही है। वास्तव में इनके विलुप्त होने का कारण वर्तमान में इनके कद्रदान नहीं होना माना जा रहा है। पहले के जमाने में बहरूपिया कला को बहुत ही सम्मान के साथ देखा जाता रहा है, लेकिन समय के बदलाव के साथ एवं घर-घर में दूरदर्शन, सोशल मीडिया की पैठ(सभी के पास एंड्रॉयड फोन) होने से अब इस कला के अस्तित्व पर ही संकट खड़ा हो गया है। पहले शादी ब्याह, तीज त्योहारों, मेले उत्सवों, रामलीला आदि के दौरान बहरूपिया कला में करतब दिखाए जाते थे। ये बहरूपिये पहले देवी-देवताओं, ऐतिहासिक पात्रों, यहाँ तक कि गांव के बड़े व रईस लोगों सेठों आदि की नकल करके लोगों का मनोरंजन करते थे। खूब हंसी-मजाक, ठिठौली होती थी, ये बहरूपिये स्वांग रचते थे, डॉयलोग तैयार करते थे, आजकल किसी के पास इन बहरूपियों के लिए न तो समय है और न ही कोई इनमें अपनी रूचि दिखा रहे हैं, युवा पीढ़ी को तो इनके बारे में जानकारी तक नहीं है। विकसित तकनीक, विज्ञान ने इस कला को समाज से नदारद कर दिया है लेकिन कुछ लोग अपने पेट की खातिर इसे अब भी जिंदा रखे हुए हैं। इस विलुप्तप्रायः कला का सबसे नामी कलाकार 'केलवा का परशुराम' है, भीलवाड़ा के जानकीलाल भाँड बहरूपिया भी राजस्थान में बहुत अधिक प्रसिद्ध है और उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक इस कला को पहुँचाया है। राजा महाराजाओं के दौर में बहरूपियों को उमरयार कहा जाता था, उस समय वे रियासत के लिए बहरूपिये के रूपमें जासूसी भी करते थे।

चिंतन

महिलाओं के जीवन के हर मोर्चे पर फैले समानता के रंग

विजय गर्ग

आत्माओं का वही चमकीला रंग अतीत में भी फैला था। कब। सेना में महिला अधिकारियों को स्थायी कमीशन देने का निर्णय लिया गया। सुप्रीम कोर्ट का फैसला शक्तिस्वरूप मानी जाने वाली महिलाओं को समानता देने की बात करता है। सुप्रीम कोर्ट ने इस अहम फैसले में कहा है कि जो भी महिला अधिकारी इस विकल्प को चुनना चाहती हैं, उन्हें तीन महीने के भीतर सेना में स्थायी कमीशन दिया जाना चाहिए. अदालत ने सरकार की याचिका को महिला कमांड पोस्ट न देने के पीछे शारीरिक क्षमता और सामाजिक मानदंडों का हवाला देते हुए करार दिया। कोर्ट ने कहा है कि सामाजिक और मानसिक कारण बताकर महिलाओं को इस अवसर से वंचित करना न केवल भेदभावपूर्ण है, बल्कि अस्वीकार्य भी है। ' यह सुखद है कि इस सटीक टिप्पणी के कारण यह निर्णय महिलाओं के जीवन में अन्य मोर्चों पर भी बदलाव लाने की नींव रखेगा।

घर से ऑफिस बदल जाएगी सोचः हमारे सामाजिक-पारिवारिक ढांचे में महिलाओं के साथ सभी प्रकार के भेदभाव का मूल कारण उनकी शारीरिक क्षमताओं को कम आंकना और सामाजिक मोर्चे पर पीछे समझा जाना है। जबकि पिछले कुछ सालों में महिलाओं ने हर मोर्चे पर खुद को साबित किया है. अंतरिक्ष से लेकर सामाजिक सरोकारों की आवाज बनने तक कई उपलब्धियां उनकी ही नहीं बल्कि देश की भी हैं। ऐसे में यह फैसला समाज की स्थिर सोच को नई दिशा देने वाला साबित होगा। घर में महिलाओं के विचारों और फैसलों को अहमियत दी जाएगी। ऑफिस में उच्च पदों पर पहुंचकर अपनी काबिलियत साबित करने के अवसर प्राप्त होंगे। हमारी क्षमता और क्षमता के बावजूद यह फैसला उन महिलाओं के लिए उत्साहजनक साबित होगा जो कई मोर्चों पर पिछड़ने का दर्द झेलती हैं। ऐसे फैसले पूरे समाज की सोच को एक नया रंग भी देते हैं।

महिलाओं की नेतृत्व योग्यता की अनदेखी करना यहां आम बात है। ऐसे में अब अर्द बलों की भूमिका में नारी शक्ति का आना अन्य क्षेत्रों में महिलाओं के नेतृत्व गुणों को स्वीकार करने का विचार लाएगा। महिलाओं को कमांड पोस्टिंग का अधिकार मिलना चाहिए। यह ध्यान देने योग्य है कि कमांड पोस्टिंग एक पोस्टिंग है जो यूनिट.कोरिया कमांड की ओर ले जाती है। देखा जाए तो सेना या समाज की रूढ़ियों के पहलू में समानता प्राप्त करना महिलाओं का संवैधानिक अधिकार है। ऐसे में इन बदलावों से नई पीढ़ी का सेना में भर्ती होने का आकर्षण भी बढ़ेगा। रक्षा क्षेत्र में उनकी भागीदारी बढ़ेगी। स्थायी कमीशन पाने वाली महिला अधिकारियों को भी वित्तीय भत्ते और पदोन्नति पाने के समान अवसर मिलेंगे। स्थायी कमीशन लागू होने के बाद सभी प्रकार की सुविधाएं और पेंशन मिलेगी।

स्थायी कमीशन- सेना में स्थायी कमीशन मिलने के बाद महिला अधिकारी सेवानिवृत्ति की उम्र तक सेना में काम कर सकेंगी। हां, अगर आप अपनी इच्छा से पहले नौकरी छोड़ना चाहते हैं तो आप जा सकते हैं। शॉर्ट सर्विस कमीशन के तहत सेना में कार्यरत महिला अधिकारियों को अब स्थायी कमीशन चुनने का विकल्प दिया गया है, और महिला अधिकारी भी स्थायी कमीशन मिलने के बाद पेंशन की हकदार होंगी। शार्ट सर्विस कमीशन के जरिए भर्ती होने के बाद अब तक वह 14 साल तक सेना में कार्यरत रहीं। 14 साल बाद महिला अधिकारी सेवानिवृत्त हुईं।

बदल सकता है पूरा माहौल- लैंगिक समानता के बिना महिलाओं से जुड़ी स्थिति नहीं बदल सकती। लैंगिक भेदभाव की सोच और व्यवहार को खत्म करना उसलाकिर को मिटाने जैसा है, जो महिलाओं की क्षमता को एक हद तक कम कर देता है। उस सीमा को समाप्त करना होगा, जो उनका दायरा निर्धारित करती है। इसी तरह हर मोर्चे पर समानता का अधिकार उसका मानव अधिकार है। इसके साथ ही महिलाओं का हिस्सा बराबर आया। और एक सम्मानजनक माहौल बनाकर हमारा पूरा वातावरण भी बदल सकता है। इसलिए प्रयास होना चाहिए कि महिलाओं को उनके हिस्से का पूरा हक मिले।

इस दुनिया में नया जीवन पैदा करना हर मां के लिए पुनर्जन्म की तरह

एन. रघुरामन

ऊना उन 22 बच्चों में से एक है, जो अपने देश पर हुए हमले के बाद बीते एक हफ्ते में इस दुनिया में आए। ऊना यूक्रेन का निकनेम भी है। मां के सीने से चिपककर दूध पीती हुई उस बच्ची का हाथ हर वक्त संयोग से अपनी मां के चेहरे की ओर बढ़कर उसे छू जाता, मानो मां के आंसू पोंछकर कह रही हो, ह्यमैं आ गई ना, तू रोना मत। शायद यही कारण हो कि ऊना की मां उसकी नाजुक हथेली पकड़कर, उसे चूमते हुए जोर से कहती, कितनी बहादुर है मेरी बच्ची। और उन शब्दों के साथ आंसुओं की धार फूट पड़ती क्योंकि उसे चिंता सताती है कि इस खूबसूरत बच्ची की सुरक्षा-देखभाल कैसे करेंगी। ऐसा इसलिए क्योंकि मां-बच्ची दोनों कीव के तलघरे में बने छोटे से नर्सिंग होम में हैं और सूरज ढलते ही क्लीनिक की रोशनी बुझा दी जाती है। डॉक्टर्स फोन की लाइट से वार्ड में आवाजाही करते हैं। गर्भवती मांएं, नई मांएं, होने वाले पिता बेसमेंट व अस्पताल के फ्लोर पर ऊपर-नीचे होते रहते हैं। नर्सें नवजातों को बेसमेंट में एक परिवर्तित कैफेटेरिया में ले जाती हैं। यह युद्धकाल का प्रसूति वार्ड है। भीषण पीड़ा के बीच जन्म और आनंद। हालांकि हमले के बाद कई लोग यूक्रेन छोड़ चुके हैं, लेकिन ऊना की मां जैसों ने कुछ अच्छी चॉइस के साथ यहां रहना चुना। उनके लिए भागना मतलब बिना किसी चिकित्सकीय मदद के बस या ट्रेन में बच्चे को जन्म देना और रुकना मतलब बमबारी के बीच रहना था। बेसमेंट में लेटे हुए और भविष्य के बारे में पूरी तरह अनिश्चित ऊना की मां बच्चे को इस दुनिया में लाने का पूरा साहस जुटाती हैं। वो डर आंसुओं में तब्दील हो रहा है और वो मासूम प्रतीकात्मक रूप से आंसू पोंछ रही है ! यूक्रेन के हालातों के कारण मुझे 1968 में बनी एक परिस्थिति याद आ गई। तब तमिलनाडु में चेन्नई से 600 किमी दूर मंदिरों वाले कस्बे कुंभकोणम में मेरी बहन इस दुनिया में आने ही वाली थी। 33 हजार आबादी वाले कस्बे में हिंदू त्योहार ह्यमहामहमह्न मनाने के लिए लाखों लोग जुटे थे, कुंभ मेले की तरह ये भी हर 12 साल में महामहम कुंड में आयोजित होता है। महामहम के दिन श्रद्धालु इसमें डुबकी लगाना पवित्र मानते हैं। और जब यह शाही स्नान अपने चरम पर था, मेरी मां को प्रसव पीड़ा शुरू हो गई। और उन्हें छोटे से घर से नर्सिंग होम तक पहुंचाना मतलब किसी सुनामी को पार करना था, जो कि असल में लोगों की सुनामी थी। मेरी मां अपने होठों को दांतों से कसकर दबाए इस दुनिया में आने वाली मेरी बहन से कहना चाह रही थीं कि जरा देर रुक जाओ। इस दौरान मां के होंठ कट गए थे और उनसे खून आने लगा था। 1993 में मेरी बहन मुंबई में मेरी भांजी को जन्म दे रही थी कि अचानक शहर में बम धमाके की खबर आग की तरह फैलने से अफरा-तफरी मच गई। और बॉम्बे की सड़कों पर हम वही स्थिति फिर से देख रहे थे। फिर 2008 में मुंबई आतंकी हमले के बीच, पत्रकार होने के नाते स्टोरी कवर करते हुए मैंने ऐसी कई डरी हुई मांओं को देखा। कामा अस्पताल की पहली मंजिल पर वे मांएं तालाबंद थीं, जहां उस रात आतंकियों ने कईयों को मार दिया था। प्रसूति विभाग में लाइट नहीं थी, नर्स ने चतुराई से लोहे का बाहर वाला गेट बंद कर दिया था। हर मां बच्चे को सामान्य से ज्यादा दूध पिला रही थीं ताकि बच्चे रोकर शोर न करें। अगर मुझे यह महिला दिवस किसी को समर्पित करना पड़े, तो मैं आंख मूंदकर बिना कुछ सोचे सारी मांओं को यह समर्पित करूंगा। फंडा यह है कि इस दुनिया में नया जीवन पैदा करना हर मां के लिए पुनर्जन्म की तरह होता है। अगर अभी भी वो आपके साथ हों, तो कृपयाकर उन्हें सलाम करें, गले लगाएं और उनके आगे नतमस्तक हो जाएं। हां, ऐसा सिर्फ महिला दिवस के दिन नहीं, बल्कि हर रोज करें।

बम फोड़ा, नाटो तेरे लिए

रामविलास जांगिड़

नाटो ने मुझे साफ कह दिया है कि तुम्हें ईंट का जवाब पत्थर से देना चाहिए। कौनसी ईंट कौनसा सवाल? कौनसा पत्थर कौनसा बवाल? मैंने जब इसमें असमर्थता जताई तो उसने नाटो नियम की पींपनी बजाई और कहा- "नाटो विचारधारा का नियम तो यही है। ईंट की लेनी, तो पत्थर की देनी।" मैंने जब ईंट और पत्थर के इस सियासी नियम के आदान-प्रदान पर असमर्थता जताई, तो नाटोधिपति ने इस बार ईंट से ईंट बजाने की कलहकारी नीति का ऐलान किया। मुझे आदेशित किया कि अगर नाटो में रहना है तो बस ईंट से ईंट बजाना है। ईंट से ईंट बजाते चलो नाटोधारा की शूल बिछाते चलो। मैंने कहा- "ईंट बजाने की बजाए इसे गलाकर अनुशासित तरीके से एक के ऊपर एक रख दिया जाए तो अच्छा-खासा मकान बन सकता है। "आप बिल्कुल झंडू-बंडू टाइप के यूक्रेनी हैं। यहां ईंट से मकान नहीं बनाना है, बल्कि मकान में लगी ईंटें खिसकाना है। विरोधी का मकान ढहाना है। आप नाटो की विचारधारा को नहीं समझते!" चिल्लाते हुए इस बार नाटो देव ने एक बड़ी सी ईंट उठाई और उसे स्व-नाटोधारा के कीचड़ में फेंक मारी। तभी नाटो विचारधारा के पास बैठी मक्खियों का झुंड रूस की ओर उड़ने लगा। नाटो विचार की धाराओं में मंडराते, गुलाम से लतियाते, बलखाते मच्छर गणों ने जोरदार कहकहा लगाया। इधर-उधर खड़े चार देवताओं ने नाटो का गाना सुनाया। जय नाटोकमान! तू है महान! तुझ पर यह जीवन कुर्बान! धीरे-धीरे नाटो विचारधारा के कीचड़ में मक्खी-मच्छरों का सामूहिक अधिवेशन फिर शुरू हो गया। वे इसमें छपाक छई-छई करने लग गए। देवताओं की सामूहिक प्रस्तुति से नाटोकमान एकदम कड़क कमान में बदल गया। तब परिणाम में नाटो विचारधारा का मारा; रूस की ओर उछला कीचड़ आवारा!

बांग्लादेश की लगातार दूसरी हारः विमेंस वर्ल्ड कप में न्यूजीलैंड ने 9 विकेट से हराया, कप्तान सूजी बेट्स ने खेली धमाकेदार पारी

डुनेडिन। ICC महिला वर्ल्ड कप के अपने दूसरे मैच में न्यूजीलैंड ने बांग्लादेश को 9 विकेट से हरा दिया है। मेजबान कीवी टीम के सामने 141 रन का टारगेट था, जिसे टीम ने 42 गेंद पहले 20 ओवर में केवल 1 विकेट के नुकसान पर हासिल कर लिया।

कीवी टीम की जीत में कप्तान सूजी बेट्स ने 68 गेंदों पर नाबाद 79 रन बनाए और उनको प्लेयर ऑफ द मैच का अवॉर्ड मिला। उनके अलावा अमेलिया केर ने भी 37 गेंदों पर नाबाद 47 रन बनाए। BAN के लिए एकमात्र विकेट सलमा खातून ने लिया।

बांग्लादेश की टीम ने किया निराश

बारिश के कारण मैच देरी से शुरू हुआ, जिसके चलते मुकाबले को 27-27 ओवर का कर दिया गया। जहां बांग्लादेश ने टॉस हारकर पहले बैटिंग करते हुए 8 विकेट खोकर 140 रन बनाए। ओपनर फरगना होक (52) टॉप स्कोरर रही। वहीं, शमीमा सुल्ताना ने 33 रन का योगदान दिया। हैं की ओर से एमी सैटरथवेट ने 3 विकेट हासिल किए। मैच में 73 रन बनाने के साथ ही कीवी कप्तान सूजी बेट्स महिला वर्ल्ड कप में 1,000 रन बनाने वाली छठी और न्यूजीलैंड की दूसरी खिलाड़ी बन गई हैं। उन्होंने ये उपलब्धि वर्ल्ड कप के अपने 22 मैच में हासिल की। वनडे विश्व कप में अभी तक वह 21 पारियों में 62.87 की औसत के साथ 1006 रन बना चुकी है। इस दौरान उन्होंने 3 शतक और 5 फिफ्टी भी लगाई है।

रूसी खिलाड़ी को इंटरनेशनल जिम्नास्ट संघ ने बैन किया

बेलग्रेड। रूस और यूक्रेन के बीच जंग का 13वां दिन दोनों देशों के बीच हो रहे युद्ध का असर खेल पर भी पड़ रहा है। रूसी जिम्नास्ट इवान कुलियाक ने रूसी युद्ध का सिम्बल माना जा रहा '5' अपनी चेस्ट पर लगा लिया। इसके बाद उन पर बैन लगा दिया गया है। बता दें कि युद्ध में शामिल रूसी वाहनों पर 5 का चिन्ह लगाए हुए देखा गया था। इसे रूसी युद्ध का प्रतीक माना जा रहा है।कतर में आयोजित एक टूर्नामेंट में कुलियाक ने ब्रॉन्ज मेडल जीता था। जब वो मेडल लेने पोडियम पर गए तो उनकी छाती पर 5 का चिन्ह दिख रहा था। इसके बाद ये फोटो सोशल मीडिया पर वायरल हो गई। इसके बाद इंटरनेशनल जिम्नास्टिक महासंघ ने कुलियाक पर बैन लगा दिया। संघ ने कहा कि कुलियाक के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कतर के दोहा में अपने व्यवहार से शर्मिंदा किया है। इससे पहले रूस के टेनिस खिलाड़ी आंद्रे रुबलेव दुबई के टेनिस टूर्नामेंट के दौरान युद्ध रोकने का लेकर बड़ा संदेश दिया था। रुबलेव ने टीवी ब्रॉडकास्टर के कैमरे की स्क्रीन पर लिखा था- No War Please...जैसे ही रुबलेव का मैसेज स्क्रीन पर नजर आया तो स्टेडियम में दर्शक तालियां बजाकर शोर मचाने लगे थे। इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हुआ था।

टोक्यो ओलंपिक के गोल्ड मेडलिस्ट प्रमोद भगत ने जीते तीन स्वर्ण, कदम को भी मिले दो पदक

टोक्यो । टोक्यो पैरालंपिक के गोल्ड मेडलिस्ट प्रमोद भगत ने स्पेनिश पैरा बैडमिंटन इंटरनेशनल टू टूर्नामेंट में तीन स्वर्ण पदक जीत लिए हैं। भारत के शीर्ष खिलाड़ी ने स्पेन के विटोरिया में चल रहे इस टूर्नामेंट के तीन अलग-अलग वर्गों में ये पदक जीते। उनके अलावा विश्व रैंकिंग में चौथे स्थान पर काबिज सुकांत कदम ने एक स्वर्ण और एक रजत पदक अपने नाम किया। एकल वर्ग में दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी भगत ने कुमार नीतेश को 17-21, 21-17, 21-17 से हराया। पुरूष युगल में भगत और मनोज सरकार ने भारत के ही कदम और नीतेश को 21-19, 11-21, 21-11 से हराया। मिश्रित युगल में भगत और पलक कोहली ने भारत के रूथिक रघुपति और मानसी जोशी को 14-21, 21-11, 21-14 से हराकर खिताब जीता।

जर्मन ओपन में पीवी सिंधू, श्रीकांत और लक्ष्य के नेतृत्व में भारत पेश करेगा चुनौती

नई दिल्ली। मुलिहम अन डेर रुर (जर्मनी)। दो बार की ओलंपिक पदक विजेता पीवी सिंधू और विश्व चैंपियन पदक विजेता श्रीकांत और लक्ष्य सेन के नेतृत्व में भारतीय टीम मंगलवार से शुरू हो रहे जर्मन ओपनर सुपर 300 बैडमिंटन टूर्नामेंट में चुनौती पेश करेंगे। सिंधू ने सैयद मोदी अंतरराष्ट्रीय खिताब जीता था और लक्ष्य ने जनवरी में सुपर 500 ट्रॉफी पर कब्जा किया था, जबकि श्रीकांत कोविड संक्रमित होने के कारण विश्व चैंपियनशिप से बाद में बाहर हो गए थे।

विश्व चैंपियनशिप 2019 में स्वर्ण पदक के बाद सिंधू को 2022 लखनऊ में सैयद मोदी टूर्नामेंट तक खिताब का इंतजार करना पड़ा। सातवीं वरीय सिंधू अपने अभियान की शुरुआत थाईलैंड की दुनिया की 11वें नंबर की खिलाड़ी बुसानन ओंगबामरुंगफान के खिलाफ करेंगी। वहीं आठवीं वरीय प्राप्त भारतीय खिलाड़ी श्रीकांत का अपने पहले अभियान में सामना फ्रांस के ब्राइस लीवरडेज से होगा।

फॉर्म में चल रहे हैं अल्मोडा के लक्ष्य

अच्छी फॉर्म में चल रहे विश्व चैंपियनशिप में रजत पदक विजेता लक्ष्य ने मौकों का पूरा फायदा उठाया है। उन्होंने स्पेन के हुएलवा में कांस्य पदक और फिर जनवरी में इंडिया ओपन का खिताब जीता। पिछले महीने मलेशिया में एशियाई टीम चैंपियनशिप में भारतीय अभियान में सिर्फ वही प्रभावी प्रदर्शन कर सके। अल्मोड़ा के लक्ष्य को पहले दौर में थाईलैंड के केंताफोन वेंगचारोन के खिलाफ खेलना है।

प्रणय को मिल सकती है कड़ी चुनौती

कोविड-19 से उबरने के बाद एचएस प्रणय ने विश्व चैंपियनशिप, इंडिया ओपन और सैयद मोदी अंतरराष्ट्रीय के रूप में लगातार तीन टूर्नामेंट के अंतिम आठ में जगह बनाई। उन्हें पहले दौर में 7वें वरीय एनजी का लोंग एंगस की कड़ी चुनौती का सामना करना होगा। वहीं लंदन ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता साइना नेहवाल अपने अभियान की शुरुआत सिंगापुर की यिओ जिया मिन के खिलाफ करेंगी।

युगल में अश्विनी-रेड्डी पेश करेंगी चुनौती

महिला युगल में अश्विनी पोनप्पा और एन सिक्की रेड्डी का सामना नामी माम्सुयामा और चिहारू शिदा की जापान की पांचवीं वरीय जोड़ी से होगा। वहीं त्रीसा जॉली और गायत्री गोपीचंद को पहले दौर में नीदरलैंड की देबोरा जिले और चेरिल सेनेन के खिलाफ खेलना है। श्रीकांत ने कहा कि यह एक महत्वपूर्ण साल है और मैं अच्छे से प्रशिक्षण लेना चाहता हूं ताकि अपनी क्षमता के अनुसार सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर सकूं।

सुनील छेत्री चोटिल, बहरीन और बेलारूस के खिलाफ नहीं खेलेंगे

मोहाली। भारतीय फुटबॉल टीम को सोमवार को तब तगड़ा झटका लगा, जब कप्तान सुनील छेत्री चोटिल होने से बहरीन और बेलारूस के खिलाफ होने वाले अंतरराष्ट्रीय मैत्री मैच से बाहर हो गए।

कोच आइगर स्टिमैक ने 38 सदस्यीय खिलाड़ियों की संभावित सूची में 37 वर्षीय खिलाड़ी का नाम भी शामिल किया था। मैच मनामा में 23 और 26 मार्च को होना है।

ऑल इंडिया फुटबॉल फेडरेशन (एआईएफएफ) वेबसाइट पर कहा, मैं बहरीन और बेलारूस के साथ फ्रेंडली मैच खेलने के लिए काफी उत्सुक था, लेकिन अब मैं बाहर हूं। यह सत्र बहुत ही लंबा और कठिन रहा, जिसमें कुछ चोटें भी आईं। मैं इससे उबरने की कोशिश कर रहा हूं और जल्द ही मई से पहले तक ठीक हो सकता हूं। मैत्री मैच से पहले आयोजित तैयारी शिविर में 38 संभावित खिलाड़ियों में से 8 नई चेहरे भी शामिल किए गए हैं।

शेन वॉर्न ने जादुई गेंदबाजी की लेकिन यह नहीं कहूंगा कि वह महानतम स्पिनरः गावस्कर

नई दिल्ली। महान बल्लेबाज सुनील गावस्कर का मानना है कि दिवंगत शेन वॉर्न ने अपने कैरियर में जादुई गेंदबाजी की लेकिन वह सर्वकालिक महानतम स्पिनर नहीं हैं क्योंकि भारत में उनका प्रदर्शन 'औसत' रहा। वॉर्न ने 1992 में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण के बाद से आस्ट्रेलिया के लिये 145 टेस्ट खेलकर 708 विकेट लिये। उन्होंने 194 वनडे में 293 विकेट चटकाये। यह पूछने पर कि क्या वॉर्न को वह महानतम स्पिनर मानते हैं, गावस्कर ने कहा कि वह भारतीय स्पिनरों और श्रीलंका के मुथैया मुरलीधरन को वॉर्न से ऊपर रखेंगे। उन्होंने 'इंडिया टुडे' से कहा ,'' मैं ऐसा नहीं कहूंगा। मेरी नजर में भारतीय स्पिनर और मुथैया मुरलीधरन उनसे बेहतर हैं।'' उन्होंने कहा ,'' इसका कारण यह है कि भारत के खिलाफ शेन वॉर्न का रिकॉर्ड औसत रहा है।भारत में उन्होंने एक ही बार नागपुर में पांच विकेट लिये।''गावस्कर ने कहा ,'' भारतीय खिलाड़ियों के खिलाफ उन्हें अधिक सफलता नहीं मिली क्योंकि भारतीय स्पिन को बखूबी खेलते हैं। इसलिये मैं उन्हें महानतम नहीं कहूंगा। मुथैया मुरलीधरन भारत के खिलाफ अधिक कामयाब रहे हैं। मैं उन्हें वॉर्न से ऊपर रखूंगा।'' मुरलीधरन के नाम टेस्ट क्रिकेट में सर्वाधिक 800 विकेट हैं। गावस्कर ने वॉर्न की तारीफ भी की लेकिन आस्ट्रेलियाई मीडिया ने उनके बयान की टाइमिंग को लेकर निंदा की है। गावस्कर ने कहा ,'' वॉर्न ने कलाई की स्पिन में महारत हासिल की जो आसान नहीं है। उनके विकेटों की संख्या बताती है कि वह कितने शानदार गेंदबाज थे। ऊंगलियों की स्पिन आसान है लेकिन कलाई की स्पिन या लेग स्पिन काफी कठिन है।

रूस के खिलाफ युद्ध में यूक्रेन की मदद करना चाहते हैं जोकोविच, इस खिलाड़ी ने किया खुलासा

नई दिल्ली। टेनिस स्टार नोवाक जोकोविच ने यूक्रेन के खिलाड़ी को मदद की पेशकश की है। उन्होंने रूस के खिलाफ युद्ध के दौरान यूक्रेन के खिलाड़ी स्ताखोव्सकी से कहा है कि उन्हें अगर किभी तरह की मदद की जरूरत है तो वे जोकोविच से मदद मांग सकते हैं। 36 साल के सिर्गी यूक्रेन की सेना में शामिल हो चुके हैं और वो अब अपने देश जाकर युद्ध में शामिल होना चाहते हैं। इस बीच जोकोविच ने उनकी मदद की पेशकश की है।

दुनिया के पूर्व नंबर 31 खिलाड़ी सिर्गी यूक्रेन की रिजर्व आर्मी का हिस्सा हैं, जो जरूरत पड़ने पर रूस के खिलाफ युद्ध में शामिल होगी।

स्ताखोव्सकी चार एटीपी खिताब जीत चुके हैं। साल 2013 में उन्होंने विम्बल्डन ओपेन में रोजर फेडरर को हराकर सुर्खियां बटोरी थी। जोकोविच ने उम्मीद की है कि जल्द ही यूक्रेन में हालात सामान्य हो जाएंगे।

इंस्टाग्राम में की मदद की पेशकश

जोकोविच ने स्ताखोव्सकी को मैसेज करके मदद की पेशकश की है। उन्होंने लिखा 'कृपया मुझे बताएं कि मदद भेजने के लिए सबसे सही पता क्या होगा। आर्थिक मदद या कोई दूसरी मदद भी।' स्ताखोव्सकी ने इस बातचीत के स्क्रीनशॉट इंस्टाग्राम में पोस्ट कर कहा कि उनकी मदद की पेशकश का यूक्रेन आभारी है। रूस ने यूक्रेन में हमला कर दिया है। रूस का कहना है कि उसका उद्देश्य क्षेत्र पर कब्जा करना नहीं है, बल्कि वह पड़ोसी देश की सैन्य क्षमता को कमजोर करना चाहता है और खतरनाक चीजों को खत्म करना चाहता है।

यूक्रेन के कई खिलाड़ी रूस के खिलाफ युद्ध में सक्रिय रूप से शामिल हो चुके हैं। इस में पूर्व हैवीवेट चैंपियन व्लादिमीर क्लिस्तको और उनके भाई विताली क्लिस्तको भी शामिल हैं। इन दोनों के अलावा भी कई खिलाड़ी यूक्रेन की सेना में शामिल हो चुके हैं और युद्ध में शहीद हो चुके हैं।

बीसीसीआई अधिकारी का दावा- इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट से पहले किसी ने चटर्जी से बात नहीं की

चेन्नई। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के एक वरिष्ठ अधिकारी ने सोमवार को इन संकेतों को बकवास करार दिया कि पिछले साल चेन्नई में इंग्लैंड के खिलाफ पिच के प्रभारी क्यूरेटर ने 'जानबूझकर' भारतीय टीम के हितों के खिलाफ काम किया था। इस तरह की खबरें आई हैं कि उस श्रृंखला के पहले टेस्ट की पिच के प्रभारी क्यूरेटर तापस चटर्जी से तत्कालीन टीम प्रबंधन (कोचिंग स्टाफ पढ़ें) ने पिच को पानी नहीं देने और 'रोलिंग'नहीं करने को कहा था। पता चला है कि चटर्जी को कहा गया था कि वह पानी नहीं डालें और पिच को रोल नहीं करें जिससे कि चेन्नई की गर्मी से यह टूट जाए और पहले दिन से ही गेंद को काफी टर्न मिलने लगे।

चटर्जी ने कथित तौर पर ये सुझाव नहीं माने और यह सपाट पिच निकली जहां इंग्लैंड के कप्तान जो रूट ने भारतीय गेंदबाजों के खिलाफ जमकर रन जुटाए और इंग्लैंड ने आसानी से टेस्ट मैच जीत लिया। चटर्जी ने असल में दूसरे टेस्ट की पिच पर काम नहीं किया जहां भारत ने मैच जीतकर बराबरी हासिल की।बीसीसीआई हालांकि इस मामले में जांच के मूड में नहीं है और वरिष्ठ अधिकारी ने इन आरोपों को बकवास करार दिया। बीसीसीआई के सूत्रों के अनुसार भारत द्वारा गंवाए मैच की जांच की कोई योजना नहीं थी। भारत ने अगले तीन टेस्ट जीतकर श्रृंखला 3-1 से जीती। इस मामले की जानकारी रखने वाले वाले वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, ''अगर तत्कालीन टीम प्रबंधन से किसी ने विश्व टेस्ट चैंपियनशिप मैच के लिए इस्तेमाल होने वाली पिच में बदलाव के लिए बाध्य करने का प्रयास किया था तो फिर जांच उसकी होनी चाहिए।''

फिट होने के बाद टीम इंडिया से जुड़े अक्षर पटेल, कुलदीप यादव को किया गया रिलीज

नई दिल्ली। भारत और श्रीलंका के बीच दो टेस्ट मैचों की सीरीज खेली जा रही है। पहले टेस्ट मैच में भारत ने श्रीलंका को बुरी तरीके से हराया। इन सब के बीच अचानक की टीम में एक बड़ा बदलाव आया है। कहीं ना कहीं यह बदलाव कुलदीप यादव के लिए ठीक नहीं है। दरअसल, भारत और श्रीलंका के बीच दूसरा टेस्ट मैच 12 मार्च को खेला जाएगा। यह टेस्ट मैच डे नाइट फॉर्मेट में पिंक बॉल से खेला जाएगा।

पहले घोषित टीम में कुलदीप यादव को रखा गया था। हालांकि अक्षर पटेल के फिट होने के बाद कुलदीप यादव को रिलीज कर दिया गया।हाल में कुलदीप यादव वेस्टइंडीज के खिलाफ एकदिवसीय श्रृंखला में खेलते हुए नजर आए थे। माना जा रहा था कि रोहित शर्मा की कप्तानी में कुलदीप यादव को और अधिक खेलने के मौके मिलेंगे। हालांकि ऐसा होता दिखाई नहीं दे रहा है। विराट कोहली की भी कप्तानी में कुलदीप यादव को बहुत ज्यादा मौके नहीं मिले। टीम में रहने के बावजूद भी श्रीलंका के खिलाफ तीन टी-20 मैचों में कुलदीप यादव को प्लेइंग इलेवन में जगह नहीं मिली।

बताया जा रहा है कि अक्षय पटेल ने टीम को मोहाली में ही ज्वाइन कर लिया था। ऐसे में कुलदीप यादव को रिलीज कर दिया गया है। कुलदीप यादव को रिलीज करने के फैसले के बारे में बात करें तो कहा जा रहा है कि अक्षर पटेल ने अपनी फुल फिटनेस हासिल कर ली है। वह टीम इंडिया से जुड़ चुके हैं और दूसरे मैच में चयन के लिए भी उपलब्ध रहेंगे। कुलदीप यादव को अक्षर पटेल के बैकअप के तौर पर टीम में रखा गया था। हालांकि अक्षर फिट होने के बाद उन्हें रिलीज कर दिया गया है। कुलदीप को रिलीज करने का एक कारण यह भी है कि उनके अलावा टीम में लेफ्ट आर्म स्पिनर और भी हैं। अक्षर पटेल और रविंद्र जडेजा पहले से मौजूद हैं। इसके अलावा स्पेन के लिए आर अश्विन और जयंत यादव के टीम में शामिल है।

डीन एल्गर ने कहा- आईपीएल की बजाय देश के लिये खेलने का फैसला करें दक्षिण अफ्रीका के खिलाड़ी

जोहानिसबर्ग। सात मार्च दक्षिण अफ्रीका के टेस्ट कप्तान डीन एल्गर ने अपने साथी खिलाड़ियों से कहा है कि वे आगामी आईपीएल की बजाय बांग्लादेश के खिलाफ देश के लिये खेले क्योंकि यह उनकी वफादारी की परीक्षा है और उन्हें देश को तरजीह देनी चाहिये। दक्षिण अफ्रीका को 18 मार्च से बांग्लादेश के खिलाफ तीन वनडे और दो टेस्ट खेलने हैं जबकि आईपीएल 26 मार्च से 29 मई तक खेला जायेगा।

वनडे मैच 18, 20 और 23 मार्च को होंगे। इसके बाद 31 मार्च से दो टेस्ट मैचों की श्रृंखला शुरू होगी जो 12 अप्रैल तक चलेगी। ईएसपीएन क्रिकइन्फो के अनुसार क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका ने खिलाड़ियों पर छोड़ दिया है कि वे आईपीएल को चुनते हैं या बांग्लादेश के खिलाफ खेलने को।एल्गर ने कहा , खिलाड़ियों को क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका को संकेत देना चाहिये कि वे आईपीएल खेलना चाहते हैं या देश के लिये।

यह खिलाड़ियों की वफादारी की परीक्षा है। उन्हें नहीं भूलना चाहिये कि टेस्ट या वनडे क्रिकेट खेलकर ही वे आईपीएल तक पहुंचे है। दक्षिण अफ्रीका के 11 क्रिकेटर आईपीएल की विभिन्न टीमों का हिस्सा है जिनमें छह टेस्ट क्रिकेटर और तीन वनडे क्रिकेटर हैं। एल्गर ने कहा ,'' मैं खिलाड़ियों को टीम में उनकी स्थिति के बारे में बताऊंगा और हर खिलाड़ी से बात करूंगा। मैं उनसे कहूंगा कि उन्हें यह नहीं भूलना चाहिये कि वे कहां तक आये हैं और एक टीम के रूप में हम कहां तक आये हैं।

रविचंद्रन अश्विन ने कहा- कभी नहीं सोचा था कि महान क्रिकेटर कपिल देव के विकेट को पीछे छोड़ दूंगा

मोहाली। भारतीय ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने यहां रविवार को टेस्ट क्रिकेट में देश के दूसरे सबसे सफल गेंदबाज बनने के बाद कहा कि उन्होंने जब अपना करियर शुरू किया था तो कभी नहीं सोचा था कि वह महान क्रिकेटर कपिल देव के टेस्ट विकेट की उपलब्धि को पीछे छोड़ देंगे। उन्होंने साथ ही कहा कि खेल ने उन्हें जो कुछ दिया है, वह उसके लिये शुक्रगुजार हैं। अपने 85वें टेस्ट मैच में 35 वर्षीय अश्विन ने श्रीलंका की दूसरी पारी में चरिथ असालंका को आउट कर महान क्रिकेटर कपिल देव के 434 टेस्ट विकेट की उपलब्धि को पीछे छोड़ दिया। भारत ने यह टेस्ट पारी और 222 रन से जीता। कपिल देव ने 434 विकेट 131 मैचों में हासिल किये थे। इस सूची में महान क्रिकेटर अनिल कुंबले 619 विकेट से शीर्ष पर हैं जो उन्होंने 132 मैचों में हासिल किये। अश्विन ने जीत के बाद अपने इंस्टाग्राम पेज पर लिखा, ''28 साल पहले, मैं महान क्रिकेटर कपिल देव के विकेटों के विश्व रिकॉर्ड का जश्न मना रहा था। मुझे जरा सा भी अंदाजा नहीं था कि मैं एक ऑफ स्पिनर बनूंगा, देश के लिये खेलूंगा और यहां तक कि महान क्रिकेटर के विकेट की उपलब्धि को पीछे छोड़ दूंगा।मैं खुश हूं और इस खेल ने मुझे अभी तक जो दिया है, उसके लिये शुक्रगुजार हूं। उन्होंने साथ ही कहा कि श्रीलंका के खिलाफ पहले मैच में विकेट हासिल करना आसान नहीं था इसलिये उन्हें लंबे समय तक कसी गेंदबाजी करनी पड़ी। अश्विन ने कहा, ''पिच वास्तव में काफी अच्छी थी, बल्लेबाज जब रक्षात्मक होकर खेल रहे थे तो उन्हें आउट करना आसान नहीं था। आपको लंबे समय तक कसी गेंदबाजी करनी पड़ी।

उन्होंने कहा, ''मुझे लगता है कि मोहम्मद शमी और जसप्रीत बुमराह ने उस छोर से दबाव बनाया, जहां पिच ज्यादा टर्न नहीं ले रही थी। '' अश्विन ने स्टार आल राउंडर रविंद्र जडेजा के मैच विजयी प्रदर्शन की भी प्रशंसा की और कहा, ''मुझे लगता है कि वह पिछले चार-पांच वर्षों में काफी आगे बढ़ चुका है। मेरी राय में वह जिस नंबर पर बल्लेबाजी कर रहा है, वह थोड़ा नीचे है। वह जानता है कि वह क्या कर रहा है और यह उसकी बल्लेबाजी में झलकता है।

लंदन के आलीशान घर पर माल्या परिवार का कब्जा बरकरार रहेगा

लंदन। विजय माल्या का परिवार लंदन में अपने आलीशान घर पर कब्जा बरकरार रख सकेगा। ब्रिटेन की एक अदालत ने व्यवस्था दी है कि एक पारिवारिक ट्रस्ट कंपनी द्वारा ऋण का पुनः वित्तपोषण स्वीकार्य लेनदेन है।माल्या परिवार के ट्रस्ट से जुड़ी ब्रिटिश वर्जिन आइलैंड की कंपनी रोज कैपिटल वेंचर्स (आरसीवी) ने लंदन हाई कोर्ट में इस बाबत अर्जी दाखिल की थी जिस पर गत सुनवाई हुई।

इस ट्रस्ट की मध्य लंदन में कॉर्नवैल टेरेस प्रोपर्टी है। जज सिमोन रेनी क्यूसी ने व्यवस्था दी कि पुनः वित्तपोषण (रीफाइनेंसिंग) एक स्वीकार्य लेनदेन है जिसका आशय लंदन की एक प्रमुख संपत्ति में निवेश करने से है। न्यायाधीश ने कहा, ''प्रस्तावित लेनदेन उचित है।

यूक्रेन से 533 नेपाली लोगों को सुरक्षित निकाला गया

काठमांडू। नेपाल के विदेश मंत्री नारायण खड़का ने सोमवार को कहा कि उनके देश के 533 नागरिक युद्धग्रस्त यूक्रेन से बाहर निकल गए हैं। उन्होंने निकासी प्रक्रिया में सहायता के लिए भारत सरकार को धन्यवाद दिया।मंत्री ने यहां एक प्रेस वार्ता में कहा कि यूक्रेन छोड़ने वाले नेपालियों में से 427 लोग पोलैंड पहुंचे, जबकि अन्य पड़ोसी देशों में थे - वे सभी सुरक्षित हैं। खड़का ने यूक्रेन से नेपाली नागरिकों को निकालने की प्रक्रिया में मदद करने के लिए भारत सरकार को धन्यवाद दिया।

रूस ने 24 फरवरी को यूक्रेन पर आक्रमण किया, जिससे देश के लगभग सभी सीमावर्ती शहरों और कस्बों में भीषण लड़ाई हुई। नेपाल ने सभी संबंधित पक्षों से तनाव बढ़ने से रोकने के लिए अधिकतम संयम बरतने का अनुरोध किया। विदेश मंत्रालय ने पिछले महीने यूक्रेन मुद्दे पर एक बयान में कहा कि संयुक्त राष्ट्र के सदस्य के रूप में, नेपाल का मानना है कि संयुक्त राष्ट्र चार्टर में निहित संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के सिद्धांत पवित्र हैं और सभी सदस्य देशों द्वारा इसका पूरा सम्मान किया जाना चाहिए। बयान में कहा गया, 'यूक्रेन के डोनेट्स्क और लुहान्स्क क्षेत्रों को स्वतंत्र संस्थाओं के रूप में मान्यता संयुक्त राष्ट्र चार्टर के प्रावधानों के विपरीत है। नेपाल किसी भी परिस्थिति में एक संप्रभु देश के खिलाफ बल के किसी भी प्रयोग का विरोध करता है और कूटनीति और बातचीत के माध्यम से विवादों के शांतिपूर्ण समाधान में विश्वास करता है।

युद्ध के बावजूद चीन ने रूस को अपना मुख्य 'कूटनीतिक साझेदार' बताया

बीजिंग। अमेरिका और यूरोपीय संघ के मॉस्को पर लगाम लगाने के लिये अपने प्रभाव का इस्तेमाल करने के बढ़ते दबाव के बावजूद यूक्रेन पर हमले की निंदा करने से चीन के लगातार इनकार के बीच चीनी विदेश मंत्री वांग यी ने सोमवार को रूस को बीजिंग का ''सबसे महत्वपूर्ण कूटनीतिक साझेदार'' बताया।वांग यी ने कहा कि मॉस्को के साथ चीन के रिश्ते ''दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण द्विपक्षीय संबंधों में से एक'' हैं। चीन ने यूक्रेन पर रूस के हमला करने के बाद उस पर अमेरिका, यूरोप और अन्य द्वारा लगाए प्रतिबंधों से खुद को अलग कर लिया है। चीन ने कहा कि इन प्रतिबंधों ने नए मुद्दे पैदा कर दिए हैं और राजनीतिक समाधान की प्रक्रिया बाधित कर दी है। उन्होंने चीन की संसद की वार्षिक बैठक से इतर संवाददाता सम्मेलन में कहा, ''अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य कितना ही खतरनाक क्यों न हो, लेकिन हम अपना कूटनीतिक रुख बरकरार रखेंगे और नए युग में व्यापक चीन-रूस भागीदारी के विकास को बढ़ावा देते रहेंगे। दोनों देशों के लोगों के बीच दोस्ती मजबूत है।'' गौरतलब है कि चीनी नेता शी चिनफिंग और रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के बीच चार फरवरी को बीजिंग में हुई बैठक को काफी महत्ता दी गयी। इस बैठक के बाद दोनों पक्षों ने एक संयुक्त बयान जारी कर ''अपने अहम हितों की रक्षा के लिए मजबूत परस्पर सहयोग'' की पुष्टि की।

यूक्रेन संकट : सूमी में फंसे भारतीय विद्यार्थियों को नहीं मिल रहा सुरक्षित गलियारा, भारत ने सुरक्षा परिषद से कहा

संयुक्त राष्ट्र। युद्धरत रूस व यूक्रेन से बार-बार आग्रह के बाद भी पूर्वी यूक्रेन के सूमी शहर में फंसे भारतीय विद्यार्थियों की निकासी के लिए सुरक्षित गलियार नहीं मिल पा रहा है। इस पर चिंता जताते हुए भारत ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद को सूचित किया है।

यूक्रेन से भारत अब तक 20 हजार से ज्यादा नागरिकों को निकाल लाया है, लेकिन सूमी में सुरक्षित रास्ता नहीं मिलने से परेशानी हो रही है। भारत ने निकासी गलियारा देने के लिए जंगरत दोनों देशों से आग्रह किया है। संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थाई दूत टीएस तिरुमूर्ति ने सोमवार को सुरक्षा परिषद की बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि हम शत्रुता खत्म करने का लगातार आह्वान कर रहे हैं। यह बैठक यूक्रेन में मानवीय हालात पर विचार करने के लिए हुई थी।

उन्होंने कहा कि हम यूक्रेन में फंसे भारतीय नागरिकों समेत सभी नागरिकों को सुरक्षित व निर्बाध रूप से तत्काल निकालने की मांग कर रहे हैं। तिरुमूर्ति ने कहा कि हम इस बात से चिंतित हैं कि दोनों पक्षों से बार-बार

आग्रह करने के बाद भी सूमी में फंसे हमारे विद्यार्थियों को तत्काल सुरक्षित गलियारा प्रदान नहीं किया गया है। उन्होंने कहा कि भारत अब तक 20 हजार भारतीयों को यूक्रेन से सुरक्षित वापस लाने में कामयाब रहा है। संपर्क करने पर हमने अन्य देशों के नागरिकों की भी मदद की है। उन्हें उनके देशों में छुड़वाने में मदद की गई। आने वाले दिनों में भी हम इसके लिए तैयार हैं। 80 से ज्यादा उड़ानों के माध्यम से यूक्रेन से भारतीयों को निकाला गया है। इस काम में मदद के लिए हम यूक्रेन व उसके पड़ोसी देशों द्वारा की गई सहायता की तारीफ करते हैं।

सूमी में 700 फंसे, भीषण संघर्ष जारी-सूमी में भारत के करीब 700 विद्यार्थी फंसे हुए हैं। वहां रूसी व यूक्रेनी सेना के बीच कई दिनों से भीषण संघर्ष चल रहा है। भारी बमबारी व हवाई हमलों के कारण भारत इन्हें नहीं निकाल पा रहा है। युद्ध प्रभावित यूक्रेन से अपने नागरिकों को निकालने के लिए, भारत सरकार ने 'ऑपरेशन गंगा' शुरू किया है। इसके जरिए यूक्रेन में फंसे हजारों लोगों, जिनमें बड़ी संख्या में विद्यार्थी हैं, निकाला गया है।

इन्हें यूक्रेन के पश्चिमी सीमाओं की सीमा से लगे देशों से निकाला गया है। हालांकि यूक्रेन के पूर्वी हिस्से से निकासी चुनौती बनी हुई है।

'24 घंटे के भीतर गद्दी छोड़ो इमरान खान', अविश्वास प्रस्ताव से पहले विपक्ष ने दिया अल्टीमेटम

इस्लामाबाद। पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) के अध्यक्ष बिलावल भुट्टो-जरदारी ने प्रधानमंत्री इमरान खान को गद्दी छोड़ने के लिए 24 घंटे का अल्टीमेटम दिया है। द न्यूज इंटरनेशनल की रिपोर्ट के अनुसार, लालामुसा में अवामी मार्च के प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए पीपीपी नेता बिलावल भुट्टो ने सोमवार को कहा कि हम इमरान खान को लोकतांत्रिक तरीकों से पद से हटाने के लिए तैयार हैं। जनता नहीं चाहती है कि अब इमरान खान थोड़ी देर के लिए भी गद्दी पर बने रहें। मैं पीएम इमरान से अपील करता हूं कि उनकी भलाई गद्दी छोड़ने में ही है। पीपीपी नेता ने कहा कि इमरान खान अविश्वास प्रस्ताव को लेकर इतने डरे हुए हैं कि उन्होंने अपने राजनीतिक विरोधियों को गाली देना और नाम बिगाड़ना शुरू कर दिया है।

इमरान खान और आईएमएफ के बीच सांठगांठ:

बिलावल

इमरान खान सरकार और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के बीच कथित सांठगांठ का जिक्र करते हुए बिलावल ने कहा कि देश ने सरकार की आर्थिक नीतियों को खारिज कर दिया है और पीटीआई एवं आईएमएफ का विरोध कर रहा है। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, देश में आर्थिक संकट के लिए कठपुतली प्रधानमंत्री को दोषी ठहराते हुए बिलावल ने कहा कि पाकिस्तान में आम आदमी मुद्रास्फीति की सुनामी में डूब रहा है। पीपीपी नेता ने कहा कि इमरान खान सरकार ने ऋण के लिए भीख मांगी, जो पहले कभी हासिल किए गए ऋण से तीन गुना अधिक था। उन्होंने कहा कि लोग अब इमरान खान की भूलों का बोझ नहीं उठा सकते।

इमरान खान इस्तीफा देने के बाद घर नहीं बल्कि जेल में होंगे: बिलावल

बिलावल ने कहा कि इमरान खान इस्तीफा देने के बाद घर पर नहीं बैठेंगे। वह सही है क्योंकि इमरान खान सलाखों के पीछे होंगे। उन्हें विदेशी फंडिंग मामले में जवाबदेह ठहराया जाएगा। इस बीच, जैसा कि पाकिस्तान एक गंभीर आर्थिक संकट से जूझ रहा है, विपक्षी दलों ने इमरान खान सरकार द्वारा घोषित राहत को अपर्याप्त बताया है। वे लगातार पाकिस्तानी प्रधानमंत्री पर दबाव बना रहे हैं।

भारत ने अफगानिस्तान को मानवीय सहायता उपलब्ध कराने की प्रतिबद्धता को दोहराया

संयुक्त राष्ट्र/जिनेवा। भारत ने सोमवार को कहा कि वह अफगानिस्तान के लोगों को आवश्यक मानवीय सहायता उपलब्ध कराने की दिशा में हितधारकों के साथ समन्वय करना जारी रखेगा।अफगानिस्तान को गेहूं की खेप भेजे जाने के कुछ दिनों बाद भारत ने यह प्रतिबद्धता जताई है।जिनेवा में संयुक्त राष्ट्र के लिए भारत के स्थायी प्रतिनिधि इंद्रमणि पांडे ने कहा, अफगानिस्तान के प्रति भारत का दृष्टिकोण हमेशा इस देश के लोगों के साथ ऐतिहासिक मित्रता पर केंद्रित रहा है। हम अफगानिस्तान के लोगों को मानवीय सहायता प्रदान करने की अपनी प्रतिबद्धता पर दृढ़ हैं। पांडे मानवाधिकार परिषद के 49वें सत्र के दौरान अफगानिस्तान में मानवाधिकारों के संरक्षण को और मजबूत करने संबंधी संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार उच्चायुक्त की रिपोर्ट पर आयोजित चर्चा को संबोधित कर रहे थे। पांडे ने कहा कि मानवीय सहायता के प्रयास के तहत भारत पहले ही अफगान लोगों के लिए 4000 मीट्रिक टन गेहूं, कोविड-रोधी टीके की करीब पांच लाख खुराकें, 13 टन आवश्यक जीवन रक्षक दवाएं और सर्दियों के कपड़ों की आपूर्ति कर चुका है। उन्होंने कहा कि ये खेप संयुक्त राष्ट्र की विशेष एजेंसियों -विश्व स्वास्थ्य संगठन और विश्व खाद्य कार्यक्रम- को सौंपी गईं।

यूक्रेन का दावा: जिसका नाम सुनते ही कांपते थे दुश्मन, खारकीव में मारा गिराया वह रूसी जनरल, क्रीमिया और चेचन वॉर में था पुतिन का 'इक्का'

कीव। रूस-यूक्रेन के बीच तीसरे चरण की बातचीत भी बेनतीजा रही है। दोनों देश संघर्ष विराम के लिए तैयार नहीं हैं। हालांकि, युद्धग्रस्त क्षेत्रों से आम नागरिकों को निकालने के लिए रूस की ओर से कुछ शहरों सीजफायर का एलान जरूर कर दिया है। इसके बावजूद जंग 13वें दिन में पहुंच चुकी है। इस बीच यूक्रेन की ओर से बड़ा दावा किया गया है। यूक्रेनी सेना के खुफिया विभाग की ओर से दावा किया गया है कि, दूसरे सबसे बड़े शहर खारकीव में उन्होंने रूसी जनरल को मार गिराया है। खास बात यह है कि, यह कोई सेना का आम जनरल नहीं है, बल्कि यह पुतिन की सेना का तुरुप का इक्का है। हालांकि,अभी तक रूस की ओर से इस संबंध में कोई टिप्पणी नहीं की गई है।

रूस की बड़ी जंगों में दुश्मन को चटाई थी धूल

यूक्रेन की ओर से कहा गया है कि, खारकीव में मारे गए रूसी मेजर जनरल की पहचान विटैली गेरामिसोव के रूप में हुई है। यह वही सैन्य अधिकारी है, जिसने क्रीमिया और चेचन की जंग में भी भाग लिया था। यहां तक कि, सीरिया के खिलाफ भी इस मेजर जनरल ने रूस की ओर से लड़ाई लड़ी थी।

अब सीरियाई लड़ाके उतारेंगे पुतिन

यूक्रेन की जंग जीतने और कीव पर कब्जे के लिए अब रूस की ओर से सीरियाई लड़ाके जंग में उतारे जा सकते हैं। पेंटागन की ओर से दावा किया गया है कि, रूस सीरियाई लड़ाकों को यूक्रेन भेजने की तैयारी कर रहा है। हालांकि, कितने लड़ाके यूक्रेन

में जाएंगे, इसका पता नहीं चल पाया है, लेकिन यह तय है कि ऐसी एक टुकड़ी यूक्रेन में प्रवेश की तैयारी कर रही है। इन लड़ाकों की खास बात यह है कि, ये शहरी क्षेत्रों में जंग के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित होते हैं। उधर, यूक्रेन के खारकीव में एक परमाणु अनुसंधान केंद्र पर भी हमले की खबर है।

माली : सशस्त्र बल के शिविर पर बर्बर आतंकी हमले में 27 सैनिक मृत, भारत ने की कड़ी निंदा

माली । माली के मोप्ती में हुए बर्बर आतंकी हमले में 27 सैनिकों के मारे जाने की भारत ने कड़ी निंदा की है। यह हमला चार मार्च को हुआ था।

मंगलवार को नई दिल्ली में विदेश मंत्रालय ने इस हमले की कड़ी निंदा की। हमला मोप्ती के मध्य क्षेत्र के मोंडोरो में हुआ। गत शुक्रवार को हुए हमले में कम से कम 27 सैनिकों की मौत हो गई, जबकि 33 जवान घायल हो गए। पश्चिम अफ्रीकी देश माली अफ्रीका का आठवां बड़ा देश है। यह लंबे से अशांति,आतंकवाद व विद्रोह का सामना कर रहा है।

कार बम से किया धमाका

माली की सेना ने बताया कि 21 जवानों की हालत गंभीर है। हमला मोंडोरो सैन्य शिविार पर किया गया, जो बुर्किना फासो और माली की सीमा पर स्थित है। आतंकवादियों ने सेना के शिविर को उड़ाने के लिए कार बम का इस्तेमाल किया। हमलावरों ने टैंकों सहित 21 वाहनों को जब्त कर लिया। हमले के समय शिविर में 150 सैनिक थे।

सेना की जवाबी कार्रवाई में 70 आतंकी ढेर

सेना के शिविर पर हमले के बाद जवाबी कार्रवाई में 70 आतंकवादियों को मार गिराया गया। अल कायदा और इस्लामिक स्टेट दोनों ही आतंकवादी संगठन मध्य माली में सक्रिय हैं। माली 10 सालों से जेहादी आंदोलनों से जूझ रहा है। 2012 में अल कायदा आतंकवादियों ने उत्तरी रेगिस्तान पर कब्जा कर लिया था। तब फ्रांस ने वहां बमबारी कर माली की मदद की थी। इस क्षेत्र को आतंकियों से मुक्त करा दिया गया था। इसके बाद माली ने अपनी सेना वहां तैनात की थी, लेकिन इसके बाद आतंकी उसे निशाना बना रहे हैं।

ब्राजील के सांसद ने यूक्रेन की महिलाओं पर की शर्मनाक टिप्पणी

ब्रासीलिया। ब्राजील के साओ पाउलो के सांसद आर्थर डो वाल (35) ने रूस के आक्रामण से जान बचाकर भाग रही यूक्रेन की महिलाओं पर शर्मनाक टिप्पणी की है जिसकी रिकार्डिंग ब्राजील की मीडिया में लीक होने के बाद से बवाल मच गया है। यूक्रेन के लाखों निवासियों के बेघर होने पर इस तरह के घटिया बयान के लिए उनकी कड़ी आलोचना हो रही है।कूटनीतिक मिशन पर यूक्रेन में मची तबाही देखने पहुंचे आर्थर ने कहा कि यूक्रेन की महिलाएं 'सस्ती' हैं और बहुत 'सेक्सी' हैं। आर्थर ने कहा था, 'मैंने अभी-अभी पैदल ही यूक्रेन और स्लोवाकिया की सीमा को पार किया है।

भाई, मैं शपथ लेकर कहता हूं कि मैंने खूबसूरत लड़कियों के मामले में पहले कभी ऐसा नहीं देखा। शरणार्थियों का रेला...। यह 200 मीटर लंबा या उससे ज्यादा है। इसमें बहुत ही खूबसूरत लड़कियां हैं।'गार्डियन अखबार की रिपोर्ट में दावा किया गया है कि आर्थर ने कहा कि लड़कियों की लाइन इतनी ज्यादा सुंदर है कि ब्राजील के नाइट क्लब के बाहर खड़ी लड़कियां उनके आसपास भी नहीं फटकतीं। अखबार ने कहा कि आर्थर ने इन महिलाओं को सस्ती इसलिए कहा क्योंकि वे गरीब हैं। ब्राजील मीडिया के मुताबिक आर्थर ने यूक्रेन और स्लोवाकिया की सीमा पर खड़े सैनिकों को भी अपशब्द कहे। उन्होंने कहा कि जब यह युद्ध खत्म होगा तब मैं यहां वापस आऊंगा

कंधार हाईजैक कांड: मसूद अजहर को छुड़ाने वाला आतंकी मारा गया, विमान यात्री रुपिन कात्याल की कर दी थी हत्या

इस्लामाबाद। कंधार विमान अपहरण के दो दशक से अधिक समय बाद, पीड़ित रुपिन कात्याल के परिवार को आखिरकार न्याय मिल गया। बताया जा रहा है कि अपहरणकर्ता और विमान यात्री रुपिन कात्याल का हत्यारा जहूर मिस्त्री उर्फ जाहिद अखुंद को 1 मार्च को अज्ञात बंदूकधारियों द्वारा पाकिस्तान के कराची में गोली मार दी गई थी। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक एक मार्च को बाइक सवार दो हमलावरों ने टारगेट किलिंग के तहत घर में घुसकर जहूर मिस्त्री की गोली मारकर हत्या कर दी। जहूर मिस्त्री जैश का आतंकी है और पहचान छुपाकर कराची में एक व्यापारी के रूप में रह रहा था। सीसीटीवी में दोनों हमलावरों की फुटेज कैद हो गई है लेकिन उनको पहचाना नहीं जा सका है।

जहूर मिस्त्री पर विमान यात्री रुपिन कात्याल की हत्या का आरोप

25 दिसंबर 1999 को जहूर मिस्त्री ने 25 वर्षीय रूपिन कात्याल की बेरहमी से हत्या कर दी थी और उनके शरीर को संयुक्त अरब अमीरात में अपहृत विमान से बरामद किया गया था। वह अपनी पत्नी के साथ काठमांडू में हनीमून के बाद दिल्ली लौट रहे थे।

जहूर मिस्त्री के अंतिम संस्कार में जैश के कई आतंकी शामिल हुए

समझा जाता है कि जहूर मिस्त्री के अंतिम संस्कार में जैश-ए-मोहम्मद समूह के आतंकी शामिल हुए थे, जिसका मुख्यालय पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के बहावलपुर में है। मसूद अजहर, उमर सईद शेख, दोनों तब हरकत-उल-अंसार समूह से जुड़े थे, और एक कश्मीरी आतंकवादी मुश्ताक अहमद जरगर, को भारत सरकार ने 31 दिसंबर, 1999 को कंधार में तत्कालीन तालिबान आतंकवादी शासन की निगरानी में रिहा किया था। रिहा होने के बाद, अजहर तत्कालीन तालिबान प्रमुख मुल्ला उमर से मिला और फिर क्वेटा में स्पिन बोल्डक क्रॉसिंग के माध्यम से पाकिस्तान चला गया।

कौन था आतंकी जहूर मिस्त्री-जैश का आतंकी जहूर मिस्त्री एयर इंडिया के IC-814 का अपहरण करने वाले पांच आतंकवादियों में शामिल था। 24 दिसंबर 1999 में आतंकियों ने भारतीय विमान का हवा में अपहरण कर लिया था। विमान को नेपाल के काठमांडू से अपहरण कर अफगानिस्तान के कंधार ले जाया गया। विमान के यात्रियों को एक हफ्ते तक बंधक बनाकर रखा गया था। यात्रियों को छोड़ने के लिए अपहरणकर्ताओं ने मसूद अजहर, मुश्ताक अहमद और अहमद ओमर सईद शेख जैसे आतंकियों की रिहाई की मांग की थी। इसके बाद मजबूरन भारत सरकार को इन सभी आतंकियों को रिहा करना पड़ा था।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
211019 से प्रकाशित
स्वामी श्री योगी सत्यम एवम् योग सत्संग समिति द्वारा
विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज
से मुद्रित एवम् क्रियायोग आश्रम अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
Title UPHIN 29506

रूस के आक्रमण में यूक्रेन के 202 स्कूल, 34 अस्पताल तबाह

कीव। यूक्रेन ने दावा किया है कि रूस के आक्रमण में 202 से ज्यादा स्कूल और 34 अस्पताल पूरी तरह तबाह हो गए हैं। इसके अलावा 1500 से ज्यादा आवासीय भवनों को भी नुकसान पहुंचा है। साथ ही सार्वजनिक परिवहन को करीब 10 अरब डॉलर की क्षति हुई है। यूक्रेन का कहना है कि उसकी सेना ने खार्किव में एक रूसी मेजर जनरल को मार गिराया है। रूस-यूक्रेन जंग के बीच राष्ट्रपति जेलेंस्की आज ब्रिटेन की संसद को संबोधित करेंगे। वह वर्चुअली हाउस ऑफ कॉमन्स का हिस्सा होंगे। वह यूक्रेन के लिए हथियार और नो फ्लाई जोन की मांग कर सकते हैं। रूस ने यूक्रेन के कई सैन्य ठिकानों पर हवाई हमले किए हैं। रूस के रक्षा मंत्रालय ने दावा किया है कि हवाई हमले में उसने यूक्रेन के 26 सैन्य ढांचों को पूरी तरह से नष्ट कर दिया है। इंटरनेशनल एटॉमिक एनर्जी एजेंसी का कहना है कि रूस की गोलीबारी में यूक्रेन के दूसरे सबसे बड़े शहर खार्किव में परमाणु ऊर्जा केंद्र को नुकसान पहुंचा है।

पश्चिमी देशों पर भड़के जेलेंस्की, बोले-किया झूठा वादा

कीव। युद्धग्रस्त यूक्रेन 13 दिन से रूस की सेना का मुकाबला कर रहा है। इस जंग के दौरान दुनिया के प्रमुख ताकतवर देशों ने रूस पर कड़े प्रतिबंध लगाकर रशियन राष्ट्रपति पुतिन को चेताया भी है। यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की की सेना मोर्चे पर डटी है। पश्चिमी देशों से मदद का इंतजार कर रहे जेलेंस्की के धैर्य का बांध आखिरकार मंगलवार को टूट गया। अपने टेलीग्राम वीडियो में जेलेंस्की ने रूसी हमलों से यूक्रेन को बचाने के पश्चिम के 'झूठे वादों' की निंदा की इस वीडियो में जेलेंस्की ने कहा- '13 दिन से हम वादों को सुन रहे हैं। हमें हवाई सहायता मुहैया कराई जाएगी, विमान दिए जाएंगे, उन्हें हम तक पहुंचाया जाएगा।' उन्होंने कहा कि इसकी जिम्मेदारी उन लोगों की भी है जो 13 दिन तक पश्चिम में फैसला लेने में सक्षम नहीं थे। उन लोगों की भी है, जिन्होंने रूसी विमानों से यूक्रेनी आसमान को सुरक्षित नहीं किया। इससे पहले भी जेलेंस्की कह चुके हैं कि दुनिया ने हमें इस युद्ध में लड़ने के लिए अकेला छोड़ दिया है। यूक्रेन छोड़कर पोलैंड भागने की चचाओं को भी जेलेंस्की सिरे से खारिज कर चुके हैं। वह सोमवार रात को राष्ट्रपति भवन में टहलते नजर आए। इसका वीडियो पोस्ट किया। इसमें जेलेंस्की ने कहा कि वह राजधानी कीव में ही हैं। वह किसी से नहीं डरते। वह किसी बंकर में नहीं छिपे हैं। वह तब तक कीव में मौजूद रहेंगे जब तक देशभक्ति से भरे इस युद्ध को जीतने के लिए यह जरूरी होगा जेलेंस्की देश छोड़ने के अमेरिकी प्रस्ताव को भी ठुकरा चुके हैं। इस बीच रूस में रह रहे यूक्रेन के चौथे राष्ट्रपति विक्टर यानुकोविच ने जेलेंस्की से 'रक्तपात को रोकने' की अपील की है।